गीता-दैनन्दिनी

(गीताडायरी)

सन् १९३२ ई०

मूल्य ।) सजिल्द ।≈)

सं०१९८८पौष	ति.	कृ१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
	वा	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु
	घ.	५५	५३	५०	४७	४२	३७	३२	२६	२०	१४	९	४	०
	न.	आ	पु	पु	आ	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	वि	अनु	ज्ये

सं०१९८८माघ	टि.	कृ१	२	३	४	५	६	८	९	१०	११	१२	१३	१४
	वा	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु
	घ.	२९	२५	२१	१५	१०	४	५३	४७	४३	३९	३६	३३	३३
	न.	पु	आ	पू	उ	ह	चि	स्वा	वि	अनु	ज्ये	मू	पू	उ

सं०१९८८फा.	ति.	कृ२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
	वा.	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र
	घ.	५३	४७	४२	३६	३०	२५	२०	१६	१३	११	१०	११	१[illegible]
	न.	पू	उ	ह	चि	स्वा	अनु	ज्ये	मू	पू	उ	श्र	ध	श

सं०१९८९चै०	ति.	कृ१	२	३	४	५	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
	वा.	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं
	घ.	२३	१८	१२	६	१	५२	४९	४७	४६	४६	४८	५१	५५
	न.	ह	चि	स्वा	वि	अनु	ज्ये	मू	पू	उ	श्र	ध	श	पू

सं०१९८९वै०	ति.	कृ१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
	वा.	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु
	घ.	४६	४०	३४	२९	२५	२२	२०	१९	२०	२१	२४	२८	३३	३८
	न.	स्वा	वि	अनु	ज्ये	मू	पू	उ	श्र	ध	श	पू	उ	रे	अ

सं०१९८९ज्ये०	ति.	कृ१	२	४	५	६	७	८	९	१०	११	११	१२	१३	१४
	बा.	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु
	घ.	६	१	५४	५१	५१	५१	५२	५५	५९	६०	३	८	१३	१८
	[illegible]	ज्ये	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	रे	[illegible]	[illegible]	[illegible]

शु १	२	३	४	५	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श
५५	५४	५६	५९	६०	२	८	१२	१८	२३	२७	३१	३३	३४	३४	३२
पु	उ	श्र	ध	श	पू	उ	रे	अ	भ	कृ	रो	मृ	मृ	आ	पु

शु १	२	३	४	५	६	७	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं
५५	३८	४१	४७	५२	५७	६०	२	६	१०	१२	१२	१२	१०	७	३
ध	श	पू	उ	रे	अ	अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	आ	म

शु १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं
२०	२४	३०	३५	३९	४४	४७	४९	४९	४९	४७	४३	३९	३५	२९
पू	उ	रे	अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	आ	म	पू	उ

शु १	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१५
बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु
६०	५	१०	१५	१९	२२	२३	२४	२३	२१	१८	१४	९	३	५२
रे	अ	भ	कृ	रो	मृ	मृ	आ	पु	पु	आ	म	उ	ह	चि

शु १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु
४७	५१	५४	५६	५७	५५	५३	५०	४६	४०	३५	२९	२३	१७	११
भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	आ	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	अनु

शु १	२	३	४	५	६	७	८	९	११	१२	१३	१४	१५
र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श
२४	२६	२६	२६	२४	२०	१६	११	६	५४	४७	४१	३६	३१
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

सन् १९३२	जनवरी						फरवरी					मार्च				
रविवार	०	३	१०	१७	२४	३१	०	७	१४	२१	२८	०	६	१३	२०	२७
सोमवार	०	४	११	१८	२५	०	१	८	१५	२२	२९	०	७	१४	२१	२८
मंगलवार	०	५	१२	१९	२६	०	२	९	१६	२३	०	१	८	१५	२२	२९
बुधवार	०	६	१३	२०	२७	०	३	१०	१७	२४	०	२	९	१६	२३	३०
बृहस्पतिवार	०	७	१४	२१	२८	०	४	११	१८	२५	०	३	१०	१७	२४	३१
शुक्रवार	१	८	१५	२२	२९	०	५	१२	१९	२६	०	४	११	१८	२५	०
शनिवार	२	९	१६	२३	३०	०	६	१३	२०	२७	०	५	१२	१९	२६	०

वार	अप्रैल					मई					जून				
रविवार	०	३	१०	१७	२४	१	८	१५	२२	२९	०	५	१२	१९	२६
सोमवार	०	४	११	१८	२५	२	९	१६	२३	३०	०	६	१३	२०	२७
मंगलवार	०	५	१२	१९	२६	३	१०	१७	२४	३१	०	७	१४	२१	२८
बुधवार	०	६	१३	२०	२७	४	११	१८	२५	०	१	८	१५	२२	२९
बृहस्पतिवार	०	७	१४	२१	२८	५	१२	१९	२६	०	२	९	१६	२३	३०
शुक्रवार	१	८	१५	२२	२९	६	१३	२०	२७	०	३	१०	१७	२४	०
शनिवार	२	९	१६	२३	३०	७	१४	२१	२८	०	४	११	१८	२५	०

गीता-दैनन्दिनी

[गीताडायरी]

सन् १९३२ ई०

मिलनेका पता— मूल्य ।)

गीताप्रेस, गोरखपुर सजिल्द ।-)

सं० १९८४,	५०००	मुद्रक तथा प्रकाशक—
सन् १९२८,	५०००	घनश्यामदास
सन् १९२९,	८०००	गीताप्रेस, गोरखपुर
सन् १९३०,	१००००	
सन् १९३१,	७२५०	
सन् १९३२,	८५००	
	३०००	
	४०००	

मुद्रक तथा प्रकाशक—

घनश्यामदास

गीताप्रेस, गोरखपुर

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

मनुष्य-जीवनका उद्देश्य

हमारा उद्देश्य है सच्चे सुखको पाना। सच्चा सुख एक परमात्माके सिवा और किसी भी वस्तुमें नहीं है। जब परमात्माकी प्राप्ति हो जाती है तब जगत्‌की सब वस्तुओंमें भी परमात्मा व्याप्त दीखते हैं, इस अवस्थामें भक्तको सारा ही जगत् सुखमय प्रतीत होता है। इस उद्देश्यकी पूर्तिके लिये चोरी, व्यभिचार, झूठ, कपट, छल, हिंसा, अभक्ष्य भोजन और प्रमाद आदि शास्त्र-विरुद्ध नीच कर्मोंको मन, वाणी और शरीरसे त्यागकर, मनु-कथित दश धर्म अथवा पतञ्जलि-कथित दश यम-नियमादिका पालन करते हुए अपने-अपने मतके अनुसार भगवान्‌को सर्वव्यापी, सर्वान्तर्यामी, एकमात्र जगदीश्वर जानकर उनके साकार या निराकार रूपकी भक्ति करनी चाहिये और साथ ही वर्णाश्रमके अनुसार अपने सारे कर्म निष्काम-भावसे भगवान्‌के लिये उनकी आज्ञा समझकर करने चाहिये! सर्वव्यापी भगवान्‌की अपने स्वकर्मोंके द्वारा निष्काम-भावसे पूजा करना ही जीवनके इस उद्देश्यकी पूर्तिका सहज उपाय है।

मनु महाराजके बतलाये हुए दश धर्म—

१ धृति-भारी विपत्तिमें भी विचलित न होना,

२ क्षमा—अपना अपराध करनेवालेको किसी प्रकार भी दण्ड देनेका भाव न रखना, ३ दम—मनको वशमें रखना, ४ अस्तेय—किसी प्रकार भी चोरी न करना, ५ शौच—बाहर और भीतरकी पवित्रता, ६ इन्द्रिय-निग्रह—सब इन्द्रियोंका वशमें होना, ७ धी—परमात्मामें लगनेवाली सात्त्विक बुद्धि, ८ विद्या—अध्यात्मविद्या, ९ सत्य—अन्तःकरण और इन्द्रियोंद्वारा जैसा निश्चय किया गया हो, वैसा-का-वैसा ही प्रिय शब्दोंमें कहना, १० अक्रोध—क्रोधका कारण उपस्थित होनेपर भी क्रोध न करना।

यम-नियम ये हैं—

१ अहिंसा—मन, वाणी, शरीरसे किसीको किसी प्रकार कष्ट न पहुँचाना, २ सत्य, ३ अस्तेय, ४ ब्रह्मचर्य—आठ प्रकारके मैथुनोंका त्याग करना, ५ अपरिग्रह—ममत्व-बुद्धिसे संग्रह न करना, ६ शौच, ७ सन्तोष—तृष्णाका सर्वथा अभाव, ८ तप—स्वधर्म-पालनकेलिये कष्टसहना, ९ स्वाध्याय—अध्यात्मग्रन्थोंका अध्ययन और भगवान्‌का नाम-गुण-कीर्तन करना, १० ईश्वरप्रणिधान—भगवान्‌को आत्मसमर्पण करना।



हरिनामसे परम-शान्ति

रसना साँपिनि, बदन बिल, जे न जपहिं हरिनाम।
तुलसी प्रेम न रामसों, ताहि बिधाता बाम॥
राम नाम रति नाम गति, राम नाम बिश्वास।
सुमिरत शुभ मंगल कुशल, चहुँदिशि तुलसीदास॥
प्रीति प्रतीति सुरीतिसों, राम नाम जपु राम।
तुलसी तेरो है भलो, आदि मध्य परिणाम॥
राम नाम अवलम्ब बिनु, परमारथकी आस।
बरसत बारिद बूँद गहि, चाहत चढ़न अकास॥

—तुलसीदासजी

नारायण हरि-भजनमें, तू जिन देर लगाय।
का जाने या देरमें, श्वास रहे की जाय॥
नारायण तू भजन कर, कहा करैंगे कूर।
अस्तुति निन्दा जगत्की, दोउवनके शिर धूर॥

—नारायणस्वामी

राम नाम केवल जपै, करै न कछु श्रम और।
सदा सम्हालें राम तेहिं, रक्षक प्रभु सब ठौर॥

राम भजनमें एकसे, वर्ण चार नर-नार।
जड़ मूरख भी हों तुरत, भवसागरसे पार॥

—रामदासजी

सब सुखदाता राम हैं, दूसर नाहिंन कोइ।
कहु नानक सुनु रे मना ! तेहि सुमिरत गति होइ॥

—गुरुनानक

'…जो शान्तिकी खोजमें है, उसको तो अवश्य राम-नाम पारसमणि बना सकता है।…देहधारीके लिये नामका सहारा अत्यावश्यक है।…नाम-महिमा बुद्धिवादसे सिद्ध नहीं हो सकती, श्रद्धासे अनुभवसाध्य है।' —महात्मा गांधी

'…व्याकुल होकर उसका नाम अवश्य लेते रहो। बस, नामकी शक्तिसे अपने-आप निरपराध बन जाओगे, कुछ आँसू तो अवश्य खर्च करने पड़ेंगे।…नामके प्रतापसे ही भक्तिका आविर्भाव होता है।…पर सावधान ! अपना भजन दुनियाको दिखाते मत फिरना।' —श्रीभूपेन्द्रनाथ सान्याल

शान्ति-सन्देश !

सारे संसारको शान्ति, समत्व और एकत्वका उपदेश देनेवाली दिव्य दुन्दुभि, विश्व-ज्ञान-प्रबोधिनी गुटिका, मोहन-मुरलीसे मुखरित सर्वोपनिषत्-सार-सङ्गीत, सर्वशास्त्रमयी, भगवान्‌की साक्षात् वाङ्मयी-मूर्ति ऐसे भावी विश्व-धर्मके एकमात्र सर्वोत्तम धर्मग्रन्थ—

'श्रीमद्भगवद्गीता'

का अभ्यास, पठन-पाठन प्राणीमात्रको अवश्य ही करना चाहिये ।

उसकी दिव्य-वाणीके नमूने देखिये ।

१—'जो सब भूतोंमें द्वेषभावसे रहित, स्वार्थ-रहित सबका प्रेमी, हेतुरहित दयालु, ममतासे रहित, अहंकारसे रहित, सुख-दुःखोंकी प्राप्तिमें सम और क्षमावान् है अर्थात् अपराध करनेवालेको भी अभय देनेवाला है तथा जो ध्यानयोगमें युक्त हुआ निरन्तर लाभ-हानिमें सन्तुष्ट, मन और इन्द्रियोंसहित

शरीरको वशमें किये हुए, मेरेमें दृढ़ निश्चयवाला है, वह मेरेमें अर्पण किये हुए मन-बुद्धिवाला मेरा भक्त मुझे प्रिय है।'—गीता अ० १२। १३, १४

२—'जो न कभी हर्षित होता है, न द्वेष करता है, न शोच करता है, न कामना करता है और जो शुभ-अशुभ सम्पूर्ण कर्मोंके फलका त्यागी है, वह भक्तियुक्त पुरुष मुझे प्रिय है।'—गीता १२। १७

३—'सर्वथा भयका अभाव, अन्तःकरणकी अच्छी प्रकारसे स्वच्छता, तत्त्वज्ञानके लिये ध्यान-योगमें निरन्तर दृढ़ स्थिति, सात्त्विक दान, इन्द्रियोंका दमन, भगवत्-पूजा और अग्निहोत्रादि उत्तम कर्मोंका आचरण, वेद-शास्त्रोंके पठन-पाठन-पूर्वक भगवत्के नाम और गुणोंका कीर्तन, स्वधर्म-पालनके लिये कष्ट सहन करना, शरीर और इन्द्रियोंसहित अन्तःकरणकी सरलता, मन, वाणी, शरीरसे किसी प्रकार भी किसीको कष्ट न देना, यथार्थ और प्रियभाषण,

अपना अपकार करनेवालेपर भी क्रोधित न होना, कर्मोंमें कर्तापनके अभिमानका त्याग, अन्तःकरणकी उपरामता अर्थात् चित्तकी चञ्चलताका अभाव, किसीकी भी निन्दादि न करना, सब भूतप्राणियोंमें हेतुरहित दया, इन्द्रियोंका विषयोंके साथ संयोग होनेपर भी आसक्तिका न होना, कोमलता, लोक और शास्त्रके विरुद्ध आचरणमें लज्जा और व्यर्थ चेष्टाओंका अभाव, तेज, क्षमा, धैर्यं, बाहर-भीतरकी शुद्धि, किसीमें भी शत्रु-भावका न होना, अपनेमें पूज्यताके अभिमानका अभाव, हे अर्जुन ! यह सब दैवी-सम्पदाको प्राप्त हुए पुरुषके लक्षण हैं।'
—गीता अ० १६ । १, २, ३

४—'काम, क्रोध तथा लोभ यह तीन प्रकारके नरकके द्वार आत्माका नाश करनेवाले हैं अर्थात् अधोगतिमें ले जानेवाले हैं। इससे इन तीनोंको त्याग देना चाहिये।'—गीता अ० १६। २१



गीता-जयन्ती-उत्सव

गीता-सरीखे महत्त्व-पूर्ण ग्रन्थकी जयन्ती प्रतिवर्ष 'मासानां मार्गशीर्षोऽहम्' मार्गशीर्ष शुक्ल ११ को प्राणीमात्रको घर-घरमें अवश्य ही मनानी चाहिये। जिसमें गीता-ग्रन्थ, इसके वक्ता और रचयिता भगवान् श्रीकृष्ण और व्यासदेवकी पूजा तथा इसका पारायण, अर्थकी चर्चा और तत्त्व समझने, प्रचार करनेके लिये स्थान-स्थानमें सभाएँ, व्याख्यान आदि हों, गीता-ग्रन्थोंका प्रदर्शन हो, गीतांक निकाले जायँ, पुरस्कार देकर गीतापर निबन्ध लिखाये जायँ।



श्रीगीता-परीक्षा-समिति, बरहज

श्रीगीता ही एक ऐसी पुस्तक है, जिसको प्राय: सभी आदरकी दृष्टिसे देखते हैं। इसलिये समितिने गीताद्वारा धार्मिक शिक्षाके अभावको दूर करनेका निश्चय किया है, समितिने परीक्षाके अभ्यासक्रमका और पुरस्कारादिका भी प्रबन्ध किया है। परीक्षा लेनेके लिये स्थान-स्थानपर केन्द्र भी स्थापित किये जाते हैं। विशेष जानकारीके लिये 'श्रीगीता-परीक्षा-समिति, बरहज' जिला-गोरखपुरसे लिखा-पढ़ी करें।—संयोजक

कुछ जानने योग्य बातें

रेल—रेल-यात्रामें प्रत्येक १०० मीलके बाद २४ घण्टेतक, कहीं भी ठहरकर, यात्री फिर उसी टिकटसे आगे जा सकता है।

२—बिछौनेको छोड़कर, पहिले दरजेका यात्री १॥ मन, दूसरेका १ मन, डेवढ़ेका ३० सेर और तीसरेका २५ सेर असबाब बिना किराये साथ ले जा सकता है। ज्यादा हो तो तौलाकर महसूल दे देना चाहिये, नहीं तो पकड़े जानेपर पूरे सामानका महसूल लगेगा।

३—रेल-कर्मचारी बिना रसीद दिये कोई रकम नहीं ले सकता। अनुचित ली हुई रकम रसीदके आधारसे लिखा-पढ़ी करके वापस ले सकते हैं।

४—यदि कोई कर्मचारी यात्रीसे असभ्यताका व्यवहार करे, तो उसी लाइनके डिस्ट्रिक्टट्राफिक सुपरिन्टेन्डेन्ट या ट्राफिक मैनेजरसे शिकायत करनी चाहिये।

डाक—२॥ तोलेतककी चिट्ठीपर ‒), इसके बाद प्रति २॥ तोले या उससे कमपर भी ‒) का टिकट अधिक लगता है। भारत, बर्मा और सीलोनके लिये एक ही नियम है। लिफाफे एक रुपयेमें १५ मिलेंगे।

२—पोस्टकार्डपर दाहिनी तरफके आधेमें पानेवालेके पतेके सिवा और कुछ भी न लिखना चाहिये।

३–पुस्तक या पत्रादि, पैकेटके रूपमें दोनों ओर खुला पैक करके भेजनेसे तथा नमूनेका पैकेट बन्द करके भेजनेसे भी प्रति ५ तोला)॥ लगता है। नमूनेका पैकेट २०० तोलेतक जा सकता है।

४–रजिस्ट्री किये हुए सामयिक पत्रोंका ८ तोले तक)।, २० तोलेतक)॥, इसके बाद प्रति २० तोले-या उससे कमपर भी)॥ लगता है।

५–बैरंग होनेसे दूना महसूल लगता है।

६–बीमा करानेके नियम १००) तक ≡), १०१) से १५०) तक ।), १५१) से २००) तक ।≈), २०१) से १०००) तक =) सैकड़ा, १००१) से ३०००) तक ≈) सैकड़ा। बिना रजिस्ट्री बीमा और वी० पी० नहीं होता। दो (चपड़ीकी) मोहरोंके बीचमें २ इञ्चसे अधिक अन्तर नहीं होना चाहिये।

७–रजिस्ट्री करानेके ≡) अलग लगते हैं और जवाबी रजिस्ट्रीके ।) लगते हैं।

८–पारसलके २० तोलेतक =), ४० तोलेतक।) इसके बाद ८०० तोलेतक प्रति ४० तोले।)लगते हैं।

९–मनिआर्डरकी दर १०) रुपयेतक=), २५)तक ।), ३५) तक ।=), ५०) तक ॥), १००) की १) है।

१०—सर्टिफिकेटका नियम—बिना रजिस्ट्रीका पारसल, चिट्ठी, पैकेट या कार्ड डाकघरका सर्टिफिकेट लेकर भेजा जा सकता है। दो पैसेमें पारसल, चिट्ठी, कार्ड, पैकेट ३ तकका सर्टिफिकेट मिलता है।

११—वी० पी०—रजिस्ट्री पारसल, पैकेट या चिट्ठी वी० पी० से जा सकती है। जिनका रुपया पानेवालेसे वसूल करके पोस्टआफिस मनिआर्डरसे भेजनेवालेके पास पहुँचा देती है। इसकी दर १०) तक=), १०~) से २५) तक।) इसके बाद हर १०) ज्यादातक ≠) और फिर हर २५) तक।); वी० पी० १०००) तककी भेजी जा सकती है। वी० पी० का मनिआर्डर खर्च पानेवाला देता है।

वी० पी० की बीमा भी बिकती है, बीमा वी० पी० की कीमतसे ज्यादाकी भी बिक सकती है।

तार—१२ शब्दतक साधारण तारका ॥।~), जल्दी जानेवालेका १॥≠)लगता है, अधिक शब्दोंका प्रति शब्द दर ~) और ≠) लगता है। जवाबी तारके लिये पहलेका ॥।~)और दूसरेका १॥≠)और अधिक लगता है। जवाबी फारम काममें न लाया जाय, तो दो महीनेतक (तार डाइरेक्टर जनरल, कलकत्तासे) दाम वापिस मँगा सकते हैं। भारत और बर्माके तारका एक ही नियम है।

२–प्रेसके लिये ४८ शब्दके साधारण तारका ॥), जल्दी जानेवालेका १) लगता है, ४८ से अधिक शब्दोंका प्रति ६ शब्दका दर ‒) और =) है।

३–डाक और तारकी शिकायतें, पोस्टमास्टर जनरल-को करनी चाहिये। शिकायती चिट्ठी बैरंग जाती है।

अदालत–दावेका रसूम ५) रुपयेतक ।≠), १००) तक प्रति ५) का ।≠) की दरसे, १०००) तक प्रति १०) का ॥।), ५०००) तक प्रति १००) का ५), १००००) तक प्रति २५०) का १०), २००००) तक प्रति ५००) का १५), ३००००) तक प्रति हजारका २०) की दरसे लगता है।

इनकम टैक्सकी दर

सालाना २०००) से कम आमदनीपर टैक्स नहीं लगता। सालाना २०००) से ४९९९) तक प्रति रुपया छः पाई, ५०००) से ९९९९) तक प्रति रुपया नव पाई यानी तीन पैसे, १००००) से १४९९९) तक प्रति रुपया बारह पाई यानी एक आना, १५०००) से १९९९९) तक प्रति रुपया सोलह पाई, २००००) से २९९९९) तक उन्नीस पाई, ३००००) से ३९९९९) तक प्रति रुपया तेईस पाई, ४००००) से ऊपर किन्तु १०००००) से कमपर पचीस पाई। ५००००) से ऊपर सुपर-टैक्स अलग लगता है।

एक दिनके वेतनका नकशा।

मासिकवेतन रुपये	२८ दिनका महीना तो १ दिनका			२९ दिनका महीना तो १ दिनका			३० दिनका महीना तो १ दिनका			३१ दिनका महीना तो १ दिनका		
	रु०	आ.	पा.	रु०	आ.	पा.	रु०	आ.	पा.	रु०	आ.	पा.
१	०	०	७	०	०	७	०	०	६	०	०	६
२	०	१	२	०	१	२	०	१	१	०	१	०
३	०	१	९	०	१	८	०	१	७	०	१	६
४	०	२	३	०	२	२	०	२	२	०	२	१
५	०	२	१०	०	२	९	०	२	८	०	२	७
६	०	३	५	०	३	४	०	३	३	०	३	१
७	०	४	०	०	३	१०	०	३	९	०	३	८
८	०	४	७	०	४	५	०	४	३	०	४	२
९	०	५	२	०	५	०	०	४	९	०	४	८
१०	०	५	९	०	५	६	०	५	४	०	५	२
२०	०	११	५	०	११	०	०	१०	८	०	१०	४
३०	१	१	२	१	०	६	१	०	०	०	१५	६
४०	१	६	१०	१	६	१	१	५	४	१	४	८
५०	१	१२	७	१	११	७	१	१०	८	१	९	१०
६०	२	२	३	२	१	०	२	०	०	१	१५	०
७५	२	१०	११	२	९	४	२	८	०	२	६	९
१००	३	९	२	३	७	२	३	५	४	३	३	७
१५०	५	५	९	५	२	९	५	०	०	४	१३	७
२००	७	२	३	६	१४	४	६	१०	८	६	७	३
५००	१७	१३	९	१७	३	१०	१६	१०	८	१६	२	१
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

रेल-पारसलका महसूल

दूरी मीलोंमें	ऽ५ का		।ऽ का		।ऽ५ का		॥ऽ का		॥ऽ५ का		।॥ऽ का		।॥ऽ५ का		१ऽ का	
	रु०	आ०	रु०	आ०	रु०	आ०	रु०	आ०	रु०	आ०	रु०	आ०	रु०	आ०	रु०	आ०
१ से २५ तक	०	६	०	६	०	६	०	६	०	६	०	६	०	६	०	६
२६ । ५०	०	६	०	६	०	६	०	६	०	८	०	९	०	१०	०	१२
५१ । ७५	०	६	०	६	०	८	०	१०	०	१३	०	१५	१	०	१	१
७६ । १००	०	६	०	७	०	१०	०	१४	१	०	१	२	१	५	१	७
१०१ । १२५	०	६	०	८	०	१३	१	०	१	४	१	७	१	१०	१	१३
१२६ । १५०	०	६	०	९	०	१४	१	२	१	७	१	१०	१	१४	२	१
१५१ । १७५	०	६	०	१०	०	१५	१	४	१	८	१	१३	२	१	२	५
१७६ । २००	०	६	०	१०	१	०	१	४	१	१२	२	०	२	५	२	८
२०१ । २२५	०	६	०	१२	१	१	१	७	१	१३	२	२	२	७	२	१२
२२६ । २५०	०	७	०	१३	१	२	१	८	१	१४	२	४	२	९	२	१४
२५१ । २७५	०	७	०	१४	१	४	१	९	१	१५	२	५	२	११	३	०
२७६ । ३००	०	७	०	१४	१	५	१	१०	२	१	२	७	२	१३	३	३

३०१ । ३२५	०	८	०	१५	१	६	१	१३	२	४	२	९	२	१५	३	५
३२६ । ३५०	०	८	१	०	१	७	१	१४	२	५	२	१२	३	३	३	८
३५१ । ३७५	०	८	१	०	१	८	२	०	२	७	२	१४	३	५	३	१२
३७६ । ४००	०	९	१	१	१	९	२	१	२	९	३	१	३	८	३	१५
४०१ । ४२५	०	९	१	२	१	१०	२	३	२	११	३	३	३	११	४	३
४२६ । ४५०	०	९	१	२	१	१२	२	४	२	१३	३	६	३	१४	४	६
४५१ । ४७५	०	१०	१	४	१	१३	२	६	२	१५	३	८	४	२	४	१०
४७६ । ५००	०	१०	१	४	१	१४	२	८	३	१	३	११	४	४	४	१३
५७६ । ६००	०	१३	१	८	२	४	२	१५	३	११	४	६	५	१	५	११
६७६ । ७००	०	१४	१	१२	२	८	३	५	४	२	४	१५	५	१२	६	९
७७६ । ८००	०	१५	१	१४	२	१३	३	१२	४	११	५	१०	६	९	७	६
८७६ । ९००	१	१	२	१	३	१	४	२	५	२	६	२	७	१	८	०
९७६ । १०००	१	२	२	४	३	५	४	६	५	७	६	९	७	९	८	९
१२२६ । १२५०	१	६	२	११	३	१५	५	४	६	९	७	१३	९	२	१०	७
१४५१ । १५००	१	८	३	०	४	८	६	०	७	९	९	१	१०	८	११	१५

शाक और फलोंका इससे आधा लगता है पर पेशगी लिया जाता है।

ब्याज फैलानेका नकशा

प्रति सैकड़ा	एक दिनका	एक सप्ताहका		एक महीनका		विवरण
रु०	पा०	आ०	पा०	आ०	पा०	
॥	।	०	१॥।	०	८	३६५ दिन या ५२ सप्ताह या १२ महीने=१ वर्ष
१	॥	०	३॥।	१	४	
१॥	॥।	०	५॥	२	०	
२	१	०	७।	२	८	
२॥	१।	०	६।	३	४	
३	१॥	०	११	४	०	
३॥	१॥।	१	॥।	४	८	
४	२	१	२॥।	५	४	
४॥	२।	१	४॥	६	०	
५	२॥	१	६।	६	८	
५॥	२॥।	१	८	७	४	
६	३	१	१०	८	०	
६॥	३।	१	११॥।	८	८	
७	३॥	२	१॥।	९	४	
७॥	३॥।	२	३॥	१०	०	
८	४	२	५॥	१०	८	
८॥	४।	२	७।	११	४	
९	४॥।	२	९	१२	०	
९॥	५	२	१०॥।	१२	८	
१०	५।	३	॥	१३	४	
१०॥	५॥	३	२।	१४	०	
११	५॥।	३	४॥	१४	८	
११॥	६	३	६।	१५	४	
१२	६।	३	८	१६	०	

माप-तौलकी सूची

कपड़ेका माप

८ जौ या पौन इञ्चकी १ अंगुल

३ अंगुल या २। इञ्चकी १ गिरह

८ गिरह या १८ इञ्चका १ हाथ

२ हाथ या ३६ इञ्चकी १ गज

१२ इञ्चकी १ फुट

१॥ फीट या १८ इञ्चका १ हाथ

३ फीट या ३६ इञ्चका १ गज

वजन

१ रुपयेभरका १ तोला

५ तोलेकी १ छटाक

२ छटाक या १० तोलेका आध पाव

२० तोलेका १ पाव

२ पावका आधसेर

४ पाव या दो आध-सेरका १ सेर

५ सेरकी १ पसेरी

८ पसेरीका १ मन

अंग्रेजी सिक्का

४ फार्दिंगकी १ पेनी

१२ पेनीका १ शिलिंग

२० शिलिंगका १ पाउण्ड

अंग्रेजी वजन

८ ड्रामका १ औंस

१६ औंसका १ पौंड

२८ पौंडका १ क्वार्टर

४ क्वार्टर या ११२ पौंड-का १ हंडरवेट

२० हंडरवेट (हंडर) का १ टन = २७। मन

अंग्रेजी और देशी वजन

प्रायः २॥ तोलेका १ औंस
३६॥ तोलेका १ पौंड
।ऽ३॥= (तेरह सेर दस छटाकका) १ कार्टर
१।ऽ४॥ (एक मन साढ़े चौदह सेरका) १ हंडर
८२ पौंडका १ मन

रास्तेका अंग्रेजी माप

१२ इञ्चका १ फुट
३ फीटका १ गज
१७६० गजका १ माइल

रास्तेका देशी माप

३ अंगुलकी १ मुष्टि
६ मुष्टिका १ हाथ
४ हाथका १ धनु
२००० धनुका १ कोस

जमीनका माप

५ हाथ लम्बा × ४ हाथ चौड़ा—४५ स्कायरफिटका १ छटाक
१४ छटाक या ७२० स्कायरफिटका १ कट्टा
२० कट्टा या १४४०० स्कायरफिटका १ बीघा
३ $\frac{१}{४०}$ बीघाका १ एकड़

समय

६० अनुपलका १ विपल
६० विपलका १ पल
६० सेकण्डका १ मिनट
६० पल या २४ मिनटकी १ घड़ी
२॥ घड़ीकी १ घण्टा
७॥ घड़ी या ३ घण्टेका १ पहर
८ पहर या २४ घण्टेका १ दिन रात
७ दिनका १ सप्ताह
२ सप्ताहका १ पक्ष
२ पक्षका १ महीना
१२ महीनेका १ वर्ष

१२ वर्षका १ युग
१०० वर्षकी १ शताब्दी

डाक्टरी वजन

२० ग्रेनका १ स्क्रुपल
३ स्क्रुपलका १ ड्राम
८ ड्राम या २॥ भरीका
१ औंस
१२ औंसका १ पौंड
१८० ग्रेनका वजन १ तोलेके समान होता है।

डाक्टरी माप

६० बूँदका १ ड्राम
८ ड्रामका १ औंस
२० औंसका १ पाइण्ट

वैद्यक वजन

४ धानकी १ रत्ती
८ रत्तीका १ माशा
१२ माशेका १ तोला

कागजका माप इञ्चोंमें

फूल्स्कैप—१३॥ × १७इञ्ची
लार्जपोस्ट—१६॥ × २१॥
डबलफूल्स्कैप—१७ × २७॥
क्राउन—१५ × २०॥
डबलक्राउन—२० × ३०॥
डिमाई—१८ × २२॥
डबलडिमाई—२२ × ३६॥
मिडियम—१८ × २३॥
रायल—२० × २६॥
डबल रायल—२६ × ४०॥
सुपररायल—२२ × २६॥
ड० सुपररायल२६ × ४४॥
इम्पीरियल—२२॥ × २६॥

द्रव द्रव्योंका अंग्रेजी वजन

२ पिंटका १ कार्ट
४ कार्टका १ गैलन

घरेलू नुसखे

सर्दीका बुखार–तुलसीके पत्ते १०, काली मिरच १०, खूबकला १ तोला, पोदीना ॥) भर, धनिया १ तोला आध सेर पानीमें चढ़ाकर, आधपाव रह जानेपर १ तोला मिश्री मिलाकर देना चाहिये।

बुखारमें जलन–पेटमें जलन हो तो सफेद चन्दन घिसकर दो तोले अन्दाज नाभिमें डाल दे। सारे शरीरमें जलन हो तो नाभिपर काँसेकी कटोरी रखकर एक हाथ ऊँचेसे उसमें पानीकी धार छोड़े; दश मिनिटमें जलन मिट सकती है।

मलेरिया ज्वर–(काली) तुलसीके पत्ते ११ और काली मिरच ११ बुखार चढ़े रहने और उतरने-पर भी दे। अपामार्गकी जड़ लाल रेशमसे भुजापर बाँधनी चाहिये। तुलसीके १० पत्ते १० काली मिरचके साथ रोज चबाने चाहिये।

उदरामय–सौंफ तवेपर सेककर १ भर और कच्ची १ भर मिलाकर ॥) भर मिश्रीके साथ पीसकर फाँके।

पेट फूलना–नमक एक आना भर और अजवायन ॥) भर मिलाकर खाय।

मन्दाग्नि—सैन्धव नमकके साथ, हींग भूँजकर प्रतिदिन भोजनके पहले ग्रासके साथ खाय, मात्रा दोनों एक-एक आना भर। भोजनके कुछ पहिले नमकके साथ थोड़ी-सी अदरख सेवन करे।

आँवके दस्त—सूखा बेल, पुराना गुड़, काली मिरच पीसकर बराबर, मात्रा १ तोला अथवा इसबगोलके साथ मिश्री मिलाकर फाँक ले। मात्रा एक-एक तोला। खून पड़ता हो तो दूबका रस २ तोले पीवे।

कृमि—विडंगचूर्ण आधा तोला शहदके साथ ले, या नीमकी पत्तीका रस आधा तोला पी ले।

नहरुवा—दो आना भर कपूर, दहीमें घोलकर कुछ दिन पीनामात्र ही इसकी अक्सीर दवा है। वमन हो तो घबराये नहीं।

बवासीर—खून पड़ता हो तो, दूबका रस १ छटाक चीनी मिलाकर या नागकेसर एक तोला चीनी मिलाकर पीसकर ले। दर्दमें भाँगकी धूँई दे। खून न पड़ता हो तो हर्रे २ तोला गोमूत्रमें पीसकर गुड़के साथ सात दिनतक ले। खून पड़ता हो तो फिटकिरीके जलसे शौचके समय अंग धोना चाहिये।

सर्दी—थोड़ा-सा कपूर खाना और सूँघना चाहिये।

खाँसी–तेजपत्ता, काली मिरच, मुलेठी तीन-तीन तोले आधसेर पानीमें आगपर चढ़ाकर आध-पाव रहनेपर छानकर शामके वक्त पी ले। मिश्री भी मिला सकते हैं। अदरखके रसके साथ शहद मिलाकर पीनेसे भी लाभ होता है।

श्वास–मोरपंखकी भस्म एक आना, शहद एक आना मिलाकर चाटे।

किसी जगह कट जानेपर–बरफ या पानीकी पट्टी रक्खे या गेंदेके फूल पीसकर बाँधनेसे खून बन्द हो सकता है।

खुजली–दो रत्ती शुद्ध गन्धक रोज सेवन करे। चावलमोगरेका तेल लगावे। नीमके पत्तोंके जलसे धोवे।

दाद–माजूफलका चूर्ण आठ तोला, इमलीकी छालकी भस्म १ तोला, नारियलके तेलमें मिलाकर लगावे।

फोड़ा–चिकनी मिट्टी पानीमें सानकर उसे फोड़ेपर बाँध ले, या अनन्तमूलकी जड़ पीसकर उसका चारों ओर लेप करे।

मेह–कच्ची हलदीका रस आधी छटाक रोज पीवे।

हिचकी और मूर्छा—पाँच-सात काली मिरच सूईकी नोकमें पिरोकर रोगीके नाकमें उसका धूआँ दे।

सिर दुखना—पुराने गुड़के साथ सोंठका चूर्ण मिलाकर सूँघे। सोंठ, बादाम, अफीम, कपूर, सफेद चन्दनके साथ पीसकर जरा-सा गरम करके लेप करे, अफीम बहुत थोड़ा डाले।

वात—आधी छटाक धतूरेके बीज कूटकर तीन पाव खालिस सरसोंके तेलमें सात दिन भिगो-छानकर उस तेलकी मालिस करे।

प्रदर—मुलेठी २ तोला, चीनी दो तोला, चावल धोये हुए जलमें पीसकर दिनमें दो बार सेवन करे। इससे रक्तप्रदर भी मिट सकता है। अशोकछालके काथसे भी प्रदर आराम होता है।

रक्तस्राव—रज बहुत पड़ता हो तो नागकेसरकी फाँकी या दूबका रस पीना चाहिये। पेटपर ठण्डे पानीकी पट्टी रखनी चाहिये।

बहुमूत्र—पुराने गुड़के साथ काले तिल भूँजकर लड्डू बना ले, रोज दो लड्डू खाय।



अमूल्य वचन

'सत्संगकी बातें रोज सुननेसे जो असर होता है वह पाँच मिनटके कुसंगसे चला जाता है, क्योंकि कुसंग पाते ही पूर्वके कुविचार जग उठते हैं, इसलिये कुसंगका सर्वथा त्याग करे।'

'बुरे कर्म करनेवालोंकी दुर्गति होनेमें तो आश्चर्य ही क्या है, बुरे कर्म करनेवालोंका जो चिन्तन करते हैं, उनकी भी दुर्गति होती है। व्यभिचारीको याद करनेसे कामकी जागृति होती है और सच्चे वैराग्यवान् पुरुषके स्मरणसे वैराग्य उत्पन्न होता है।'

'भगवान्‌का भजन गुप्तरूपसे करना चाहिये, नहीं तो कपूरकी भाँति मान-बड़ाईमें उड़ जाता है।'

'स्वार्थको छोड़कर दूसरेके हितके लिये चेष्टा करना, यही उसे प्रेममें बाँधनेका उपाय है।'

'दूसरेको सुख पहुँचाना ही उसे अपना बना लेना है। अपना तन, मन, धन जो कुछ दूसरेके काममें लग जाय वही सार्थक है, बाकी तो सब व्यर्थ जाता है। जो इस बातको ध्यानमें रखकर चलता है, उसे कभी पछताना नहीं पड़ता।'

'भगवान्को बुलाना हो तो अनन्य प्रेम करना चाहिये। प्यारे मनमोहनकी माधुरी मूर्तिको मनसे कभी न भुलावे। आर्त्त-भावसे भगवान्के लिये रोवे। भगवान् अपने प्रेमी भक्तके साथ रहते हैं। तुम अनन्य प्रेम करोगे तो तुम्हें भगवत्की प्राप्ति अवश्य हो जायगी।'

'चाहे सारी दुनियासे नाता टूट जाय, और प्राण अभी चले जायँ, परन्तु भगवान्के प्रेममें किञ्चित् भी कलङ्क नहीं लगने देना चाहिये।'

'जैसे विषनाशनी विद्या जाने बिना सर्पको पकड़ रखनेसे वह काट लेता है, फिर विष चढ़ जानेसे मनुष्यकी मृत्यु हो जाती है; उसी प्रकार मूर्ख मनुष्य विषयोंको पकड़कर अन्तमें उनमें मतवाला होकर मृत्युको प्राप्त हो जाता है।'

'ज्ञानी पुरुषोंकी वाणीसे निकली हुई ज्ञानरूपी चिनगारियाँ जिसके कानोंद्वारा अन्तःकरणतक पहुँच जाती हैं, उसके सारे पाप जलकर भस्म हो जाते हैं।'

'काम, क्रोध तभीतक रहते हैं, जबतक अज्ञान है। अज्ञानरूप कारणका नाश हो जानेपर कामादि

कार्य नहीं हो सकते ।'

'भगवान्‌का भजन अमृतसे भी बढ़कर है, यह बात कहनेसे समझमें नहीं आ सकती । जिनका भजनमें प्रेम होता है, वे इस बातका अनुभव करते हैं ।'

'जिस मनुष्यकी भगवान् या किसी महात्मामें पूर्ण श्रद्धा हो जाती है वह तो उनके परायण ही हो जाता है । परायणतामें जितनी कमी है, उतनी ही कमी विश्वासमें भी समझनी चाहिये ।'

'महापुरुषोंद्वारा किये गये उत्तम बर्तावको भगवान्‌का बर्ताव ही समझना चाहिये, क्योंकि महापुरुषके अन्दरसे भगवान् ही सब कुछ करते-कराते हैं ।'

'एक श्रीसच्चिदानन्दघन परमात्मा ही सब जगह परिपूर्ण हैं । जैसे समुद्र सब ओरसे जलसे व्याप्त है इसी प्रकार यह संसार परमात्मासे व्याप्त है ।'

'भगवान्‌के प्रेमी भक्तोंद्वारा भगवान्‌के प्रभाव और प्रेमरहस्यकी बातें सुननी चाहिये और उन्हींके अनुसार साधन करना चाहिये । ऐसा करनेसे उद्धारमें कोई शंका नहीं है ।'

'समय बीत रहा है, बहुत सोच-समझकर इसे कीमती काममें लगाना चाहिये। वह कीमती काम भगवान्‌का भजन और सन्तोंका संग ही है।'

'भगवान्‌को सर्वोत्तम समझनेके बाद एक क्षणके लिये भी भगवान्‌का ध्यान नहीं छूट सकता। जबतक भगवान्‌के ध्यानका आनन्द-रस नहीं मिलता, तभी-तक वह संसारके विषयोंकी धूल चाटता है।'

'जो मनुष्य संसारके क्षणभङ्गुर, नाशवान् पदार्थों-को सच्चे और सुखदायी समझकर उनका चिन्तन करता है, उनसे प्रेम करता है और अज्ञानसे उनमें अपना जीवन लगाता है, वह महामूर्ख है।'

'श्रीनारायणदेवके समान अपना परम सुहृद्, दयालु, निःस्वार्थ प्रेमी और कोई भी नहीं है, इतना होनेपर भी अज्ञानी जीव उन्हें भुलाकर क्षणविनाशी विषय-भोगोंमें लग रहा है, अपने अमूल्य जीवनको धूलमें मिला रहा है। अज्ञानकी यही महिमा है।'

'अपने आप श्रीभगवान्‌के शरण होना चाहिये और दूसरोंको परमात्माके शरणमें लगाना चाहिये, इससे बढ़कर लोक-सेवा और कोई भी नहीं है।'

कल्याण

(भक्ति ज्ञान वैराग्य और सदाचारसम्बन्धी सचित्र मासिक पत्र)

वार्षिक मूल्य ४≡)

कल्याणके लिये कौन क्या कहते हैं—

'हिन्दीके अध्यात्म, ज्ञान और भक्ति-क्षेत्रमें कल्याण जो कार्य कर रहा है, वह अनुपमेय है। अपने विषयका यह बिल्कुल अनोखा पत्र है। सुन्दर लेख-चयन और अच्छी छपाई-सफाईके साथ-साथ विज्ञापन न छापनेके आदर्शका पालन करते तथा प्रतिवर्ष एक इतना सुन्दर विशेषांक निकालते हुए भी वह सिर्फ कुल ४≡) वार्षिकमें अपने पाठकोंके हृदयमें भक्ति, ज्ञान और वैराग्यकी जो सुरसरि बहाता है वह सर्वथा प्रशंसनीय है। × × × × आशा है कि हिन्दीके पाठक ऐसे अच्छे पत्रको खूब अपनायेंगे।'

(प्रताप, कानपुर)

'…मैं इसके भक्ति-विषयक लेखोंको पढ़कर जिस आनन्दकी प्राप्ति करता हूँ, उसका अनुभव मेरा हृदय ही कर सकता है। …ईश्वर करे यह सबका कल्याण-साधन करे……।' हिन्दीके आचार्य पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी।

दूसरोंद्वारा अपनेपर किये गये उपकार

पं. सतलालधर सफ्ताकदल श्रीनगर काश्मीर.
इन्होंने हमारे बीमारीमें बहुत सहायता पहुंचाई.
पं. जीयालाल फोतदार मट्टन काश्मीर इसने
बीमारीमें सेवा की.
पं. श्रीनाथ मट्टन काश्मीर यह भी
काम करता था.

मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय ॥१॥

संजय उवाच

दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा ।
आचार्यमुपसंगम्य राजा वचनमब्रवीत् ॥२॥

पश्यैतां पाण्डुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम् ।
व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता ॥३॥
अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि ।
युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथः ॥४॥

धृतकेतुश्चेकितानः काशिराजश्च वीर्यवान् ।
पुरुजित्कुन्तिभोजश्च शैब्यश्च नरपुङ्गवः ॥५॥
युधामन्युश्च विक्रान्त उत्तमौजाश्च वीर्यवान् ।
सौभद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः ॥६॥

अस्माकं तु विशिष्टा ये तान्निबोध द्विजोत्तम ।
नायका मम सैन्यस्य संज्ञार्थं तान्ब्रवीमि ते ॥७॥
भवान्भीष्मश्च कर्णश्च कृपश्च समितिंजयः ।
अश्वत्थामा विकर्णश्च सौमदत्तिस्तथैव च ॥८॥

अन्ये च बहवः शूरा मदर्थे त्यक्तजीविताः ।
नानाशस्त्रप्रहरणाः सर्वे युद्धविशारदाः ॥९॥
अपर्याप्तं तदस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितम् ।
पर्याप्तं त्विदमेतेषां बलं भीमाभिरक्षितम् ॥१०॥

अयनेषु च सर्वेषु यथाभागमवस्थिताः।
भीष्ममेवाभिरक्षन्तु भवन्तः सर्व एव हि ॥११॥
तस्य संजनयन्हर्षं कुरुवृद्धः पितामहः।
सिंहनादं विनद्योच्चैः शङ्खं दध्मौ प्रतापवान् १२

ततः शङ्खाश्च भेर्यश्च पणवानकगोमुखाः।
सहसैवाभ्यहन्यन्त स शब्दस्तुमुलोऽभवत् ॥१३॥
ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते महति स्यन्दने स्थितौ।
माधवः पाण्डवश्चैव दिव्यौ शङ्खौ प्रदध्मतुः॥१४॥

पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनंजयः।
पौण्ड्रं दध्मौ महाशङ्खं भीमकर्मा वृकोदरः ॥१५॥
अनन्तविजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः।
नकुलः सहदेवश्च सुघोषमणिपुष्पकौ ॥१६॥

काश्यश्च परमेष्वासः शिखण्डी च महारथः ।
धृष्टद्युम्नो विराटश्च सात्यकिश्चापराजितः ॥१७॥
द्रुपदो द्रौपदेयाश्च सर्वशः पृथिवीपते ।
सौभद्रश्च महाबाहुः शङ्खान्दध्मुः पृथक्पृथक् १८

स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत्।
नभश्च पृथिवीं चैव तुमुलो व्यनुनादयन् ॥१९॥
अथ व्यवस्थितान्दृष्ट्वा धार्तराष्ट्रान्कपिध्वजः।
प्रवृत्ते शस्त्रसंपाते धनुरुद्यम्य पाण्डवः ॥२०॥

हृषीकेशं तदा वाक्यमिदमाह महीपते ।

अर्जुन उवाच

सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत ॥२१॥

यावदेतान्निरीक्षेऽहं योद्धुकामानवस्थितान् ।

कैर्मया सह योद्धव्यमस्मिन्रणसमुद्यमे ॥२२॥

योत्स्यमानानवेक्षेऽहं य एतेऽत्र समागताः।
धार्तराष्ट्रस्य दुर्बुद्धेर्युद्धे प्रियचिकीर्षवः ॥२३॥

संजय उवाच

एवमुक्तो हृषीकेशो गुडाकेशेन भारत।
सेनयोरुभयोर्मध्ये स्थापयित्वा रथोत्तमम्॥२४॥
भीष्मद्रोणप्रमुखतः सर्वेषां च महीक्षिताम्।

(मकर-संक्रान्ति)

उवाच पार्थ पश्यैतान्समवेतान्कुरूनिति ॥२५॥
तत्रापश्यत्स्थितान्पार्थः पितॄनथ पितामहान् ।
आचार्यान्मातुलान्भ्रातॄन्पुत्रान्पौत्रान्सखींस्तथा
श्वशुरान्सुहृदश्चैव सेनयोरुभयोरपि ।

तान्समीक्ष्य स कौन्तेयः सर्वान्बन्धूनवस्थितान्
कृपया परयाविष्टो विषीदन्निदमब्रवीत् ।
अर्जुन उवाच
दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण युयुत्सुं समुपस्थितम् ॥२८॥

सीदन्ति मम गात्राणि मुखं च परिशुष्यति ।
वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते ॥२६॥
गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्त्वक्चैव परिदह्यते ।
न च शक्नोम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः ॥३०॥

निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव।
न च श्रेयोऽनुपश्यामि हत्वा स्वजनमाहवे ॥३१॥
न काङ्क्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि च।
किं नो राज्येन गोविन्द किं भोगैर्जीवितेन वा ३२

येषामर्थे काङ्क्षितं नो राज्यं भोगाः सुखानि च।
त इमेऽवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च
आचार्याः पितरः पुत्रास्तथैव च पितामहाः।
मातुलाःश्वशुराःपौत्राः श्यालाःसम्बन्धिनस्तथा

पौष शुक्ल ११ मंगल] १६ जनवरी [माघ ५

एतान्न हन्तुमिच्छामि घ्नतोऽपि मधुसूदन ।
अपि त्रैलोक्यराज्यस्य हेतोः किं नु महीकृते ३५
निहत्य धार्तराष्ट्रान्नः का प्रीतिः स्याज्जनार्दन ।
पापमेवाश्रयेदस्मान्हत्वैतानाततायिनः ॥३६॥

तस्मान्नार्हा वयं हन्तुं धार्तराष्ट्रान्स्वबान्धवान्।
स्वजनं हि कथं हत्वा सुखिनः स्याम माधव।३७।
यद्यप्येते न पश्यन्ति लोभोपहतचेतसः।
कुलक्षयकृतं दोषं मित्रद्रोहे च पातकम् ॥३८॥

कथं न ज्ञेयमस्माभिः पापादस्मान्निवर्तितुम् ।
कुलक्षयकृतं दोषं प्रपश्यद्भिर्जनार्दन ॥३९॥
कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः ।
धर्मे नष्टे कुलं कृत्स्नमधर्मोऽभिभवत्युत ॥४०॥

अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः।
स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसंकरः ॥४१॥
संकरो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च।
पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्तपिण्डोदकक्रियाः॥४२॥

दोषैरेतैः कुलघ्नानां वर्णसंकरकारकैः ।
उत्साद्यन्ते जातिधर्माः कुलधर्माश्च शाश्वताः ४३
उत्सन्नकुलधर्माणां मनुष्याणां जनार्दन ।
नरकेऽनियतं वासो भवतीत्यनुशुश्रुम ॥४४॥

माघ कृष्ण १ रवि सं० १९८८] २४ जनवरी [माघ १०

अहो बत महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयम् ।
यद्राज्यसुखलोभेन हन्तुं स्वजनमुद्यताः ॥४५॥
यदि मामप्रतीकारमशस्त्रं शस्त्रपाणयः ।
धार्तराष्ट्रा रणे हन्युस्तन्मे क्षेमतरं भवेत् ॥४६॥

संजय उवाच

एवमुक्त्वार्जुनः संख्ये रथोपस्थ उपाविशत्।
विसृज्य सशरं चापं शोकसंविग्नमानसः ॥४७॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादेऽर्जुनविषादयोगो नाम प्रथमोऽध्यायः ॥१॥

ॐ

द्वितीयोऽध्यायः

संजय उवाच

तं तथा कृपयाविष्टमश्रुपूर्णाकुलेक्षणम् ।

विषीदन्तमिदं वाक्यमुवाच मधुसूदनः ॥१॥

श्रीभगवानुवाच

कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम् ।
अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन ॥ २ ॥

क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते ।
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप ॥३॥
अर्जुन उवाच
कथं भीष्ममहं संख्ये द्रोणं च मधुसूदन ।

इषुभिः प्रति योत्स्यामि पूजार्हावरिसूदन ॥४॥
गुरूनहत्वा हि महानुभावान् श्रेयो भोक्तुं
भैक्ष्यमपीह लोके । हत्वार्थकामांस्तु गुरूनिहैव
भुञ्जीय भोगान्रुधिरप्रदिग्धान् ॥५॥ न चैतद्विद्मः

कतरन्नो गरीयो यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः।
यानेव हत्वा न जिजीविषामस्तेऽवस्थिताः प्रमुखे
धार्तराष्ट्राः ६ कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः पृच्छामि
त्वां धर्मसंमूढचेताः। यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि

तन्मे शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् ॥७॥
न हि प्रपश्यामि ममापनुद्याद् यच्छोकमुच्छोषण-
मिन्द्रियाणाम् । अवाप्य भूमावसपत्नमृद्धं
राज्यं सुराणामपि चाधिपत्यम् ॥ ८ ॥

संजय उवाच

एवमुक्त्वा हृषीकेशं गुडाकेशः परंतप।
न योत्स्य इति गोविन्दमुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह ९
तमुवाच हृषीकेशः प्रहसन्निव भारत।

२

सेनयोरुभयोर्मध्ये विषीदन्तमिदं वचः ॥१०॥

श्रीभगवानुवाच

अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे ।
गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः ११

माघ कृष्णा १२ बुध] ३ फरवरी [माघ २०

न त्वेवाहं जातु नासं न त्वं नेमे जनाधिपाः ।
न चैव न भविष्यामः सर्वे वयमतः परम् ॥१२॥
देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा ।
तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति ॥१३॥

मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः
आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत १४
यं हि न व्यथयन्त्येते पुरुषं पुरुषर्षभ ।
समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते ॥१५॥

नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः।
उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः॥१६॥
अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम्।
विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति॥१७॥

माघ कृष्णा ३० शनि] ६ फरवरी [माघ २३

तिथी के अनुसार माताम्हीमरणदिन १७ वर्षपूर्ण हुए.

अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः ।
अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत।१८।
य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम् ।
उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते॥१९॥

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा
भविता वा न भूयः। अजो नित्यः शाश्वतोऽयं
पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥२०॥
वेदाविनाशिनं नित्यं य एनमजमव्ययम्।

कथं स पुरुषः पार्थ कं घातयति हन्ति कम् ॥२१॥
वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति
नरोऽपराणि । तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-
न्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥२२॥

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥२३॥
अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च ।
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः ॥२४॥

अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते ।
तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि ॥२५॥
अथ चैनं नित्यजातं नित्यं वा मन्यसे मृतम् ।
तथापि त्वं महाबाहो नैवं शोचितुमर्हसि ॥२६॥

(वसन्तपञ्चमी)

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ॥२७॥
अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत।
अव्यक्तनिधनान्येव तत्र का परिदेवना ॥२८॥

आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेनमाश्चर्यवद्वदति
तथैव चान्यः। आश्चर्यवच्चैनमन्यः शृणोति
श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित् ॥२६॥
देही नित्यमवध्योऽयं देहे सर्वस्य भारत।

तस्मात्सर्वाणि भूतानि न त्वं शोचितुमर्हसि ३०
स्वधर्ममपि चावेक्ष्य न विकम्पितुमर्हसि ।
धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते॥
यदृच्छया चोपपन्नं स्वर्गद्वारमपावृतम् ।

सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्धमीदृशम् ३२
अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं संग्रामं न करिष्यसि ।
ततः स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि ३३
अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम्

संभावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते ॥३४॥
भयाद्रणादुपरतं मंस्यन्ते त्वां महारथाः।
येषां च त्वं बहुमतो भूत्वा यास्यसि लाघवम् ३५
अवाच्यवादांश्च बहून्वदिष्यन्ति तवाहिताः।

निन्दन्तस्तव सामर्थ्यं ततो दुःखतरं नु किम् ३६
हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः ॥३७॥
सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ ।

ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि ।३८।
एषा तेऽभिहिता सांख्ये बुद्धिर्योगे त्विमां शृणु।
बुद्ध्या युक्तो यया पार्थ कर्मबन्धं प्रहास्यसि ३९
नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते ।

स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात् ४०
व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह कुरुनन्दन ।
बहुशाखा ह्यनन्ताश्च बुद्धयोऽव्यवसायिनाम् ४१
यामिमां पुष्पितां वाचं प्रवदन्त्यविपश्चितः ।

वेदवादरताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः ।४२।
कामात्मानः स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदाम् ।
क्रियाविशेषबहुलां भोगैश्वर्यगतिं प्रति ।४३।
भोगैश्वर्यप्रसक्तानां तयापहृतचेतसाम् ।

व्यवसायात्मिका बुद्धिः समाधौ न विधीयते ४४
त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन ।
निर्द्वन्द्वो नित्यसत्त्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान्
यावानर्थ उदपाने सर्वतः संप्लुतोदके ।

तावान्सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः ।४६।
कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ।४७।
योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनंजय ।

सिद्धयसिद्धयोः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते॥
दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनंजय।
बुद्धौ शरणमन्विच्छ कृपणाः फलहेतवः ॥४६॥
बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते।

तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम् ॥
कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः ।
जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः पदं गच्छन्त्यनामयम् ५१
यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति ।

सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते॥
दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनंजय।
बुद्धौ शरणमन्विच्छ कृपणाः फलहेतवः ॥४९॥
बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते।

तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम् ॥
कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः ।
जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः पदं गच्छन्त्यनामयम् ५१
यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति ।

तदा गन्तासि निर्वेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च ५२
श्रुतिविप्रतिपन्ना ते यदा स्थास्यति निश्चला ।
समाधावचला बुद्धिस्तदा योगमवाप्स्यसि ५३

अर्जुन उवाच

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव ।

स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम् ५४

श्रीभगवानुवाच

प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान् ।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ५५

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः।
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ।५६।
यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम् ।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ।५७।

फाल्गुन कृष्ण ६ शनि] २७ फरवरी [फाल्गुन १४

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ५८
विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः।
रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते ।५९।

यततो ह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः ।
इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः ।६०।
तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः ।
वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ६१

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते।
सङ्गात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते॥
क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति॥

फाल्गुन कृष्ण ६ मंगल] १ मार्च सन् १६३२ [फा० १७

रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन्।
आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति।६४।
प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते।६५।

नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना ।
न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम् ॥
इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनु विधीयते ।
तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि ।६७।

तस्माद्यस्य महाबाहो निगृहीतानि सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ६८
या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः६६

फाल्गुन कृष्णा १२ शुक्र] ४ मार्च [फाल्गुन २०

आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत् । तद्वत्कामा यं प्रविशन्ति सर्वे स शान्तिमाप्नोति न कामकामी ॥७०॥
विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः । निर्ममो निरहंकारः स शान्तिमधिगच्छति ॥७१॥

फाल्गुन कृष्ण १३ शनि] ५ मार्च [फाल्गुन २१

३ (महाशिवरात्रि)

एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति।
स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे सांख्ययोगो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

फाल्गुन कृष्ण १४ रवि] ६ मार्च फाल्गुन २२

ॐ

तृतीयोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

ज्यायसी चेत्कर्मणस्ते मता बुद्धिर्जनार्दन।
तत्किं कर्मणि घोरे मां नियोजयसि केशव ॥१॥

फाल्गुन कृष्ण ३० सोम] ७ मार्च [फाल्गुन २३

(सोमवती अमावस्या)

व्यामिश्रेणेव वाक्येन बुद्धिं मोहयसीव मे ।
तदेकं वद निश्चित्य येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम् ॥२॥

श्रीभगवानुवाच

लोकेऽस्मिन्द्विविधा निष्ठा पुरा प्रोक्ता मयानघ ।

ज्ञानयोगेन सांख्यानां कर्मयोगेन योगिनाम् ॥३॥
न कर्मणामनारम्भान्नैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते ।
न च संन्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति ॥४॥
न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत् ।

कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः ॥५॥
कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्।
इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते ६
यस्त्विन्द्रियाणि मनसा नियम्यारभतेऽर्जुन।

कर्मेन्द्रियैः कर्मयोगमसक्तः स विशिष्यते ॥७॥
नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः।
शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्ध्येदकर्मणः ॥८॥
यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः।

तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसङ्गः समाचर ॥९॥
सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः ।
अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक् ॥१०॥
देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः ।

परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ ॥११॥
इष्टान्भोगान्हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः।
तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो यो भुङ्क्ते स्तेन एव सः॥१२॥
यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः।

भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात् १३
अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसंभवः ।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः ॥१४॥
कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम् ।

तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम् ॥१५॥
एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः।
अघायुरिन्द्रियारामो मोघं पार्थ स जीवति।१६।
यस्त्वात्मरतिरेव स्यादात्मतृप्तश्च मानवः।

आत्मन्येव च संतुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते ॥१७॥
नैव तस्य कृतेनार्थो नाकृतेनेह कश्चन ।
न चास्य सर्वभूतेषु कश्चिदर्थव्यपाश्रयः ॥१८॥
तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर ।

असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरुषः ॥१९॥
कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः ।
लोकसंग्रहमेवापि संपश्यन्कर्तुमर्हसि ॥२०॥
यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः ।

फाल्गुन शुक्ल १० गुरु] १७ मार्च [चैत्र ४

स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥२१॥
न मे पार्थास्ति कर्तव्यं त्रिषु लोकेषु किंचन ।
नानवाप्तमवाप्तव्यं वर्त एव च कर्मणि ॥२२॥
यदि ह्यहं न वर्तेयं जातु कर्मण्यतन्द्रितः ।

आज सुबः यहां (डोमेल में) शौचादि करके 'लॉरी' में बैठा. पौने दस बजे लॉरी चली. ४॥ बजे 'श्रीनगर काश्मीर' में पहुंचा. रास्ते में ('ऊडी' में)॥ किशमिश खाई थी. यहां 'छत्तबल' पर उतर कर पं. कशकाक बालागाइत आलीकदल श्रीनगर के घर गया. कशकाक के लड़के त्रिकलाल और जीयालाल ने स्वागत अच्छा किया. आज बुखार की बारी होने पर भी बुखार नहीं आया. रात को भो. न था निवास यहीं. पं. कशकाक भी प्रेम करते हैं. पं. कशकाक का दामाद पं. प्रेमनाथ मुन्शी भी मिला था. इसका व्यवहार कुछ रूखा सा ही था.

आज द्वितीय बार काश्मीर आया. पं. जीयालाल उपदेश के लिये पीछे पड़ा है.

मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ॥२३॥
उत्सीदेयुरिमे लोका न कुर्यां कर्म चेदहम् ।
संकरस्य च कर्ता स्यामुपहन्यामिमाः प्रजाः २४
सक्ताः कर्मण्यविद्वांसो यथा कुर्वन्ति भारत ।

सुबः उठकर 'ऐदगाह' - देवीआंगन गया. यहां शौचादि निपटा. दोनो समय भो. तथा निवास यहीं. शाम को जीयालाल के साथ 'ऐदगाह' घूमने गया था.

कुर्याद्विद्वांस्तथासक्तश्चिकीर्षुर्लोकसंग्रहम् ॥२५॥
न बुद्धिभेदं जनयेदज्ञानां कर्मसङ्गिनाम्।
जोषयेत्सर्वकर्माणि विद्वान्युक्तः समाचरन्।२६।
प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः।

फाल्गुन शुक्ल १३ रवि]   २० मार्च   [चैत्र ७

आज सुबः शौचादि करके 'हरी पर्वत' दर्शन को गया था. आज मौन. प्रदोष व्रत. दिन को थोडी किशमिश और २ सन्त्रे खाये. रात को नियमाऽनुसार पारण किया. क्या किया जाय जीया जा रहा है. मन्त्रोपदेश के लिये पीछे पड़ा है. रात को निवास यहीं.

अहंकारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते ॥२७॥
तत्त्ववित्तु महाबाहो गुणकर्मविभागयोः ।
गुणा गुणेषु वर्तन्त इति मत्वा न सज्जते ॥२८॥
प्रकृतेर्गुणसंमूढाः सज्जन्ते गुणकर्मसु ।

फाल्गुन शुक्ल १४ सोम] २१ मार्च [चैत्र ८

(होलिकादहन)

आज दोनों समय भी तथा निवास यही.
आज भी बुखार की बारी थी. बुखार नहीं आया
रात दूध.

तानकृत्स्नविदो मन्दान्कृत्स्नविन्न विचालयेत् २९
मयि सर्वाणि कर्माणि संन्यस्याध्यात्मचेतसा ।
निराशीर्निर्ममो भूत्वा युध्यस्व विगतज्वरः ३०
ये मे मतमिदं नित्यमनुतिष्ठन्ति मानवाः ।

(अस्तोदय चन्द्रग्रहणम्)

आज सुबः शौचादि करके 'हेड माह' पर मनोगण। आजका ग्रहण हमको देखना नहीं था. दिनको दूध पीया था. और कोई चीज नहीं खाई. क्योंकि ग्रहण का वेध सुबः से ही था. ग्रहण छूटने के बाद भो. किया. रात्रि निवास यहीं.

श्रद्धावन्तोऽनसूयन्तो मुच्यन्ते तेऽपि कर्मभिः ॥
ये त्वेतदभ्यसूयन्तो नानुतिष्ठन्ति मे मतम् ।
सर्वज्ञानविमूढांस्तान्विद्धि नष्टानचेतसः ॥३२॥
सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेर्ज्ञानवानपि ।

आज सुनः शौचादि करके सन्ध्यादि किया. फिर नाई से बाल कटवाये. जनेऊ बदले. दोनो समय भा॰ तथा पानि... [illegible] रात दूध पीया. किसीके घरमें नहीं रहना चाहिये.

प्रकृतिं यान्ति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति ३३
इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे रागद्वेषौ व्यवस्थितौ।
तयोर्न वशमागच्छेत्तौ ह्यस्य परिपन्थिनौ ३४
श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।

आज सुबः ३ मैंने चांदिकर के दो पहर का भो. यहां किया. ३ गम को मास्टर शंकर पण्डित के घर भो. तथा रात्री निवास. मैं पेशाब करने नीचे उतरा था. नीचे मास्टर जी बैठे थे. आखिर चार आंखें हो ही गईं. फिर ये अपने घर ले गये. ये बड़ा प्रेम करते हैं. मेरे आने का पता इन को पहले ही लगा था. आज यहां (मास्टर जी के घर) डा. देव कौल मिला. न मालूम इसने पहचाना हम को या नहीं.

स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः ॥३५॥

अर्जुन उवाच

अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरति पूरुषः।
अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः।३६।

आजसुबः शौचादिकरके यहां (मास्टरजी के घर) भो. दोपहर का करके फिर डॉ. पं. कशाकाक के घर) आया. कशाकाक के घर इनके तीनो लड़के और नुह सब बीमार हैं. एक दो दिन में ठीक हो जायेंगे. रात को भो. तथा निवास यहां (कशाकाक के घर) आज तबियत ठीक नहीं थी.

श्रीभगवानुवाच

काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः।
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम्।३७।
धूमेनाव्रियते वह्निर्यथादर्शो मलेन च।
यथोल्बेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम्।३८।

आज सुबः शौचादि करके भो. काकेभास्करजी के घर गया. फिर उनके साथ हरिपर्वत दर्शन गया. बदाम के वृक्ष आजकल बड़े फूले हैं. बड़ी अपूर्व शोभा है. इसको देखने के लिये बहुत लोग जाते हैं. इसको यहां शुगोफा कहते हैं. रात को भो. लवा निवास यहीं. ये बहुत प्रेम करते हैं.

आवृतं ज्ञानमेतेन ज्ञानिनो नित्यवैरिणा।
कामरूपेण कौन्तेय दुष्पूरेणानलेन च ॥३९॥
इन्द्रियाणि मनो बुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते।
एतैर्विमोहयत्येष ज्ञानमावृत्य देहिनम् ॥४०॥

आज सुबह शौचादि करके यहां (मास्टरजी के घर) भो. करके डेरे (कशकाक के घर) आया. शाम को मास्टरजी और कशकाक के साथ 'हरीपर्वत' गया था. वहां पं. वासुदेव शास्त्री से परिचय हुआ. ये पुरोहित हैं. ये बहुत अच्छे संस्कृत के विद्वान हैं. इनके घर गया था. इन्होंने सम्मान भी अच्छा किया. ये पंजाब युनिवार्सिटि में फर्स्ट नंबर के शास्त्री पास हुए थे. इस समय ये साठ वर्ष उमर के हैं. पैंशनर हैं. बडे पण्डित हैं. रात भो. तथा निवास डेरे. आज पं. कण्ठ जू वकील यहां आया था. यह मन्त्रोपदेश मांग रहा है. मैंने इन्कार करदिया.

तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्य भरतर्षभ ।
पाप्मानं प्रजहि ह्येनं ज्ञानविज्ञाननाशनम् ॥४१॥
इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः ।
मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः ॥४२॥

सुबः शौचादि, भो. दोनों समय तथा रात निवास यहीं. मास्टरजी के साथ पं. अमरचन्द कौल के घर गया था. यहां ४.१५ श्लोक पञ्चस्तवी के सुनाये.

एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना
जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम् ॥४३॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां
योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मयोगो
नाम तृतीयोऽध्यायः ॥३॥

सुबः शौचादि करके दोनों समय भो. तथा
निवास यहीं. मास्टरजी आये थे.
अब कशाकाक के उठके नुहसन स्वस्थ शरीर
होगए थे हैं.

ॐ

चतुर्थोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम् ।
विवस्वान्मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत् ॥१॥

आज सुबः शौचादि तथा भो. दोनो समय और निवास यहीं. आज 'सुध' पर नाथजी गाड के पर गया था पर यह 'बारामूला' में है. इसलिये मिला नहीं.

एवं परम्पराप्राप्तमिमं राजर्षयो विदुः ।
स कालेनेह महता योगो नष्टः परंतप ॥२॥
स एवायं मया तेऽद्य योगः प्रोक्तः पुरातनः ।
भक्तोऽसि मे सखा चेति रहस्यं ह्येतदुत्तमम् ॥३॥

आज सुबह: शौचादि तथा भो. दोपहर का यहां.
रात को मास्टर जी के यहां भो. तथा निवास.
'हरिपर्वत' के दर्शन को गया था.
मास्टर जी बहुत प्रेम करते हैं. आज आनन्द कौल
यहां (करणकाक के घर) आये थे. इनके दर्शन किये
बातचीत भी हुई. ये गृहस्थ हैं. ये वेदान्ती कहे
जाते हैं. इनको पञ्चदशी (वेदान्त) बहुत
अच्छी आती है. ऐसी यहां प्रसिद्धी है. ऊपर
ही ऊपर है अन्दर कोरे के कोरे.

अर्जुन उवाच

अपरं भवतो जन्म परं जन्म विवस्वतः ।
कथमेतद्विजानीयां त्वमादौ प्रोक्तवानिति ॥४॥

श्रीभगवानुवाच

बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन ।

चैत्र कृष्णा ११ शुक्र] १ अप्रैल सन् १९३२ [चैत्र १९

आज यहां सुबः शौचादि करके यहीं (मास्टर जी के घर) भो. करके कशकाक के घर आया. १ घंटा बैठकर फिर 'हरीपर्वत' दर्शनको गया. यहां थोडा बैठकर 'कुरवरीबल' गया. यहां बहुत देर बैठा था. फिर डेरे (कशकाक के घर) आया. यहां 'रामजी ब्रह्मचारी' आया था. इसको पहले पहल आज ही देखा इसका नाम दो वर्ष से सुन रहा था. यह काश्मीरी नहीं है. ४ वर्ष से यह काश्मीर में ही रहता है. यह १० मिनट बैठा था. इससे कोई बात ऐसी नहीं हुई. कि इसका परिचय हो. रात को भो. तथा निवास मास्टरजी के घर.

'रामजी' — इसका शरीर, मुख, सुन्दर है. श्याम वर्ण है. आंखें बडी हैं. नाक भी ऊंची और सुडोल है. कद मध्यम है. शरीर मोटा नहीं है. मुख तेजस्वी है. लोगों से सुना है कि यह योगाभ्यासी है. अंग्रेजी एफ़.ए. तक पढा है. और महात्मा गंधी [illegible] पढा है. पर हमसे कोई बात नहीं हुई.

तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परंतप ॥५॥
अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन्
प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय संभवाम्यात्ममायया ॥६॥
यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।

आज सुबः शौचादि करके भो. सुबः का किया मास्टर जी के साथ अमर कौल के घर गया था. यहां १० मिनट बैठा था. फिर मास्टर जी के यहां आया. फिर मास्टर जी तथा कशकाक के साथ 'हरीपर्वत' दर्शन गया था. कशकाक अध्यात्म विषयमें अभी बिलकुल बच्चे हैं. आपने को वेदान्ती समझते हैं. रात भो. तथा निवास मास्टर जी के घर. कशकाक मेरे बारेमें हर एक को कहते हैं कि यह शैवी है.

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥७॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥८॥
जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः ।

आज सुन: शौ चादिकरके दूधपीया। फिर १० बजे मास्टरजीकेसाथ हरीपर्वतगया. रास्तेमें माधोकौल(रुग्ण) के घरगयाथा. औरभी एकपण्डतकेघरगयाथा. अमरकौलके घरभी गयाथा. फिर डेरेआया. आज प्रदोष। दिनभर मौनथा. रातको नियमाऽनुसारपारण. डेरेमें (कराकाककेघर) तथा निवासभीयहीं.

त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन ॥९॥
वीतरागभयक्रोधा मन्मया मामुपाश्रिताः ।
बहवो ज्ञानतपसा पूता मद्भावमागताः ॥१०॥
ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम् ।

चैत्र कृष्ण १४ सोम] ४ अप्रैल [चैत्र २२

आज सुब: शौचादि करके भो. सुब: कार्य ही किया रात भो. तथा निवास मास्टर जी के घर.

मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ॥११॥
काङ्क्षन्तः कर्मणां सिद्धिं यजन्त इह देवताः ।
क्षिप्रं हि मानुषे लोके सिद्धिर्भवति कर्मजा ॥
चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः ।

आज सुब: शौचादि करके मास्टर जी के घर भो. करके 'कशकाक' के यहां आकर अपना सामान लेकर 'छतबल' से १५. देकर लारी से 'बारामूला' आया. यहां 'देवीबल' मे ठहरा. यहां का पहला ब्रह्मचारी 'आनन्द जी' मर गया. अब यहां 'श्रीधर जी' ब्रह्मचारी रहता है. इसने चावल आलू बरतन दिये. फिर अपने हाथ से बनाकर खाया. इस ब्रह्मचारी ने आते ही यह कहा कि आज मैं देता हूं कल से आप अपने भिक्षा का बन्दोबस्त करो. मैंने तो आज भी मांगा नहीथा. रात निवास यहां धर्मशाला के एक कमरे मे.

तस्य कर्तारमपि मां विद्धयकर्तारमव्ययम् ।१३।
न मां कर्माणि लिम्पन्ति न मे कर्मफले स्पृहा ।
इति मां योऽभिजानाति कर्मभिर्न स बध्यते ।१४।
एवं ज्ञात्वा कृतं कर्म पूर्वैरपि मुमुक्षुभिः ।

चैत्र शुक्ल १ बुध सं० १९८९] ६ अप्रैल [चैत्र २४

४ (नवरात्र्यारम्भः) वर्षप्रतिपत्

काश्मीरी लोगोंकी आज अमावास्या ही थी
सुबशौचादि करके ९॥ बजे बाजार गया. यहां
से आगे चलकर 'नाथजूगाडू' की खोज की
फिर इसके डेरे गया. यह बहुत शरीफ है.
इसके पास भो. किया. फिर देवी बलमें
आया. यह जी. वी. रोडमें क्या है
मास्टर शंकर पण्डितके कहनेसे मैंने भी वर्षप्रति-
पत कल ही करनेका ठहराया. शामको ५ बजे
नाथजूके डेरे गया. रात भो. तथा निवास यहीं
किया. यहां एक सर्वानन्द कौल रहता है यह
श्रीनगरका रहने वाला है. साहेबकौल खा-
नदानका है. यह आर्यसमाजी है. इससे
रातको २॥ बजे तक बातें हो रही थी

कुरु कर्मैव तस्मात्त्वं पूर्वैः पूर्वतरं कृतम् ।१५।
किं कर्म किमकर्मेति कवयोऽप्यत्र मोहिताः ।
तत्ते कर्म प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात्
कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं बोद्धव्यं च विकर्मणः ।

चैत्र शुक्ल १ गुरु]   ७ अप्रैल   [चैत्र २५

आजसुबः देवी बल आया. अमरनाथ
जीने मेरे लिये १नमदा १जोई २चादरें
देवीबल में पहुंचाई. आज शौचादि
करके यहां स्नान भीकिया. आजसे फला
हारकरनेका ठहराया नवरात्रीभर
आज यहां वर्षप्रति पत्र हुई
शामको ४बजे नाथजीकेडेरे फलाहार करके डेरे
(देवीमन्दिर) आया. रात निवासयहीं
आज नयावर्ष सं१९८९ प्रारम्भ हुआ परमा
त्माकी दया से अच्छाही बीतेगा.
आजयहां का ब्रह्मचारी श्रीधरजी रैनावड़ी बिगड़ा
मैंनेकुछ नहीं कहा. यह तामसी है. प्रायः यहांके
सभीलोग नाराजरहते हैं इसपर.

अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना कर्मणो गतिः ।१७।
कर्मण्यकर्म यः पश्येदकर्मणि च कर्म यः ।
स बुद्धिमान्मनुष्येषु स युक्तः कृत्स्नकर्मकृत् ।१८।
यस्य सर्वे समारम्भाः कामसंकल्पवर्जिताः ।

आज शौच स्नान ना किया यहां (देवी मान्दिरमें) कल के
४ बजे शामको नाथजी के डेरे जाकर फलाहार कर-
के देवीबल में आया. रात निवास यहीं.

ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहुः पण्डितं बुधाः।१९।
त्यक्त्वा कर्मफलासङ्गं नित्यतृप्तो निराश्रयः।
कर्मण्यभिप्रवृत्तोऽपि नैव किंचित्करोति सः २०
निराशीर्यतचित्तात्मा त्यक्तसर्वपरिग्रहः।

(गौरीव्रत)

आज देवीबलमें ही शौच स्नानादि करके
४ बजे शामको नाथूजन के डेरे फलाहार करके
आया. रात निवास देवीबलमें. आज यहां
एक साधु रघुनाथ मन्दिरमें ठेरा था. वहां
२ घडी बैठा था. यह वृन्दावन की तरफका है
बैरागी है. मूर्ख है.

शारीरं केवलं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम् ।२१।
यदृच्छालाभसंतुष्टो द्वन्द्वातीतो विमत्सरः ।
समः सिद्धावसिद्धौ च कृत्वापि न निबध्यते।२२।
गतसङ्गस्य मुक्तस्य ज्ञानावस्थितचेतसः ।

आज देवीबलमें शौचस्नानादि करके शामके ४ बजे नाथजूके डेरे फलाहार करके आया. रात निवास देवीबलमें.

यज्ञायाचरतः कर्म समग्रं प्रविलीयते ।२३।
ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम् ।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना ।२४।
दैवमेवापरे यज्ञं योगिनः पर्युपासते ।

आज सुबः शौचादि स्नानादि देवीबल में करके
४ बजे शाम को 'नाथजी' के डेरे में फलाहार करके
आया. रात्री निवास देवीबल में.

ब्रह्माग्नावपरे यज्ञं यज्ञेनैवोपजुह्वति ।२५।
श्रोत्रादीनीन्द्रियाण्यन्ये संयमाग्निषु जुह्वति ।
शब्दादीन्विषयानन्य इन्द्रियाग्निषु जुह्वति ।२६।
सर्वाणीन्द्रियकर्माणि प्राणकर्माणि चापरे ।

(मेषसंक्रान्ति ५४ दंड ४ पलाके उपरान्त)

आजसुबः शौचस्नानादि देवीबलमें आज
नाथजूका रसोइया जीयालालभट अपने घर
चलागया इसलिये नाथजू आधसेर खंड
उपाव सिं घाडेका आटा और ।।) देगया.
अब अपने हाथ बनाना है। जीयालाल मुझसे
प्रेमकरताथा. अपनेहाथसेफलाहार बनाया
और खाया रात्री निवासयहीं। लकडीऔरबर्तन
ब्रह्मचारी श्रीधरनै नाने दिये थे. आज रामको
कोटि सीधी गयाथा.

आत्मसंयमयोगाग्नौ जुह्वति ज्ञानदीपिते ।२७।
द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञा योगयज्ञास्तथापरे ।
स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्च यतयः संशितव्रताः ।२८।
अपाने जुह्वति प्राणं प्राणेऽपानं तथापरे ।

आज सुबः शौचादि करके स्नाना दि यहीं देवी बागमें किया. फिर अपने हाथ फलाहार बनाकर खाया. बर्तन ठकड़ी ब्र. श्रीधर रैनाने दी थी. आज पं. श्रीकण्ठ नेहरू की माँ भी यहां देवीबागमें मिली. इससे थोड़ीबात-चीत हुई. इसने कल बुलाया है. रात्री निवास यहीं.

प्राणापानगती रुद्ध्वा प्राणायामपरायणाः ।२९।
अपरे नियताहाराः प्राणान्प्राणेषु जुह्वति ।
सर्वेऽप्येते यज्ञविदो यज्ञक्षपितकल्मषाः ।३०।
यज्ञशिष्टामृतभुजो यान्ति ब्रह्म सनातनम् ।

(दुर्गा-पूजन)

आज सुबः शौचस्नानादि यहां देवी बलमें किया,
फलाहार आज 'श्रीधरजू नहरू' की साली
के यहां किया. कल यह बुला गयी थी
रात्रिमें निवास यहीं. फलाहार आज समाप्त.

नायं लोकोऽस्त्ययज्ञस्य कुतोऽन्यः कुरुसत्तम ३१
एवं बहुविधा यज्ञा वितता ब्रह्मणो मुखे।
कर्मजान्विद्धि तान्सर्वानेवं ज्ञात्वा विमोक्ष्यसे ३२
श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञः परंतप।

(श्रीरामनवमी)

आज सुबः शौचादि स्नानादि यहां देवीबलमें किया. अपने हाथ भात आलू बनाकर पारण किया. ≡) ब्राह्मण और कुमारी को समर्पण किया. चावल, आलू, घी, मसाला नमक 'नाथजू गाडू' दे गया था. आज नयी धोती जमाई। यह 'पं. बदरी दत्त शर्मा शेराघण्टा डोगरा?' ने दी हुई मेरे पास थी रात्री निवास यहीं. श्रीनगर के आरी कि-रायके लिये १ रू. नाथजू दे गया. इसने स्टेशन मे एक पुस्तक के नाम चिट्ठी भी दी है.

सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते ।३३।
तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया ।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः ।३४।
यज्ज्ञात्वा न पुनर्मोहमेवं यास्यसि पाण्डव ।

चैत्र शुक्ल १० शनि] १६ अप्रैल [वैशाख ३

तिथीके अनुसार उपनयनका दिन २० वर्ष पूर्ण हुए.
आज सुबः देवीबलमें शौचादि किया. स्नान नहीं
किया. -) ब्राह्मणोंको दिया. फिर श्रीकण्ठका
ममेरा भाई बुलाने आया था. इसके साथ उसके घर
जाकर भो. करके ।।) देकर लारी से श्रीनगर
पहुंचा. यहां पं. श्रीधरजू नं हरूके घर गया.
श्रीधरजू आज बारामूला चले गये. ये नहीं मिले.
विश्वम्भरनाथने ऊपरी आवभगत अच्छी की.
रात्रीभो. तथा निवास यहीं. वेदलाल यहीं है.
इनका व्यवहार टालाटालीका ही देखा. यहां
X रहना अच्छा नहीं. विश्वम्भरनाथ में
परगुणादर करने का गुण नही है. गरूरकी
मात्रा भी अब काफी दर्जे तक पहुंची है.
यह भगवत्कृपा से बिलकुल अपार चिंत है.

येन भूतान्यशेषेण द्रक्ष्यस्यात्मन्यथो मयि ।३५।
अपि चेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पापकृत्तमः ।
सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं संतरिष्यसि ।३६।
यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन ।

चैत्र शुक्ल ११ रवि]   १७ अप्रैल   [वैशाख ४

आज सुबः श्री-चाड़िकर के यहीं (जेहरू) के घर
भो. करके (गाड़ी से ॥) देकर 'अनन्तनाग'
पहुंचा' यहां से पैदल 'मटन' पहुंचा. यहां मा-
स्टर नन्दलाल रवार के घर गया. इसके क
ने पहले तरह से ही प्रेम से स्वागत किया. रात
भो. तथा निवास इसी के घर. इसमें हमारा
प्रेम बहुत है. स्वार्थ के लिये नहीं किंतु ईश्वर
भक्ती की मात्रा बढ़ने के कारण.

ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा ३७
न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।
तत्स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति ३८
श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।

चैत्र शुक्ल १२ सोम] १८ अप्रैल [वैशाख ५

आज प्रदोष. दिन भर मौन रात को नियमानुसार पारण. आज प्रेमनाथ कोतदार आया था. इसके हाथ 'नाथजी भाई' ने दी हुई चिट्ठी 'सब ओवरशेअर' को भेज दी. उसको ने कुछ भी कहा था पर था नहीं.

ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ३९

अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च संशयात्मा विनश्यति ।
नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः ।४०।

योगसंन्यस्तकर्माणं ज्ञानसंछिन्नसंशयम् ।
आत्मवन्तं न कर्माणि निबध्नन्ति धनंजय ।४१।

आज सुबः शौचादि कर के यहां (नन्द लाल के घर)
भो. क्रिया. स्नान सहा क्रिया. प्रेमनाथ फोतदार
आया था इसने कमरे में लेपन आदि लगाया.
फिर पं. प्रेमनाथ मुन्शी आया था. इस के
आग्रह से इसके डेरे (ओकरे में) १ भी लगाया.
यहां भोजन कर के रात ८। बजे फिर डेरे
नन्दलाल के घर आया. रात्री निवास यहीं.

तस्मादज्ञानसंभूतं हृत्स्थं ज्ञानासिनात्मनः ।
छित्त्वैनं संशयं योगमातिष्ठोत्तिष्ठ भारत ॥४२॥
ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां
योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ज्ञानकर्मसंन्यास-
योगो नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥४॥

चैत्र शुक्ल १५ बुध]   २० अप्रैल   [वैशाख ७

(हनुमत्-जयन्ती)

आज पुनः शनैश्चर के कुण्ड में स्नान किया. दोनो समय भो. नन्दलाल के पास. आज से नन्दलाल के दूसरे मकान में (जो क्रियार्थियों को ठहराने के लिये बनाया है) एक कमरे में रहने का ठहरा था. रात्री निवास वहीं. आज प्रेमनाथ को तदार के घर गया था. आज पं. नन्दलाल की जन्मकुण्डली देखी. 'बुमजुआ' तक घूमने गया था. साथ प्रेमनाथ को तदार था.

ॐ

पञ्चमोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

संन्यासं कर्मणां कृष्ण पुनर्योगं च शंससि ।

वैशाख कृष्णा १ गुरु सं० १९८९] २१ अ० [वैशाख ८

आज सुबः शौचादि करके स्नानादि किया.
फिर पं. नारायणजू फोतदार के यहां. उनका
लड़का शामलाल भोजन को ले गया.
रात को भो. नहीं किया. आज तबियत
बीमार थी. आज सालीसे साधु पं. सदानं-
दकी लामिलने आया था. इसने दो सालमें
बहुत उन्नति की है. इसको १ रु. दिया.
इसने अब गायत्री पुरश्चरण शुरू कि-
या है. स्त्री निवास उसी कमरे में
।-) कहीं गिर गये पता नहीं.

यच्छ्रेय एतयोरेकं तन्मे ब्रूहि सुनिश्चितम् ॥१॥
श्रीभगवानुवाच
संन्यासः कर्मयोगश्च निःश्रेयसकरावुभौ ।
तयोस्तु कर्मसंन्यासात्कर्मयोगो विशिष्यते ॥२॥

आज सुबः शौचादि किया. स्नान नहीं.
आज पं. माधोराम पण्डा मास्टर of मिशन हाई स्कूल अनन्तनाग मदन के घर सुबः भोजन.
रात में नन्दलाल के पास भी. निवास अपने कमरे में. १ घण्टे को घूमने गया था.

'साधन संग्रह' by रघुनन्दनप्रसाद सिंह पुस्तक पढ़ी. पुस्तक अच्छी है. बंगाली चैतन्य प्रभु सम्प्रदाय की ज्ञान व भक्ति ग्रन्थों के आधार पर लिखी है.

ज्ञेयः स नित्यसंन्यासी यो न द्वेष्टि न काङ्क्षति।
निर्द्वन्द्वो हि महाबाहो सुखं बन्धात्प्रमुच्यते ३
सांख्ययोगौ पृथग्बालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः।
एकमप्यास्थितः सम्यगुभयोर्विन्दते फलम्॥४॥

आज सुबः शौचादिकर के भो. पं. नन्दराम फोतदार के यहां. आज स्नान नही किया. फिर यहां से ६ मील पैदल चलकर "साली" पहुंचे साथ मास्टर नन्दलाल और प्रेमनाथ फोतदार थे. साली में साधु पं. सर्वानन्द से मिले. ३ घण्टे यहां थे. बातचीत करके फिर शाम को पैदल मटन आये. रात भो. नन्दलाल के भाई हरगोपाल के पास. निवास अपने कमरे में.

यत्सांख्यैः प्राप्यते स्थानं तद्योगैरपि गम्यते ।
एकं सांख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति ।५।
संन्यासस्तु महाबाहो दुःखमाप्तुमयोगतः ।
योगयुक्तो मुनिर्ब्रह्म नचिरेणाधिगच्छति ॥६॥

आजसुब: शौचादिकरकेभो. नन्दलालके घर
दोनोसमय. आजस्नाननहीकिया,
आज 'स्वामीरामतीर्थ भागपहला'
प्रकाशक रामतीर्थ पब्लिकेशनलीगलखनऊ
यहपुस्तकपढी पुस्तकबहुतअच्छीहै.
शामको घूमनेगयाथा. निवासरात्रीमें अपने
कमरेमें.

योगयुक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रियः।
सर्वभूतात्मभूतात्मा कुर्वन्नपि न लिप्यते ॥७॥
नैव किंचित्करोमीति युक्तो मन्येत तत्त्ववित्।
पश्यञ्शृण्वन्स्पृशञ्जिघ्रन्नश्नन्गच्छन्स्वपञ्श्वसन्

आज सुबः शौचादि करके स्नान भी किया. दोनो समय भी. भास्करनन्द जाजके पास निवास रात्री में अपने कमरे में. आजसे 'फोतदार पं. प्रेमनाथ' को गीतामूल पढाना शुरू किया. आज भास्करनन्द जाजको सूर्य का द्वादश नमस्कारात्मक समन्त्रक सक्रियकर्म सिखाया. पं. राधाकृष्ण को सन्ध्याभाष्य पढाना शुरू किया.

शाम को घूमने गया था. साथ प्रेमनाथ फोतदार था.

प्रलपन्विसृजन्गृह्णन्नुन्मिषन्निमिषन्नपि ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेषु वर्तन्त इति धारयन् ॥९॥
ब्रह्मण्याधाय कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा करोति यः
लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा ॥१०॥

आज सुबः शौचादि क्रिया. स्नान नहीं.
भो. 'ताराचन्दके यहां. यह मास्टर नन्दलालका
साला है. रात भो- नन्दलालके घर. निवास अपने
कमरे में. कमने अकेला ही गया था. आज प्रेमनाथ
मुन्शी आया था. आज).। मुनक्का).। मिश्री
प्रेमनाथ फोतदारले आया था. आज पं. जीया
लाल फोतदार मिलने आया था.

कायेन मनसा बुद्ध्या केवलैरिन्द्रियैरपि।
योगिनः कर्म कुर्वन्ति सङ्गं त्यक्त्वात्मशुद्धये ११
युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा शान्तिमाप्नोति नैष्ठिकीम्
अयुक्तः कामकारेण फले सक्तो निबध्यते १२

आजसुब: ९ तै भादिकरके भो. दोनो समय नन्दलाल के पास. स्नान नहीं किया. आज प्रकृति अस्वस्थ थी. घूमने गया था. साथ प्रेमनाथ फोतदार और राधाकृष्ण राजदान था. आज इन्डियन प्रेस इलाहाबाद से छपे हिन्दी महाभारत अनुवाद का ३३ वां हिस्सा पढ़ा. आज 'राजतरङ्गिणी' एम. ए. स्टीन की प्रकाशित पढ़ने के लिये लाई. निवास अपने कमरे में.

सर्वकर्माणि मनसा संन्यस्यास्ते सुखं वशी ।
नवद्वारे पुरे देही नैव कुर्वन्न कारयन् ॥१३॥
न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः ।
न कर्मफलसंयोगं स्वभावस्तु प्रवर्तते ॥१४॥

शौचादि. स्नान नहीं. सोनो समझो. नन्दलाल के.
आज 'राजतरङ्गिणी' पढ़ना शुरू किया.
राम को पूछने गया था साथ प्रेमनाथ फोतदार और राधाकृष्ण राजदान था.
इस समय काश्मीर के हिन्दुओं की बहुत बुरी हालत हो रही है. मुसलमानों को बहुत हक दिये जा रहे हैं. महाराजा अंग्रेजों के ढंग को पढ़ना चाहता है. निवास अपने कमरे में.

नादत्ते कस्यचित्पापं न चैव सुकृतं विभुः।
अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तवः ॥१५॥
ज्ञानेन तु तदज्ञानं येषां नाशितमात्मनः।
तेषामादित्यवज्ज्ञानं प्रकाशयति तत्परम् ॥१६॥

शौचादि. स्नान नहीं. आज दोपहर का भोजन
मास्टर नन्दलाल के बहन के घर. रात पं. नन्द-
राम कोतदार के घर. जीयालाल कोतदार का
जन्मदिन था. आज मास्टर नन्दलाल को 'अ-
ध्यात्मरामायण' पढ़ाना शुरू किया. आजसे
ओंकार के पं. दीनानाथ बापू भी पढ़ने आने
लगा. स्नान. शिवमहिम्न स्तोत्र शुरू किया है
आज राधाकृष्ण नहीं गया. एक कार्ड
बालमुकुन्द ने नाथजी को भेजा. एक कार्ड
कारवरीदा. हम ने गया था. साथ प्रेमनाथ
था. आज राजतरंगिणी पढ़ी. निवास अपने
कमरे में.

ओंकार जिज्ञासी

तद्बुद्धयस्तदात्मानस्तन्निष्ठास्तत्परायणाः ।
गच्छन्त्यपुनरावृत्तिं ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः ॥१७॥
विद्याविनयसंपन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि ।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः ॥१८॥

स्नान नहीं. दिन का भो. नन्दलाल के घर.
आज प्रकृती ठीक नहीं थी. रात को भो. नहीं किया.
घूमने नहीं गया. राजतरङ्गिणी पढ़ी.
दीनभाइ को ५०) रू पार्वती पढ़ाना आरम्भ किया.
राधाकृष्ण नहीं आया. रात्री निवास अपने कमरे में.

इहैव तैर्जितः सर्गो येषां साम्ये स्थितं मनः।
निर्दोषं हि समं ब्रह्म तस्माद्ब्रह्मणि ते स्थिताः १९
न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य नोद्विजेत्प्राप्य चाप्रियम्।
स्थिरबुद्धिरसंमूढो ब्रह्मविद्ब्रह्मणि स्थितः।२०।

आज भी दोनो समय मास्टर माधोराम खार के पर. निवास रात अपने कमरे में. स्नान नहीं. मास्टर नन्दलाल खार, जीयालाल, प्रेमनाथ फोतदार आये थे.

बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा विन्दत्यात्मनि यत्सुखम्
स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा सुखमक्षयमश्नुते ॥२१॥
ये हि संस्पर्शजा भोगा दुःखयोनय एव ते।
आद्यन्तवन्तः कौन्तेय न तेषु रमते बुधः ॥२२॥

वैशाख कृष्ण १२ सोम] २ मई [वैशाख १९

आज प्रदोष दिनभर मौन. रातको नियमाऽनुसार पारण मास्टर नन्दलाल के घर. शामको स्नान किया था.

शक्नोतीहैव यः सोढुं प्राक्शरीरविमोक्षणात् ।
कामक्रोधोद्भवं वेगं स युक्तः स सुखी नरः ॥
योऽन्तःसुखोऽन्तरारामस्तथान्तर्ज्योतिरेव यः
स योगी ब्रह्मनिर्वाणं ब्रह्मभूतोऽधिगच्छति ॥

वैशाख कृष्णा १३ मंगल]   ३ मई   [वैशाख २०

स्नान नहीं किया. भो. दोनो समय नन्दलाल के घर. तबियत ठीक नहीं थी. घूमने गया था.

लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणमृषयः क्षीणकल्मषाः ।
छिन्नद्वैधा यतात्मानः सर्वभूतहिते रताः ।२५।
कामक्रोधवियुक्तानां यतीनां यतचेतसाम् ।
अभितो ब्रह्मनिर्वाणं वर्तते विदितात्मनाम् ।२६।

वैशाख कृष्ण १४ बुध] ४ मई [वैशाख २१

स्नान नहीं किया. दिन का भो. पं. नन्दराम फोतदार के घर. आज मास्टर माधोराम ने शहत दिया. वह साफ करके रक्खा. रात को भो. नन्दलाल मास्टर के घर. आज साधु पं. सर्वानन्द जी आये थे ये मेरे लिये खड़ाऊं दे गये. ५ बजे तक यहां थे.

स्पर्शान्कृत्वा बहिर्बाह्यांश्चक्षुश्चैवान्तरे भ्रुवोः ।
प्राणापानौ समौ कृत्वा नासाभ्यन्तरचारिणौ ॥
यतेन्द्रियमनोबुद्धिर्मुनिर्मोक्षपरायणः ।
विगतेच्छाभयक्रोधो यः सदा मुक्त एव सः ।२८।

वैशाख कृष्ण ३० गुरु] ५ मई [वैशाख २२

आज सुब: का भो. पं. नन्दराम फोतदार के घर.
रात भो. मास्टर नन्दलाल के घर. स्ना. नहीं.

ओक्तारं यज्ञतपसां सर्वलोकमहेश्वरम् ।
सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति ॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मसंन्यासयोगो नाम पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

आज सुबः का भो. पं. नन्दराम फोतदार के घर.
रात को कुछ नहीं. तबियत ठीक नहीं थी.
आज जीया आनन्द के साथ ऊपर के 'शाहकुल'
नहर पर घूमने गया था. स्नान नहीं.
आज एक पोस्टकार्ड पं. श्रीकण्ठ नेहरू को भेजा.

ॐ

षष्ठोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

अनाश्रितः कर्मफलं कार्यं कर्म करोति यः ।

वैशाख शुक्ल २ शनि]   ७ मई   [वैशाख २४

आज सुब: का भो. पं. नन्दराम पोतदार के घर.
रात नन्दलाल मास्टर के घर भो. किया. आज नन्दला
ल के साथ उसके ससुराल गया वहां दूध पीया.
फिर नन्दलाल के साथ 'नहर' पर गये थे. वहां
नन्दलाल को 'कर्म गीता' १७ श्लोक पढ़ाये.
'आत्म विश्वास' ७ श्लोक पढ़ाये. स्नान नहीं.
निवास अपने कमरे में.

स संन्यासी च योगी च न निरग्निर्न चाक्रियः ।१।
यं संन्यासमिति प्राहुर्योगं तं विद्धि पाण्डव ।
न ह्यसंन्यस्तसंकल्पो योगी भवति कश्चन ।२।
आरुरुक्षोर्मुनेर्योगं कर्म कारणमुच्यते ।

वैशाख शुक्ल ३ रवि]   ८ मई   [वैशाख २५

(अक्षयतृतीया)

आज सुब: का भो. पं. नन्दराम के घर.
आज 'परशुरामावतार कथा' भागव. ९ स्कं.
कुण्डपरकही को ई २५-३० आदमी आये थे.
पुलिस ने पहले रोका था. हमने समझाया
कि यह कथा है. लेकिन नहीं 'आर्डिनेन्स' कथा
धार्मिक कथा के लिये नहीं होता. प्रशाद भी
किशमिश का दिया था. अपनी बनाई 'परशु-
राम स्तुति' भी सार्थ सुनाई. रात भो. नन्दराम के घर.
निवास अपने कमरे में. आज नहर पर घूमने गया था. साथ
प्रेमनाथ पोतदार और 'हाड़पर राम' थे. जिलादार 'ईश्वरदास'
के आग्रह से थोड़ी देर उसके डेरे पर बैठा था.

योगारूढस्य तस्यैव शमः कारणमुच्यते ॥३॥
यदा हि नेन्द्रियार्थेषु न कर्मस्वनुषज्जते ।
सर्वसंकल्पसंन्यासी योगारूढस्तदोच्यते ॥४॥
उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् ।

वैशाख शुक्ल ४ सोम] ६ मई [वैशाख २६

आज सुबः शौचादि करके भो. नसराम फो तहार के
घर. रात नन्दलाल के घर. निवास अपने कमरे मे
घूमने गया. आज मालूम हुआ की हमारे घर रा-
मकथा का रिपोर्ट मुसलमानों ने अन्य लाना
भाने में किया है.

आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः ॥५॥
बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मैवात्मना जितः ।
अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्तेतात्मैव शत्रुवत् ॥६॥
जितात्मनः प्रशान्तस्य परमात्मा समाहितः ।

वैशाख शुक्ल ५ मंगल] १० मई [वैशाख २७

आज सुबः शौचादि कर कर के प्रो. पं. नन्दराम फोतदार
के घर. रात नन्दलाल के घर. आज दोपहर १ बजे
कुण्डपर हेडमास्टर मिल अनन्तनाग महेश्वर
नाथ बापू यहां के सिख मार्जन के साथ मिला
इसने हमारा एक घंटा सिरखाया. आखिर इसको
हमने नाम न ही बतलाया. यह बिलकुल मूर्ख
बातमीज आदमी है. निवास अपने कमरे में

शीतोष्णसुखदुःखेषु तथा मानापमानयोः ॥७॥
ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा कूटस्थो विजितेन्द्रियः ।
युक्त इत्युच्यते योगी समलोष्टाश्मकाञ्चनः ॥८॥
सुहृन्मित्रार्युदासीनमध्यस्थद्वेष्यबन्धुषु ।

आज सुबः २ पैचातिदिकार के भो. पं. नन्दराम फोतदार के वार
रात नन्द लाल मास्टर के पास. नन्द लाल को कुछ पासमजी
नापटाई. घूमने गया था साथ जी या जाकुवा.
निवास अपने कमरे में. पुलिस हमारी रवृ व खोज कर
रही है.

साधुष्वपि च पापेषु समबुद्धिर्विशिष्यते ॥९॥
योगी युञ्जीत सततमात्मानं रहसि स्थितः ।
एकाकी यतचित्तात्मा निराशीरपरिग्रहः ॥१०॥
शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य स्थिरमासनमात्मनः ।

आज सुबह शौचादि करके भो. [illegible] हरगोपाल के
घर. [illegible]. आज सर्वानंद साधु सात(?)
से आये थे. आज मास्टर शिवजी सहाय के पिता ने आया
था यह १५ दे गया. आज 'रामगीता' समाप्त की.
आज मालूम हुआ कि पुलिस हमारी बहुत इन्क्वायरी
कर रही है. [illegible] आया था. निवास अपने कम-
रे में. आज कुछ बुखार आया. रात सिर्फ दूध पीया.
प्रेमनाथ मुन्शी आया था.

नात्युच्छ्रितं नातिनीचं चैलाजिनकुशोत्तरम्॥११॥
तत्रैकाग्रं मनः कृत्वा यतचित्तेन्द्रियक्रियः।
उपविश्यासने युञ्ज्याद्योगमात्मविशुद्धये॥१२॥
समं कायशिरोग्रीवं धारयन्नचलं स्थिरः।

आज सुबह: शौचादि करके भो. पं. नन्दराम फोतदार के घर किया. फिर पैदल 'साक्षी' गया साथ जीयालाल फोतदार था. यहां साधु सर्वानन्द जी से बात चीत करके पैदल मरगये. रात भो. नन्द लाल जी के पास. निवास रात भर जीयालाल फोतदार के घर. मालूम हुआ कि यहां पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट साधु जी से आने के और दो कान्स्टेबिल अब नाग के आये थे और तलाश करते थे. फिर हमने यह ठहराया कि सुबह: किसी को मालूम न होते हुए साधु जी के जाना और सर्वानन्दजी भी गया है सिर्फ नन्दलाल और जीयालाल जो साथ हो [illegible] खबर साधु जी भेजें कि पुलिस हमारी क्या खोज करती है आदि आदि.

संप्रेक्ष्य नासिकाग्रं स्वं दिशश्चानवलोकयन् ।१३।
प्रशान्तात्मा विगतभीर्ब्रह्मचारिव्रते स्थितः ।
मनः संयम्य मच्चित्तो युक्त आसीत मत्परः ॥१४॥
युञ्जन्नेवं सदात्मानं योगी नियतमानसः ।

आज सुबह सूर्योदय के पहले उठकर चला तालाब में गया.
रिकर के 'लकडी' पढ़ रहा 'सारिका जी' का ... फोतदार
साथ आया था. सोनो समय भो. पं. गोविन्द जी राजदान
के घर. 'साहित्य' यह 'मार्तण्ड' से छपी है. इस गांव
में घर सम्पन्न हैं. सब राजदान हैं. और इन
के पास जमीन बहुत भारी है. यहां दूसरे नंबर का धनी
पं. गोविन्द राजदान है. यया सी हास ... है. इसके ही
घर में आजकल साधु पं. सर्वानन्द कौल रहते हैं.
यहां से ... 'पाप हरण नाग' है. यहां से ...
'कर्कोट नाग' है. आज काश्मीर धर्मार्थ सुपरिटेण्डेन्ट
पं. शिकारा पर आये इनसे परिचय हुआ थे जम्मू से
सीधे इधर ही आये. मटन में इनको खोजा था.
बातचीत भी कुछ हुई. निबाल यही.
सा. ति. ... तैसमय अपनी डायरी आदि खास काम
... था. यह पहले ही आया ... कि प्रेमना
... के घर [illegible]
महाराज ... .

नात्युच्छ्रितं नातिनीचं चैलाजिनकुशोत्तरम्॥११॥
तत्रैकाग्रं मनः कृत्वा यतचित्तेन्द्रियक्रियः।
उपविश्यासने युञ्ज्याद्योगमात्मविशुद्धये ॥१२॥
समं कायशिरोग्रीवं धारयन्नचलं स्थिरः।

आज सुबह शौचादि करके भो. पं. नन्दराम फोतदार के घर
किया. फिर पैदल स्वामीजी गया साथ जीयालाल फोतदार
था. यहां साधु सर्वानन्दजी से बात चीत करके पैदल
मरजये. रात भो. नन्दलाल जी के पास. निवास रात्रि भर
जीयालाल फोतदार के घर. आज स्वामीजी से आने के
बाद मालूम हुआ कि यहां पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट
और डोकानी [illegible] अवन्तीनाग के आये थे और
प्रतीक्षा कर रहे थे. फिर हमने यह ठहराया कि सुबह किसी
को मालूम न होते हुए स्वामीजी चले जाना और सर्वानन्दजी
की सलाह हुई नी. मैं मटन को ई दिये तो कहना कि श्रीनगर
गया है. सिर्फ नन्दलाल और जीयालाल जैसे ही
[illegible] स्वामीजी भेजें कि पुलिस हमारी क्या खोज करती है
[illegible] आदि आदि.

संप्रेक्ष्य नासिकाग्रं स्वं दिशश्चानवलोकयन् ।१३।
प्रशान्तात्मा विगतभीर्ब्रह्मचारिव्रते स्थितः ।
मनः संयम्य मच्चित्तो युक्त आसीत मत्परः ॥१४॥
युञ्जन्नेवं सदात्मानं योगी नियतमानसः ।

आज तुम सूर्योदय के पहले उठकर चलता ताले में रैना.
दिकरके 'लकड़ी' पहुंचा 'सोतिक जी' या जाय फोतदार
साथ आया था. सोनो समय भो. पं. गोविन्द राजदान
के घर. 'लाड़ी' — यह 'मार्तण्ड' से ५ मील है. इस गांव
में घर पण्डित हैं. सबरा जदान हैं. और इन
के पास जमीन बहुत भारी है. यहां दूसरे नंबर का धनी
पं. गोविन्दराजदान है. यहा सीधा सादा है. इसके ही
घरमें आजकल साधु पं. सर्वानन्द कौल रहते हैं.
यहां से चंफलीन 'पापहरण नाग' है. यहां से ३ मील
'कर्कोट नाग' है. आज कश्मीर धर्मार्थ सुपरिटेण्डेन्ट
पं. टीकालाल आये इनसे परिचय पहुआ ये जम्मू से
सीधे इधर ही आये. मदन में हमको खो जाना था.
बातचीत भी कुछ हुई. निवास यहीं.
सातिया तैसमय अपनी डायरी आदि खास का
जैरे चलाता था. यह पहले ही आता. निका. फि प्रेम ना
[illegible]
महाराज घोड़ा.

शान्तिं निर्वाणपरमां मत्संस्थामधिगच्छति ।१५।
नात्यश्नतस्तु योगोऽस्ति न चैकान्तमनश्नतः।
न चाति स्वप्नशीलस्य जाग्रतो नैव चार्जुन ।१६।
युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु ।

तिथि के अनुसार विवाह दिन ५ वर्ष पूर्ण हुए.

आज अजीर्ण होने के कारण भो. एक समय [illegible] को ५ बजे किया साधु पं. सर्वानन्द जी के पास. आज पं. [illegible] जी से बहुत बातचीत हुई. रात को बहुत जोर का बुखार आ गया था. निवास यहीं. '[illegible] काक जी' ये काश्मीर धर्मार्थ विभाग के सुपरिन्टेण्डेन्ट हैं. स्वभाव सरल है श्रीनगर के रहने वाले हैं. प्रतिदिन 'श्री यन्त्र पूजन' विधिपूर्वक करते हैं. आज का पूजन हमने देखा. हमारी और इनकी इष्ट देवता एक ही है. इनको हमसे मिलने की बहुत इच्छा थी. इन्होंने स्वामी सर्वानन्द जी को चिट्ठी लिखकर हमको रुकवाया था.

श्री यन्त्र पूजन

युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा ॥१७॥
यदा विनियतं चित्तमात्मन्येवावतिष्ठते ।
निःस्पृहः सर्वकामेभ्यो युक्त इत्युच्यते तदा ॥१८॥
यथा दीपो निवातस्थो नेङ्गते सोपमा स्मृता ।

आज सुबह शौचादि करके दोनों समय पो. पं. गोविन्दजू के घर. आज शरीर अत्यन्त निर्बल हो गया है. आज पं. टिकालाल जी [illegible] जाये. रात्री निवास यहीं.
आज पं. प्रेमनाथ कोतदार आया था. इससे मालूम हुआ कि पुलिस हमारी चर्चा विशेष तहीं अब करती है.

योगिनो यतचित्तस्य युञ्जतो योगमात्मनः ॥१९॥
यत्रोपरमते चित्तं निरुद्धं योगसेवया ।
यत्र चैवात्मनात्मानं पश्यन्नात्मनि तुष्यति ॥२०॥
सुखमात्यन्तिकं यत्तद्बुद्धिग्राह्यमतीन्द्रियम् ।

आज सुबः शौचादि स्नानादि पर किया. दिनभर मौन.
रात को नियमानुसार पारण. निवास यहीं
आज प्रदोष था.

वेत्ति यत्र न चैवायं स्थितश्चलति तत्त्वतः ॥२१॥
यं लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाधिकं ततः ।
यस्मिन्स्थितो न दुःखेन गुरुणापि विचाल्यते २२
तं विद्याद्दुःखसंयोगवियोगं योगसंज्ञितम् ।

वैशाख शुक्ल १३ बुध] १८ मई [ज्येष्ठ ४

(नरसिंह-जयन्ती)

आज सुबः शौचादि कर के एक समय भो. गोविन्द जी के पास.
रात को फिर बुखार आया. रात सोया ना कुछ नहीं.
आज मास्टर नंदलाल अखबार और जीयालाल को तलाश लाम
न लेकर आये थे. मालूम हुआ कि पुलिस अवचुका है.

स निश्चयेन योक्तव्यो योगोऽनिर्विण्णचेतसा २३
संकल्पप्रभवान्कामांस्त्यक्त्वा सर्वानशेषतः।
मनसैवेन्द्रियग्रामं विनियम्य समन्ततः ॥२४॥
शनैः शनैरुपरमेद्बुद्ध्या धृतिगृहीतया।

वैशाख शुक्ल १४ गुरु] १६ मई [ज्येष्ठ ५

दोनों सम ना भो. व यहीं गोविन्द जू के घर. तिवाला यहीं सर्वानन्द जी के पास.

आत्मसंस्थं मनः कृत्वा न किंचिदपि चिन्तयेत् २५
यतो यतो निश्चरति मनश्चञ्चलमस्थिरम् ।
ततस्ततो नियम्यैतदात्मन्येव वशं नयेत् ॥२६॥
प्रशान्तमनसं ह्येनं योगिनं सुखमुत्तमम् ।

दो मोसमय भो· तथा निवासयहीं·

उपैति शान्तरजसं ब्रह्मभूतमकल्मषम् ॥२७॥
युञ्जन्नेवं सदात्मानं योगी विगतकल्मषः।
सुखेन ब्रह्मसंस्पर्शमत्यन्तं सुखमश्नुते ॥२८॥
सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि।

आज एक समय भो. रात कुछ नहीं. आज बुखार
बहुत जोर का आया था.

ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः ॥२९॥
यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति ।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति ॥३०॥
सर्वभूतस्थितं यो मां भजत्येकत्वमास्थितः ।

आज सुबः साथी से पठानकोट गंगेसे 'भान' आया ।) दिये. पं. नन्दराम फोतदार के घर दोपहर भो. आज श्रीकण्ठ नहरू की चिट्ठी मिली.

आज एक कार्ड बारामूला भेजा.

रात को नन्दलाल मास्टर के घर.

साथी से 'सीर' तक काशीनाथ राजदान साथ आया था.

सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मयि वर्तते ॥३१॥
आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन ।
सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः ॥३२॥

अर्जुन उवाच

योऽयं योगस्त्वया प्रोक्तः साम्येन मधुसूदन ।

आज नन्दलाल मास्टर के घर भो० करके पं० जीयालाल
फोतदार को साथ लेकर तांगे से अनन्तनाग १) दिये.
अनन्तनाग से श्रीनगर १) सवारी जीयालाल ने
दिये. २ रु० आज मास्टर नन्दलाल ने १ रु० दिया था.
श्रीनगर में नन्दु के घर ठहरा पर विश्वम्भरनाथ
ने इस समय बहुत बुरा व्यवहार किया. इसको
अब बहुत गर्व हो गया है. मदन के श्रीनाथ
से मिलकर उसको उसकी चिट्ठी दे दी
विश्वम्भरनाथ की हालत पहले क्या और अब क्या
हो गयी है. ओहो इतना अभिमान और इतनी
कृतघ्नता. शाबाश. अस्तु. रात को यहीं भो.
जीयालाल हमारे साथ ही है. रात निवास यहीं

एतस्याहं न पश्यामि चञ्चलत्वात्स्थितिं स्थिराम्
चञ्चलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम् ।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम् ॥३४॥
श्रीभगवानुवाच
असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम् ।

आज श्रीनाथ के डेरे गये थे साथ जीया डा. उफोत-
दार था. आज एक समय पथ्य भी नहीं. रात को बुखार
आया था. आज पं. टीका राम खजांची सुपरिन्टे-
न्डेन्ट धर्मार्थ मिलने आये थे इसने अत्यन्त प्रेम
मय व्यवहार किया. ३ घंटा मेरे पास बैठे थे.
डा. वर्मन के जड़ी बुखार की दवा की बहुत तारीफ
की पर [illegible] जी नहीं. रात निवास यहीं. हमारी बिमा
री देखकर भी ~~निरञ्जननाथ~~ के कानों पर
जूं नहीं रेंगी. जो मेरे पैरों पास बैठकर २ दोर घंटे
रोता था. वाह रे कृतघ्नता. डा. देवकी लाल ने भी
बहुत नम्रता पूर्ण व्यवहार किया. आज बुखार थोड़ा
आया पर अब कमजोरी बहुत बढ़ गयी है.

अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते ॥३५॥
असंयतात्मना योगो दुष्प्राप इति मे मतिः ।
वश्यात्मना तु यतता शक्योऽवाप्तुमुपायतः॥३६॥

अर्जुन उवाच

अयतिः श्रद्धयोपेतो योगाच्चलितमानसः ।

ज्येष्ठ कृष्ण ६ बुध] २५ मई [ज्येष्ठ ११

तिथि के अनुसार [illegible] जन्म दिन १९ वर्ष पूर्ण हुए. आज शौ[illegible] करके दोनों समय भो. यहीं. शाम को जीया[illegible] लदार को साथ लेकर श्रीनाथ [illegible] के डेरे गया था इसको साथ लेकर [illegible] बागमें घूमने गये थे. वहांसे आकर पं. [illegible] के [illegible] गया था. इन्होंने एक हकीम को मेरे लिये बुलाया था. इसने दवा दी है. अब देखना क्या होता है. रात निवास [illegible] के पर. इस समय की [illegible] और इन [illegible] और ग्रामवों का व्यवहार अपमानपूर्ण और अपमानजनक है. श्री [illegible] और श्रीकृष्ण यहां नहीं है.

अप्राप्य योगसंसिद्धिं कां गतिं कृष्ण गच्छति ३७
कच्चिन्नोभयविभ्रष्टश्छिन्नाभ्रमिव नश्यति ।
अप्रतिष्ठो महाबाहो विमूढो ब्रह्मणः पथि ॥३८॥
एतन्मे संशयं कृष्ण छेत्तुमर्हस्यशेषतः ।

ज्येष्ठ कृष्ण ७ गुरु] २६ मई [ज्येष्ठ १२

आज [illegible] के यहां [illegible] करके दोनों
[illegible]
आज शाम को जीयालाल फोतदार और श्रीनाथ
(सटनका) को लेकर लाल मण्डी बाग में घूमने गये थे.
वहां से आकर [illegible]
[illegible] इन्होंने एक [illegible]
[illegible] ऐसे [illegible]
होता है. [illegible] और श्री[illegible]
[illegible]
और औरत [illegible] के नहीं है.

त्वदन्यः संशयस्यास्य छेत्ता न ह्युपपद्यते ॥३९॥

श्रीभगवानुवाच

पार्थ नैवेह नामुत्र विनाशस्तस्य विद्यते ।
न हि कल्याणकृत्कश्चिद् दुर्गतिं तात गच्छति ४०

आज शुभ- धर्म प्रदास के स्थान पर शौचादि करके एक समय भो. आज ऽ मैनाथ कडे हेग या था. आज नहरूवालोने घोर अपमानजनक मदोन्मत्ता पूर्ण व्यवहार किया. इस समय इनका व्यवहार कृतघ्नता पूर्ण है. आज दोपहर भात खाते समय / भी इन्होने बहुत कष्ट दिया. आधा ही खाना छोड दिया. आज बुखार थोडा आया था. पर कमजोरी अब बहुत ज्याद: हो गयी है. रात कुछ नही. फिर हम ने इनसे पानी तक नहीं पीया ॥ साबुन

ता. २८-५-३२- आज पं. जी या [illegible] फोतदार को नहरूओं ने अपमानित किया मेरे बारे से बहुत ही बुराई फैला रहे हैं. अस्तु ये सब अन्याय [illegible] से उन्मत्त हो गये हैं.

प्राप्य पुण्यकृतां लोकानुषित्वा शाश्वतीः समाः।
शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते॥४१॥
अथवा योगिनामेव कुले भवति धीमताम्।
एतद्धि दुर्लभतरं लोके जन्म यदीदृशम्॥४२॥

आज सुब: धर्मदास के मन्दिर पर शौचादि कर
के 'श्रीनाथ' के डेरे गया. वहां दवाखाई तथा
यहीं साबू दाना पका खाया. →) दूध)॥। ≑ मीठा
→) साबू दाना. जीयालाल फोतदार साथ था.
इसने और किसी पण्डत के घर भो. किया.
१ बजे नहरू के घर गये. यहां पं. टीकालाल
जीने दो आदमी भेजे थे उनके साथ एक जगह
देखने गये थे. वह पसन्द नहीं आयी फिर हम
लौटे तो पं. टीकालाल और मोतिम धर्मार्थ दो-
नो मिले फिर थोडी देर मोतिम के घर बैठा था
वहां गिलास फल खाया. फिर टांगे से 'रामबाग'
गया. बिस्तर टीकालाल जीने भेज दिया था.
साथ जीयालाल है. रात भो. रामबाग के एक पुजा-
री के घर.. चावल आदि टीकालाल जीने भेजे
थे. रात्रिवास एक पक्के कमरे में.

तत्र तं बुद्धिसंयोगं लभते पौर्वदेहिकम् ।
यतते च ततो भूयः संसिद्धौ कुरुनन्दन ॥४३॥
पूर्वाभ्यासेन तेनैव ह्रियते ह्यवशोऽपि सः ।
जिज्ञासुरपि योगस्य शब्दब्रह्मातिवर्तते ॥४४॥

आज दोनो समय भोजन पुजारीके डेरे इसका नाम पं. बालकराम है, आज पं. टीकाराम यहां (रामबागमें) मेरे पास आये थे. इन्होने कुछ घी और ३५ - बालकरामको हमारे लिये दिये आज घूमने भी गये थे. यहां बडे आनन्दसे है साधजीया जाते है.

प्रयत्नाद्यतमानस्तु योगी संशुद्धकिल्बिषः ।
अनेकजन्मसंसिद्धस्ततो याति परां गतिम् ॥४५॥
तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिकः
कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन ४६

आज भो. एक समय. रातको कुछ नही
बुखार जोर का आया. आज 'श्रीनाथ' ग.
आया था. यह शास्त्री में पढता है. इसके पा.
ठशाला का एक और विद्यार्थी शास्त्री परी
क्षा दिया हुआ आया था.

योगिनामपि सर्वेषां मद्गतेनान्तरात्मना ।
श्रद्धावान्भजते यो मां स मे युक्ततमो मतः ॥४७॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे आत्मसंयमयोगो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

ज्येष्ठ कृष्ण ११ मंगल] ३१ मई [ज्येष्ठ १७

आज सुबः शौचादि करके दोनो समय पं. बाल
कराम के घर भो. निवास अपने कमरे में आज
हकीम पं. राधाकृष्ण आया था. ये कुछ अम्र-
करेगये. [illegible]. साथ १५. और दूसेर
चावल, २सेर मूंग दे गये. श्रीनाथ आया था.
हजरी बाग तक घूमने गया था. जीया-
लाल फोतदार साथ था. ।।। सावन.

ॐ

सप्तमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

मय्यासक्तमनाः पार्थ योगं युञ्जन्मदाश्रयः।

ज्येष्ठ कृष्ण १२ बुध] १ जून सन् १९३२ [ज्येष्ठ १८

आज प्रदोष. दिनभर मौन. रातको श्रीनाथके
डेरे गया था. वहां नियमाऽनुसार पारण किया.
-)पाव ल -) घी -) दूध)॥। मीठा चीनी.
आज पं. टीकाराम और पं. शिवनाथ दानो
मिलने तांगे पर आ रहे थे रास्ते में मिले फिर
मैं भी उनके आग्रह से तांगे पर ही 'नवाक दरु' तक
गया. वहां से वे दोनो मेरे साथ 'गौरीशङ्कर मन्दि
र में आये. कुछ देर बैठकर फिर गये. ये बहुत
प्रेम कर रहे हैं. आगे पता नहीं. आज पं. सन्त
राम घर आया था मिलने. यह पहले साथी में
मिला था. 'श्रीनाथ' आया था. रात निवास
अपने कमरे में. औया लाल साथ है.
-)॥ 'गिलास फलाना खिलाना मिश्र.

असंशयं समग्रं मां यथा ज्ञास्यसि तच्छृणु ॥१॥
ज्ञानं तेऽहं सविज्ञानमिदं वक्ष्याम्यशेषतः ।
यज्ज्ञात्वा नेह भूयोऽन्यज्ज्ञातव्यमवशिष्यते ॥२॥
मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये ।

आज २ से चार दिकार एक समय भो. बाऊक राम के घर
आज पं. सतलाऊधार एक डाक्टर को साथ ले
आया था. यह डाक्टर इसकी बहन का लड़का है
इसने दवा भी दी है. एक खुराक खाया.
आज बुखार बाहर बहुत थोड़ा निकला ठंड भी
थोड़ी लगी. पसीना काफी आया था. रात खा
ना कुछ नहीं. श्रीनाथ आया था. एक और
पण्डित आया था. यह कस्टम महकमे में
मुलाजिम है. सी. आई. डी. की तरह इसके
प्रश्न थे पता नहीं. रात कुछ नहीं खाया.
मिश्री का लेह -) दि. घास लाई)।
-) दूध

यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः॥३॥
भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च।
अहंकार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा॥४॥
अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम्।

आजसुबः शौचादिकरके भो. दोनोसमय बातकरा ~~ने~~ ~~के~~ डेरे. आजश्रीनाथ और उसका साथी आयेथे, आज कईलोगआकर हमारे पासबैठ चलेगये. एकगोर्खा औरकाश्मीरी बहुत दुर्जनताकाव्यवहार करगये.

जीयालाल साथहीहै. जीयालालके घर वालो ने बड़ाशोर मचायाहै. कि जीयालालएक साधु केसाथ रहताहै. अस्तु.

गोर्खा औरकाश्मीरी जो आयेथे ये भारीही मूर्खऔर दुर्जनहै. गोर्खेकानाम ईश्वरसिंह है काश्मीरी कुसलंगू गनपतिचार ...
...काभाईहै. यह अपने आपको बी. ए. बतलाता है.

जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्यते जगत् ॥५॥
एतद्योनीनि भूतानि सर्वाणीत्युपधारय।
अहं कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयस्तथा ॥६॥
मत्तः परतरं नान्यत्किंचिदस्ति धनंजय।

आज दोनो समय भो. बालकराम के डेरे निवास अपने कमरे में. आज जीवालाल नेहरू भी आया था. इसके साथ हमने उपेक्षा का ही व्यवहार किया.

मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव ॥७॥
रसोऽहमप्सु कौन्तेय प्रभास्मि शशिसूर्ययोः।
प्रणवः सर्ववेदेषु शब्दः खे पौरुषं नृषु ॥८॥
पुण्यो गन्धः पृथिव्यां च तेजश्चास्मि विभावसौ।

आज दोनो समय भो. बालकराम के डेरे।
निवास अपने कमरे में. आज बुखार
की बारी होने पर भी नहीं आया. कमजोरी
बहुत है. आज पं. सलगालधार आया था.
शाम को डाक्टर भी आया था.
)॥ दूध.

जीवनं सर्वभूतेषु तपश्चास्मि तपस्विषु ॥९॥
बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम्।
बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम्॥१०॥
बलं बलवतां चाहं कामरागविवर्जितम्।

आज दोनो समय भो. बालकृष्ण के डेरे.
निवास अपने कमरे में. आज मोतिमी धर्म-
वीर शिव [illegible] जी आया था.
पं. [illegible] जी भी आये थे
आज ४ दिन की दवा डाक्टर फिर दे
गया है. पं. सन्तलाल [illegible] भी आया था थे.
॥ [illegible] आये थे. श्री [illegible] आया था

वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः ।१६।
कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः ।
तं तं नियममास्थाय प्रकृत्या नियताः स्वया २०
यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति ।

आज दोनो समय भो. बालकराम के डेरे.
आज बुखार की बारी होने पर भी नही आया.
'श्रीनाथ' आया था. रात को यहीं रहा.
आज पं. सन्त जालंधर भी आया था
आज एक श्रीकण्ठ नहरू की चिठ्ठी मिली
हमने भी एक चिठ्ठी उसको लिख दी है.

तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम् २१
स तया श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते।
लभते च ततः कामान्मयैव विहितान्हि तान्॥२२॥
अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम्।

आज दोनो समय भो· बालकराम के डेरे निवास अपने कमरे में श्रीनाथ आया था. रातको हमारे पास ही रहा. इसने भी भो· हमारे साथ ही किया.

आज यहां (काश्मीर में) क्षीर भवानी 'तुलमूला' में बड़ा मेला होता है मैं बीमारी के कारण नहीं गया. आज साबूदाना खीर बना खाई थी दूध खांड साबूदाना श्रीनाथ ले आया था.

देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि ।२३।
अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः ।
परं भावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्तमम् ।२४।
नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः ।

(गङ्गादशहरा)

[redacted]
पूर्ण हुए. आज दो नो समय भो. बालकराम
के डेरे 'श्रीनाथ' आया था. हमारे पास ही
रात को रहा. पं. सन्तलाल धर भी आया
था. आज एक महात्मा यहां 'रामबाग' में
आये. ये बङ्गाली हैं. इनका नाम 'गङ्गा-
नन्द सारस्वती है. इनसे परिचय हुआ.
निवास अपने कमरे में.

ज्येष्ठ शुक्ल ११ मंगल] १४ जून [ज्येष्ठ ३१

आज निर्जला एकादशी उपवास.
हमने आलु और साबूदाना बनाया था.
थोडा स्वामी गङ्गानन्दजी ने और मैने
खाया. आलु ॥ घी -) =) खांड) ॥ -) जायफ,
मिर्च मसाला) ॥ स्वामी के साथ बहुत
बातें हुई. ये बहुत विशिष्ट पुरुष हैं.
इनके साथ शिवजी चिकन के घर गया
था. पर ये मिले ही नही. शामको पं. टीका-
लाल जी का लडका और नौकर
आकर हमको ले गये. रात्री निवास टीका
लाल के घर. श्रीनाथ, पं. मनजीत, सुरकार
आये थे. किशोरी टीकालाल के घर आये.

सर्वभूतानि संमोहं सर्गे यान्ति परंतप ॥२७॥
येषां त्वन्तगतं पापं जनानां पुण्यकर्मणाम् ।
ते द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ता भजन्ते मां दृढव्रताः ॥२८॥
जरामरणमोक्षाय मामाश्रित्य यतन्ति ये ।
ते ब्रह्म तद्विदुः कृत्स्नमध्यात्मं कर्म चाखिलम् ॥

आज सुबह पं. हीरालाल जी के घर भो.
१२ बजे पं. सतलाल घर वहां आकर अपने
घर किश्तीसे ले गया. रात भो. तथा
निवास उसीके घर. आज श्रीनाथ आया था.
यहांसे 'ईदगाह' घूमने गये थे. वहां कई पंडित
इकट्ठा हुए थे. इनसे बहुत प्रश्नोत्तर अध्यात्म-
विषयमें हुए. एक दो के सिवा सभी मूर्ख
और घमण्डी थे. रातको पं. जानकीनाथ
घर और दो पण्डित आये थे. जानकीनाथ
को बहुत अच्छा दार्शनिक बोध हुआ है.
इसने हठयोगाभ्यास भी थोड़ा किया है.

साधिभूताधिदैवं मां साधियज्ञं च ये विदुः ।
प्रयाणकालेऽपि च मां ते विदुर्युक्तचेतसः ।३०।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ज्ञानविज्ञान-योगो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥७॥

ज्येष्ठ शुक्ल १२ गुरु] १६ जून [आषाढ़ २

आज प्रदोष। दिनभर मौन रात को राधा माली
राजदान' के घर नियमाऽनुसार पारण
आज सुबः शौचादि यज्ञ करके किरतीसे
गनपतियार आया. साथ पं. सतलाल थे.
यहां 'श्रीनाथ' को साथ लेकरर टांगे से 'पुल-
वामा' आये. १।। रु. किराया मैने दिया.
पुलवामे से पैदल 'हाल' गये. पं. कण्ठ भट्ट
और 'दामोदर रवान' मिले नही. फिर राधा
माली के घर ठहरे. इसने बहुत ही प्रेम-
से स्वागत किया. रात को निवास
राधामाली के घर. रात को दामोदर रवान भी मिल-
ने आया था.

ॐ

अष्टमोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

किं तद्ब्रह्म किमध्यात्मं किं कर्म पुरुषोत्तम ।
अधिभूतं च किं प्रोक्तमधिदैवं किमुच्यते ॥१॥

ज्येष्ठ शुक्ल १४ शुक्र]   १७ जून   [आषाढ़ २

दोनो समय भो. पं. दामोदर खान के घर.
रातनिवास राधामाताजी के घर. दामोदर खान
ने बहुत प्रेमसे व्यवहार किया.

अधियज्ञः कथं कोऽत्र देहेऽस्मिन्मधुसूदन ।
प्रयाणकाले च कथं ज्ञेयोऽसि नियतात्मभिः ॥२॥
श्रीभगवानुवाच
अक्षरं ब्रह्म परमं स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते ।

ज्येष्ठ शुक्ल १५ शनि] १८ जून [आषाढ़ ४

स्त्री जन्मदिन १८ वर्ष पूर्ण.
आज सुबः 'श्रीनाथ' और राधासाजी का
लड़का शम्भुनाथ को साथ लेकर 'रोसु'
गया. यह गांव 'हवाल' से ६ मील पश्चिमो-
त्तर है. यहां 'बलकाकधर' की जागीर है.
यहां आज कुछ हवन था. हमने भोजन किया.
हमारा सम्मान इन्होंने अच्छा ही किया. यहां
की गुफा भी देखी. शाम को लौट आये-
डाल में. निवास रात को राधासाजी के घर.
आज 'सर्वानन्द कौल' श्रीनगर से आया.
इसने भी व्यवहार अच्छा किया.

भूतभावोद्भवकरो विसर्गः कर्मसंज्ञितः ॥३॥
अधिभूतं क्षरो भावः पुरुषश्चाधिदैवतम् ।
अधियज्ञोऽहमेवात्र देहे देहभृतां वर ॥४॥
अन्तकाले च मामेव स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम् ।

आज भो. सुबः दमखाने के पास गया
'श्रीनाथ' श्रीनगर से [illegible] इसले ॥) लौटा
दिये. रातको भो. तथा निवास राधास्वामी के घर.
आज सर्वानन्द को आत्मा के बारे में कुछ समझाया.

यः प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशयः ॥५॥
यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम् ।
तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः ॥६॥
तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च ।

आज सुबः शौचादि करके सुबः भो. 'पं. नारायण कौल' के घर. शाम को सर्वानन्द कौल को साथ लेकर 'दूरी' में गया यहां 'शिवराम भट' के घर गये पर इसने बहुत शठतापूर्ण व्यवहार किया. यहां से फिर पं. शामलाल प्रकाश के घर गये. रात भो. तथा निवास यहीं.

?

मय्यर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयम् ॥७॥
अभ्यासयोगयुक्तेन चेतसा नान्यगामिना ।
परमं पुरुषं दिव्यं याति पार्थानुचिन्तयन् ॥८॥
कविं पुराणमनुशासितारमणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः

आषाढ़ कृष्णा ३ मंगल] २१ जून [आषाढ़ ७

आज शौचादि 'रमेश' नाले पर करके
सुब: का भो. शाम लाल के घर करके
'मुरन' गये यहां १० मिनिट ठहरे. फिर
देवी का दर्शन करके शाम को लाल आये.
रात भो. तथा निवास राधामाजी के घर.

सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूपमादित्यवर्णं तमसः
परस्तात् ।९। प्रयाणकाले मनसाचलेन भक्त्या
युक्तो योगबलेन चैव । भ्रुवोर्मध्ये प्राणमावेश्य
सम्यक् स तं परं पुरुषमुपैति दिव्यम् ॥१०॥

आज सुबः भो. राधामालीके घर रात को पं. लस्स
बाय के घर. रातानिवास राधामालीके घर.
आज बालकरवाये पैसे पं. नारायण कौलने
दिये. आज लसबाय के घर गया था. यहां
कुछ शारदा माहात्म्य तैयार था.

यदक्षरं वेदविदो वदन्ति विशन्ति यद्यतयो वीतरागाः। यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण प्रवक्ष्ये ॥११॥
सर्वद्वाराणि संयम्य मनो हृदि निरुध्य च।

आज सुबः भो. ॐसबाबूके घरकरके शाम
को पं. सर्वानन्द कौलके साथ हालमें ३मील
ओडोरा गये. यहां पं. ताराचन्दकौलके घर
उसके आग्रहसे ठहरे. रातभो. तथानिवास
यहीं. हमसे यहांके साधू पं. ठाकुरजूके साथ
बडीबहस करवाई. यह साधू साधारण अच्छा
है परसंस्कृत जानतानहीं है.

मूर्ध्न्याधायात्मनः प्राणमास्थितो योगधारणाम्
ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन् ।
यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम् ॥१३॥
अनन्यचेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः ।

आज पूर्व: शौचादि करके भो. करके
रात्रि को हाल' में आया. आज भी बड़ा
सिर खाया. आज रात को भो. राधा माली के
घर तथा निवास भी.

तस्याहं सुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः ।१४।
मामुपेत्य पुनर्जन्म दुःखालयमशाश्वतम् ।
नाप्नुवन्ति महात्मानः संसिद्धिं परमां गताः १५
आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन ।

आषाढ़ कृष्ण ७ शनि] २५ जून [आषाढ़ ११

आज दोनों समय भो. दामोदरस्वात के घर
रात निवास राधामाली के घर.

मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते ॥१६॥
सहस्रयुगपर्यन्तमहर्यद्ब्रह्मणो विदुः।
रात्रिं युगसहस्रान्तां तेऽहोरात्रविदो जनाः॥१७॥
अव्यक्ताद्व्यक्तयः सर्वाः प्रभवन्त्यहरागमे।

आज सुबः उठकर पं. सर्वानन्दकौल को साथ लेकर ७ मील पैदल [illegible] गाम गये यहां तीर्थवन्दन करके)। गोर को देकर वहां से आध मील चलकर पं. कृष्ण भट्ट के पास गये इस से मिले. इसमें पहले जैसा ही प्रेम है. यहां भो. करके 'भट पुरा' गये. कृष्ण भट ने १ रु. दिया. भटपुरे में रात भो. तथा निवास पं. शङ्करनाथ सराफ के घर. पं. शङ्कर सराफ तथा इसका लड़का दीनानाथ दोनों ने प्रेम से स्वागत किया. पं. शिवराम, आनन्दराम के घर गये थे.

रात्र्यागमे प्रलीयन्ते तत्रैवाव्यक्तसंज्ञके ॥१८॥
भूतग्रामः स एवायं भूत्वा भूत्वा प्रलीयते ।
रात्र्यागमेऽवशः पार्थ प्रभवत्यहरागमे ॥१९॥
परस्तस्मात्तु भावोऽन्योऽव्यक्तोऽव्यक्तात्सनातनः

आषाढ़ कृष्ण ६ सोम] २७ जून [आषाढ़ १३

आज सुबः कृष्ण भट के पास गये थे.
भो. सुबः का शङ्कर सराफ के घर कर के
शाम को सूर्यास्त समय ५ मील चलकर
'ओडोरा' गये यहां पं. ताराचन्द कौल
के घर रात भो. तथा निवास.

यः स सर्वेषु भूतेषु नश्यत्सु न विनश्यति ॥२०॥
अव्यक्तोऽक्षर इत्युक्तस्तमाहुः परमां गतिम्।
यं प्राप्य न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम ॥२१॥
पुरुषः स परः पार्थ भक्त्या लभ्यस्त्वनन्यया।

आज सुबः शौचादि करके भो. करके १२ बजे 'हवालू' आये साथ सर्वानन्द था. निवास राधा माली राजदान के घर. शाम को भो. राधा माली के घर. आज श्रीनाथ श्रीनगर से आया. इससे मालूम हुआ कि पं. जीयालाल फोतदार 'मटन से कहीं चला गया है. घरवालों का कहना है कि 'भैनो' भागया है. परन्तु हम को पता तक नहीं है.

यस्यान्तःस्थानि भूतानि येन सर्वमिदं ततम् ॥२२॥
यत्र काले त्वनावृत्तिमावृत्तिं चैव योगिनः ।
प्रयाता यान्ति तं कालं वक्ष्यामि भरतर्षभ ॥२३॥
अग्निर्ज्योतिरहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम् ।

आज सुब: शौचादि करके पं. दमखान
के घर भो. करके क्रीडा भगवती के दर्शन
को गये. हाल से पैदल यह जागह ११ मील है.
रात भो. तथा निवास वहीं.
साथ 'दामोदर खान' था. इसीने सारा
बन्दोबस्त किया था. हम और श्रीनाथ
दोनोने वह जगह अच्छी तरह देखी.
इस का वृत्तान्त सारा श्रीनाथ लिखे-
गा.

तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः ॥२४॥
धूमो रात्रिस्तथा कृष्णः षण्मासा दक्षिणायनम् ।
तत्र चान्द्रमसं ज्योतिर्योगी प्राप्य निवर्तते ॥२५॥
शुक्लकृष्णे गती ह्येते जगतः शाश्वते मते ।

आज सुब: शौचादि करके यहीं भो. करके
फिर निकले सो सूर्यास्त समय १५ मील
(दूसरे रास्ते से) पैदल चलकर 'हवाल' पहु
चे. रात भो. दामोदरलाल के घर
निवास राधामाली के घर.

एकया यात्यनावृत्तिमन्ययावर्तते पुनः ॥२६॥
नैते सृती पार्थ जानन्योगी मुह्यति कश्चन ।
तस्मात्सर्वेषु कालेषु योगयुक्तो भवार्जुन ॥२७॥
वेदेषु यज्ञेषु तपःसु चैव दानेषु यत्पुण्यफलं

आज ~~प्रदोष~~ व्रतको नियमाऽनुसार पारण
आज रातको स्नान भी किया था.

प्रदिष्टम् । अत्येति तत्सर्वमिदं विदित्वा योगी परं स्थानमुपैति चाद्यम् ॥२८॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे अक्षरब्रह्मयोगो नामाष्टमोऽध्यायः ॥८॥

आषाढ़ कृष्ण १४ शनि] २ जुलाई [आषाढ़ १८

आज सुबह शौचादि करके सुबह का भो. दामो-
दर खान के घर करके 'ओडेश' गये साथ 'श्री-
नाथ' और 'सर्वतिलक' भी थे. वहां ३-४ घंटे थे.
फिर '[illegible]' से बात चीत करके '[illegible]'
आये. रात भो. लथा विवाहसरा धामा जी के घर.

ॐ

नवमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इदं तु ते गुह्यतमं प्रवक्ष्याम्यनसूयवे ।

आषाढ़ कृष्ण ३० रवि] २ जुलाई [आषाढ़ १९

अंग्रेजी तारीख के अनुसार आज जन्मदिन
३९ वर्ष पूर्ण हुए.
आज सुबः शौचादि करके भो. दामोदर खान
के घर भो. करके श्रीनाथ को साथ लेकर 'लारी'
से श्रीनगर शाम को पहुंचे. यहां श्रीनाथ के
डेरे पर 'गौरीशङ्कर धर्मशाला अहदकदल' में अपना
सामान रखा. यहां काश्मीरी सन्यासी माधवानन्द मिले. इन से नमो नारायण किया.
ये आठ ब्रह्मचारी और प्रवृत्ति पर हैं. इनको
सन १९३० श्रा. कृष्ण ३ को मुल्तान में देखा
था. उस समय इन्होंने व्यवहार हम से खराब
किया था. इस समय भी कुछ वैसा ही है.
पं. जीयालाल फोतदार मर गया है. ऐसा पता
यहां आते ही लगा. यहां से फिर मैं पं. टिक्कालाल जी के

घर गया. भो. तथा निवास वहीं ही. इन्होंने व्यवहार
अच्छा किया.

ज्ञानं विज्ञानसहितं यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात् १
राजविद्या राजगुह्यं पवित्रमिदमुत्तमम् ।
प्रत्यक्षावगमं धर्म्यं सुसुखं कर्तुमव्ययम् ॥२॥
अश्रद्दधानाः पुरुषा धर्मस्यास्य परंतप ।

आज सुबः शौचादि करके श्रीनाथके डेरे गया था।
फिर पं. टीकालालजी के घर गया. यहां सुबः का भो. कर-
के १२ बजे पं. सतलालुधरके घर गयो. यहां रास्तेमें
रास्तेमें 'राधाकृष्ण' मिला यह शिवजी के घर ले गया
इसके यहां थोडा बैठकर पं. सतलालजी के घर गया
था. तथा रात्री निवास सतलालजी के घर. शाम
सतलालका थोरा ठहुआ । निरंजन नाथ के साथ
ईदगाह घूमने गया था.

अप्राप्य मां निवर्तन्ते मृत्युसंसारवर्त्मनि ॥३॥
मया ततमिदं सर्वं जगदव्यक्तमूर्तिना ।
मत्स्थानि सर्वभूतानि न चाहं तेष्ववस्थितः ॥४॥
न च मत्स्थानि भूतानि पश्य मे योगमैश्वरम् ।

(जगदीश-रथयात्रा)

आज सुबह शौचादि करके पं. रामलाल जी के घर भो. करके उन्हीं के साथ 'सहाकरजी' ले नाव में बैठ कर 'दरहमा-फतेपुर' में उतर कर वहां से पैदल ६ मील 'तुनर' गये. रात्री भो. व धाम निवास पं. रामशीला गुसांई के घर 'तुनर' जगह बहुत रमणीय है.

भूतभृन्न च भूतस्थो ममात्मा भूतभावनः ॥५॥
यथाकाशस्थितो नित्यं वायुः सर्वत्रगो महान् ।
तथा सर्वाणि भूतानि मत्स्थानीत्युपधारय ॥६॥
सर्वभूतानि कौन्तेय प्रकृतिं यान्ति मामिकाम् ।

आज सुबः शौचादि करके 'उरपुरा' के देखने गये
जगह का नजारा अच्छी है. फिर पं. विष्णु भट
'पं. [illegible]' के घर भो. करके 12 बजे पैदल
२।। मील चलकर 'माझे गांव' गये. रास्ते में
एक मुसलमान फकीर को =)।। दिये.
माझे गांव में 'महेश्वर नाथ' के घर भो. निवास
मन्दिर में. यहां सिन्ध नदी की कूल बहती है.
इस के किनारे कुटिया किनारे पर एक बड़े भारी चिनार
के वृक्ष के नीचे से [illegible] काश्मीरी पण्डितों की रूपा भव-
-नी देवी का तपस्या स्थल है. वहां रमणीय है.
रात भो. पं. महेश्वरनाथ के पास करके रूपा भवानी के
समाधि मन्दिर के अन्दर सोये.

कल्पक्षये पुनस्तानि कल्पादौ विसृजाम्यहम् ।७।
प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य विसृजामि पुनः पुनः ।
भूतग्राममिमं कृत्स्नमवशं प्रकृतेर्वशात् ॥८॥
न च मां तानि कर्माणि निबध्नन्ति धनंजय ।

तिथी के अनुसार पितृव्य मरण दिन १६ वर्ष पूर्ण हुए.
आज भो. एक दूसरे पं. के घर. यहां आज पं. सत्नाराय
घरते पूजा की और खीर बनाई थी. हमने ।-)।
वटुक कुमारी को बांटे थे. खा पी कर शाम को
निकले सो ३॥ मील पैदल चलकर तांगे से
श्रीनगर आये. किराया सतआनेका.
आज सुब: 'वशान' (माण्डगांवसे १। मील
दूर पहाड़ी पर) गये थे जगह अच्छी है.
आज रात को सिर्फ दूध पीया 'श्रीनाथ' के पास
'गुंजु' अह अमर गोरेरों कि धर्मशाला) रात्री
निवास भी यहीं.

उदासीनवदासीनमसक्तं तेषु कर्मसु ॥९॥
मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम् ।
हेतुनानेन कौन्तेय जगद्विपरिवर्तते ॥१०॥
अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम् ।

आज सुबः शौचादि करके 'पं. टीकालाल व्यासजी' के घर गया था. यहां भो. करके इनसे 'ईश्वर प्राप्ति' 'विज्ञान भैरव' किताबें देखनेके लिये ले आया. शामको पं. सन्तलालजी के घर गया था. यहां दूध पीया. साथ 'श्रीभगवती' था. फिर हरी पर्वत गये. [illegible] रात सिर्फ दूध पीया. निवास श्रीनाथ के पास.

परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम् ॥११॥
मोघाशा मोघकर्माणो मोघज्ञाना विचेतसः ।
राक्षसीमासुरीं चैव प्रकृतिं मोहिनीं श्रिताः॥१२॥
महात्मानस्तु मां पार्थ दैवीं प्रकृतिमाश्रिताः ।

आज सुबः शौचादि करके साबूदाना खीर खाके
१०॥ बजे मोटर आॅफिस से १रु. देकर 'भरन' आया.
यहां पं. वैद्यराज डुडु 'नीनगर' मिला इसीके पास
भो. करके २पमको 'साजीगये साथ पं. वैद्यराज
भी था. रातभो. तथा निवास पं. साधु सर्वानन्द
के पास 'पापहरण' पर. यहां मालूम हुआ कि
जीयालाल फोतदार को सर्वानन्दजीने भेजा
था. और वह साधु गाड़ी में गया था. यह मेरे पास
आया था.

भजन्त्यनन्यमनसो ज्ञात्वा भूतादिमव्ययम् ॥१३॥
सततं कीर्तयन्तो मां यतन्तश्च दृढव्रताः।
नमस्यन्तश्च मां भक्त्या नित्ययुक्ता उपासते १४
ज्ञानयज्ञेन चाप्यन्ये यजन्तो मामुपासते।

आज सुबह: शौचादि कर के मार्तण्ड तीर्थ में स्नान किया १५.-) ब्राह्मणों को पितृ देवता। वास्ते दिया. यहां आज बहुत से परिचित मिले. श्री पं. नन्दलाल मास्टर के पास (सपत्नीक निवास भी यही.

आज पं. जीयालाल केलम' से परिचय हुआ. यह काश्मीर का एक बड़ा रईस जमीन्दार है. खुद बड़ा बैरिस्टर भी है. इस समय यह एक बड़ा लीडर भी है. इसके आग्रह से श्रीनगर आने पर इसके साथ मिलने का वादा किया है.

एकत्वेन पृथक्त्वेन बहुधा विश्वतोमुखम् ॥१५॥
अहं क्रतुरहं यज्ञः स्वधाहमहमौषधम् ।
मन्त्रोऽहमहमेवाज्यमहमग्निरहं हुतम् ॥१६॥
पिताहमस्य जगतो माता धाता पितामहः ।

आज प्रात: शौचादि करके प्रो. नन्दलाल के घर
करके 'पं. शिवजी सराफ मास्टर & सोफ'
के आग्रह से भजन नागनगर प्रे. शास्त्री भो. तथा
निवास पं. तारा चन्द भट्ट के घर.
आज भी पं. जीया लाल के समाधि का भा
मण्डल से - भजन नाम जोरी किया था =)
बैठा लागते हैं पे.

वेद्यं पवित्रमोंकार ऋक्साम यजुरेव च ॥१७॥
गतिर्भर्ता प्रभुः साक्षी निवासः शरणं सुहृत् ।
प्रभवः प्रलयः स्थानं निधानं बीजमव्ययम् ॥१८॥
तपाम्यहमहं वर्षं निगृह्णाम्युत्सृजामि च ।

आज सुबः शौचादि करके पं. ताराचन्द मढू के घर भो. करके पं. शिवजी के साथ 'सोफ्रेग' था 'मोहरीपुरा' तक तांगेसे. वहां से ५ मील सोफ्र तक पैदल. रात्री भो. तथा निवास पं. ठाकुर कौल (५) के घर. यह ८९ वर्ष का है.
१) 'सवारीयांका' किराया शिवजीने दिये.
ठाकुर कौलके घरवालोंका प्रेम वैसा ही है. पर अब इसकी आर्थिक दशा बहुत ही बिगडी है.

अमृतं चैव मृत्युश्च सदसच्चाहमर्जुन ॥१९॥
त्रैविद्या मां सोमपाः पूतपापा यज्ञैरिष्ट्वा स्वर्गतिं
प्रार्थयन्ते । ते पुण्यमासाद्य सुरेन्द्रलोकमश्नन्ति
दिव्यान्दिवि देवभोगान् ॥२०॥ ते तं भुक्त्वा

आषाढ़ शुक्ल १० बुध] १३ जुलाई [आषाढ़ २९

आज तिथी के अनुसार जन्म दिन २९ वर्ष पूर्ण हुए.
आज दोनो समय भो. तथा निवास यहीं. शिवजी
सराफ अब बहुत ही प्रेम करता है.

स्वर्गलोकं विशालं क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति
एवं त्रयीधर्ममनुप्रपन्ना गतागतं कामकामा लभन्ते
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ।२२।

आषाढ़ शुक्ल ११ गुरु]   १४ जुलाई   [आषाढ़ ३०

(देवशयनी)

आज जोगो समय पर थी। तथा निवास यहीं
पं. गोपीनाथ कौल भी बहुत प्रेम करता है।
आज शिवजी के साथ स्मीत (बीर)
तक पैदल घूमने गया था।

येऽप्यन्यदेवता भक्ता यजन्ते श्रद्धयान्विताः ।
तेऽपि मामेव कौन्तेय यजन्त्यविधिपूर्वकम् ।२३।
अहं हि सर्वयज्ञानां भोक्ता च प्रभुरेव च ।
न तु मामभिजानन्ति तत्त्वेनातश्च्यवन्ति ते ।२४।

आज प्रदोष । नियमाऽनुसार पारण रातको.
आज 'गजनाग' देखने गये थे.

यान्ति देवव्रता देवान्पितॄन्यान्ति पितृव्रताः ।
भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनोऽपि माम्
पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति ।
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः ॥२६॥

तिथी के अनुसार पितामह मरण दिन ५८ वर्ष पूर्ण.
आज सुबः शौचादि करके भो. यहां करके. शिव-
जी के साथ अच्छावल तक घोड़े पर वहां से
अनन्तनाग 'टांगे से ≡) दिये. पैसे शिवजी ने
दिये थे =) और भी शिवजी ने दिये थे.
शिवजी लौट कर सोफ गया. अनन्तनाग
से मटन तक पैदल ४॥ मील आया.
रात भो. तथा निवास पं. नन्दलाल स्वार के
घर.

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत् ।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम् ।२७।
शुभाशुभफलैरेवं मोक्ष्यसे कर्मबन्धनैः ।
संन्यासयोगयुक्तात्मा विमुक्तो मामुपैष्यसि।२८।

आषाढ़ शुक्ल १५ रवि] १७ जुलाई [बं० श्रावण १

(व्यास-पूजन)

आज सुबः श्रीभाडेकर के स्नान लम्बोदरी से किया. भो. दोनो समय तथा निवास पं. नन्दलाल के घर. पं. जीया लाल और पं. प्रेमनाथ मिले थे. आज श्रीनाथ) नन्दलाल का भागिनेय आया था. यह अब बहुत ही प्रेम करने लगा है.

समोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः ।
ये भजन्ति तु मां भक्त्या मयि ते तेषु चाप्यहम् २६
अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक् ।
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः ।३०।

आज सुबः शौचादि करके दोनो समय भो. तथा रात्री निवास 'श्री नाथ' के पर. साथ नन्दलालजी भी थे. 'सीपाला 5' और 'श्री नाथ' को साथ लेकर 'हुए मरा' तक घूमने गये थे.

क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति
कौन्तेय प्रति जानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति ॥३१॥
मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः।

आज सुब: १ पै. पाद किए ११ म को 'हरगोपाल' के
पास भो. १ कि पा. सुब: भो. नहीं कि पा कारण क. छस
पा. पा नहीं. रात्री निवास नन्दलाल के घर.
आज रात को बहुत उदर पीडा हुई.

पचा नहीं

स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम्
किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्या भक्ता राजर्षयस्तथा।
अनित्यमसुखं लोकमिमं प्राप्य भजस्व माम्॥३३॥
मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।

आज दोनों समय भी तथा निवास नन्दलाल के घर
आज दक्षिणी महाराष्ट्र ब्राह्मण म. [illegible]
के साथ परिचय हुआ. ये भी नन्दलाल जी
के पास ही ठहरे. भोजन भी यहीं हुआ.
इनको पहले केशकाकलणा ईन' के घर देखा
था. दूसरी बार यहां. यह बहुत सरल और विद्वा-
न तथा क्रियाशील महात्मा है. बातों से मा-
लूम हुआ कि हठयोग भी इसने किया है.
यह अनूपशहर' के पास आरले तरफ ग-
ङ्गा के तीर पर के गुजराती साधु 'योगानन्द'
का शिष्य है. आज 'भर्गशिखा' देवी का
दर्शन पाहिले ही किया. यहां से बहुत अच्छे
दृश्य देखने में आता है. यह स्थान मन्दिर से
[illegible] आज हुई

ती फिर बीमार हुई. इसी से खिन्न आया.

मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः॥३४॥
ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां
योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे राजविद्याराज-
गुह्ययोगो नाम नवमोऽध्यायः ॥९॥

आज सुब. शौचादि करके भो. नन्दलाल
जीके घर. साथ साधूरामजी भी था.
बाद हम 'बाली' में गये. साथ साधूरामजी भी था.
रात भो. पं. राघवराजदान के घर. निवास था यहां
पर सर्वानन्द के पास. रामजी राघवजद के यहां रहते
था. सर्वानन्द जी [illegible] बहुत आग्रह हम को कर रहे हैं.

ॐ

दशमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

भूय एव महाबाहो शृणु मे परमं वचः ।

श्रावण कृष्ण ५ शुक्र]   २२ जुलाई   [श्रावण ६

आज सुब: शौचादिकरके मो. सुन: का पं. राघव राजदान
के घर करके १२।। बजे चले. साथ रामजी भी था २।।। बजे
पैदल घर से आये रामको टांगे से अनन्तनाग गये.
साथ रामजी भी था. टांगे के पैसे प्रेमनाथ फोतदार
ने =) दिये. अनन्तनाग से उतरन है मोटर कार
में बैठकर रामजी के साथ [illegible] गया. रामजी
को १।=. किराये के लिये दिया. हमारा रात मो. तथा
निवास नारायन मट्टू के घर.

यस्तेऽहं प्रीयमाणाय वक्ष्यामि हितकाम्यया ॥१॥
न मे विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः ।
अहमादिर्हि देवानां महर्षीणां च सर्वशः ॥२॥
यो मामजमनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरम् ।

आज सुबः शौचादि करके एक कूंए पर स्नान भी किया
फिर तारा चन्द के घर भो. कर के उस के साथ रांगेस
मंदिर आया. पैसे उसीने (पं. ताराचन्दने) दिये.
पं. नन्दराम को तद्दार के घर समाचार. यहीं रतने.
तथा निवास. जीयालाल का बाप पं. शिवजी को तार
दार आया है. इन से बहुत बात चीत हुई. इन का
राम जीया जाल को भ्राता का दूर हो गया.

असंमूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥३॥
बुद्धिर्ज्ञानमसंमोहः क्षमा सत्यं दमः शमः ।
सुखं दुःखं भवोऽभावो भयं चाभयमेव च ॥४॥
अहिंसा समता तुष्टिस्तपो दानं यशोऽयशः ।

श्रावण कृष्ण ७ रवि] २४ जुलाई [श्रावण ८

आज सुब. शौचादि करके ~~[illegible]~~
सुब: का भो. पं. माधवप्रसाद [illegible]
फल भो. तथा निवास - प्रियानाथ के यहाँ
[illegible] मिले जो [illegible] अच्छा होता
यहाँ फारेस्ट में हेडक्लर्क हैं. बुद्धिमान और
समझदार हैं. इससे [illegible] हुआ भी.

भवन्ति भावा भूतानां मत्त एव पृथग्विधाः ॥५॥
महर्षयः सप्त पूर्वे चत्वारो मनवस्तथा ।
मद्भावा मानसा जाता येषां लोक इमाः प्रजाः ॥६॥
एतां विभूतिं योगं च मम यो वेत्ति तत्त्वतः ।

श्रावण कृष्ण ७ सोम] २५ जुलाई [श्रावण ६

आज दोनों समय भो. तथा निवास जी भाटिया के घर. इसको निमन्त्रण आया.

सोऽविकम्पेन योगेन युज्यते नात्र संशयः ॥७॥
अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्तते ।
इति मत्वा भजन्ते मां बुधा भावसमन्विताः॥८॥
मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम् ।

आज सुबह श्री भाई करके दो भो समय भो. तथा
निवास जीयालाल के घर. आज शिवजी का रुद्र
का 'भगवाया'. इस ने जीयालाल को इसने सुपुर्द
किया है. मात श्राद्ध दिन. -) एक ब्राह्मण को
आज -) बदाम लेकर 'गौतम नाग' गया था साथ
जीयालाल भोजनदार भी था.

कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च ॥९॥
तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम् ।
ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते ॥१०॥
तेषामेवानुकम्पार्थमहमज्ञानजं तमः ।

तिथीके अनुसार मातृ मरणदिन. २६ वर्ष पूर्ण हुए.
आज सुबः शौचादि करके 'साली' पैदल गया. भो.
दुपः फां० 'काशीनाथ राजदान के घर. रात को भो.
तथा निवास 'पापहरण' पर.

नाशयाम्यात्मभावस्थो ज्ञानदीपेन भास्वता।११।

अर्जुन उवाच

परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवान्।
पुरुषं शाश्वतं दिव्यमादिदेवमजं विभुम् ।१२।

श्रावण कृष्ण १० गुरु] २८ जुलाई [श्रावण १२

आज पुनः शौचादिकरके दोनों समय भो. पं. काशीनाथराजदान के घर. रात्रि निवास 'पापहरणनाग' पर. यहां श्रीनगर धृताबाल के पं. शिवधर से जान पहचान हुई.

आहुस्त्वामृषयः सर्वे देवर्षिर्नारदस्तथा ।
असितो देवलो व्यासः स्वयं चैव ब्रवीषि मे ॥१३॥
सर्वमेतदृतं मन्ये यन्मां वदसि केशव ।
न हि ते भगवन्व्यक्तिं विदुर्देवा न दानवाः ॥१४॥

श्रावण कृष्णा ११ शुक्र] २६ जुलाई [श्रावण १२

आज प्रातः शौचादि करके पं. सोनजूराजदान के घर भो. रात को पं. हरिचरणजू राजदान के घर भो. निवास रात को 'पापहरणनाग' पर.

स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम ।
भूतभावन भूतेश देवदेव जगत्पते ॥१५॥
वक्तुमर्हस्यशेषेण दिव्या ह्यात्मविभूतयः ।
याभिर्विभूतिभिर्लोकानिमांस्त्वं व्याप्य तिष्ठसि

श्रावण कृष्ण १२ शनि] ३० जुलाई [श्रावण १४

आज पुन: शौचादि फरके दोनो समय स्नान. आज
प्रदोष. रात नियमाऽनुसार पारण तथा निवास
'पापहरण नाग' पर. दिन भर मौन.

कथं विद्यामहं योगिंस्त्वां सदा परिचिन्तयन् ।
केषु केषु च भावेषु चिन्त्योऽसि भगवन्मया ।१७।
विस्तरेणात्मनो योगं विभूतिं च जनार्दन ।
भूयः कथय तृप्तिर्हि शृण्वतो नास्ति मेऽमृतम् १८

श्रावण कृष्ण १२ रवि] ३१ जुलाई [श्रावण १५

आज सुबह शौचादि करके काशीनाथ राजदान के
घर भो. करके पैदल 'मंजल' गये. आज जीया-
लाल भी निज से आया था. 'मटन' से लारी से
'अनन्तनाग' गये यहां से लारी से 'अच्छाबल'
गये. लारी किराया काशीनाथ ने दिया।) सवा
री. अच्छाबल से पैदल जाकर 'हांगलगुण्ड'
गये. यहां 'पं. लालराम' के घर गये. यह काशी-
नाथ का मौसा [illegible] है. रात भो. तथा निवास
यहीं.

श्रीभगवानुवाच

हन्त ते कथयिष्यामि दिव्या ह्यात्मविभूतयः ।
प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ नास्त्यन्तो विस्तरस्य मे १९
अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः ।

श्रावण कृष्णा १४ सोम] १ अगस्त सन् १९३२ [श्रा० १६

आज सुबह उठकर ११ मील पैदल कुकरनाग गये
यहां शौचादि किया. फिर 'हांगलगुण्ड' में आये,
पं. तोतारामके घर भो. करके 'खोफ' गये साथ
[illegible] था. ३ [illegible] यहीं थे. फिर 'हांगल
गुण्ड' ११ मील पैदल आये. रात ताबियत बीमार
होगयी इसकारण भो. नहीं किया.

अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च ॥२०॥
आदित्यानामहं विष्णुर्ज्योतिषां रविरंशुमान्।
मरीचिर्मरुतामस्मि नक्षत्राणामहं शशी ॥२१॥
वेदानां सामवेदोऽस्मि देवानामस्मि वासवः।

श्रावण कृष्णा ३० मंगल] २ अगस्त [श्रावण १७

आज सुबह उठकर पं. काशीनाथ राजदान को साथ लेकर पैदल स्नान [illegible] जाकर 'अच्छाबल' आये. शौचादि रास्ते में किया. यहां काशीनाथ के भाता महाशय से पं. रामचन्द्र के घर सुबह का भोजन किया. पं. [illegible] भी यहीं [illegible] से आया उनने भी भोजन यहीं किया. शिवजी टांगे से अनन्तनाग गया. हम भी उसका सामान लेकर दूसरे टांगे में 'अनन्तनाग' गये. किराया काशीनाथ ने दिये [illegible] सवारी. पं. काशीनाथ अनन्तनाग में ही रहा. मैं और शिवजी टांगे से 'मट्टन' गये. किराया [illegible] सवारी शिवजी ने दिया. यहां से (मट्टन से) दो भी [illegible] शिवजी के घर 'नागबल' [illegible] निवास शिवजी के घर. अच्छाबल [illegible] साधु [illegible] कहलाता है. [illegible] है. अच्छाबल है.

इन्द्रियाणां मनश्चास्मि भूतानामस्मि चेतना ।२२।
रुद्राणां शंकरश्चास्मि वित्तेशो यक्षरक्षसाम् ।
वसूनां पावकश्चास्मि मेरुः शिखरिणामहम् ॥२३॥
पुरोधसां च मुख्यं मां विद्धि पार्थ बृहस्पतिम् ।

श्रावण शुक्ल १ बुध] ३ अगस्त [श्रावण १८

आज सुब: शौचादि करके ~~[illegible]~~
~~‘[illegible]’ [illegible] भो. तथा निवास~~.
(लम्बोदरी) में स्नान करके ‘पं. शिवजी सराफ’
के घर भो. करके २ मील पैदल ‘मटन’ आया.
रात भो. तथा निवास जीयालाल फोतदार के घर.

सेनानीनामहं स्कन्दः सरसामस्मि सागरः।२४।
महर्षीणां भृगुरहं गिरामस्म्येकमक्षरम्।
यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि स्थावराणां हिमालयः२५
अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां देवर्षीणां च नारदः।

श्रावण शुक्ल २ गुरु]   ४ अगस्त   [श्रावण १६

आज सुबह शौचादि करके [illegible] जीयालाल को
साथ लेकर 'साकी' के मीर पे हव गया. दोनों
समय भी. [illegible] पं. काशीनाथ राजदान के
घर. निवास 'पापहरण' नागपर साधु सन्तान-
न्द के पास =) सन्तानन्द को देखे. आज सन्तान-
न्द का जन्मदिन था. जीयालाल सुबह ही चला
गया. [illegible]

गन्धर्वाणां चित्ररथः सिद्धानां कपिलो मुनिः।२६।
उच्चैःश्रवसमश्वानां विद्धि माममृतोद्भवम्।
ऐरावतं गजेन्द्राणां नराणां च नराधिपम्।२७।
आयुधानामहं वज्रं धेनूनामस्मि कामधुक्।

आज सुबः मैं भादिनाथ के तेल लगाकर 'पापहरण'
में स्नान किया. दोनो समय भो० 'पं. काशीनाथ
राजदान' के घर. रात निवास 'पापहरण' पर.
'पं. सदाशिव पर' आज श्रीनगर से आये
मुझे मिलने के लिये. रातको हमारे पास ही सोये थे.
पं. माधवराजदान के घर साधु रघुनाथ और
ऋषिदेव के लिये गये थे. ये दोनों साधु काश्मी-
री पण्डित हैं. साधु गोपालनाथ के शिष्य हैं.
[illegible]

प्रजनश्चास्मि कन्दर्पः सर्पाणामस्मि वासुकिः २८
अनन्तश्चास्मि नागानां वरुणो यादसामहम् ।
पितॄणामर्यमा चास्मि यमः संयमतामहम् ॥२६॥
प्रह्लादश्चास्मि दैत्यानां कालः कलयतामहम् ।

श्रावण शुक्ल ४ शनि]   ६ अगस्त   [श्रावण २१

आजसुब: शोभादिकरके सुब: का भो. [illegible]
पं. किशराजकानके घर. [illegible] रात पं. श्री भारा-
नाथनके घर. निवास पापहरणीपर.
सायंकाल भी हमारे पास सो मेंगे.

मृगाणां च मृगेन्द्रोऽहं वैनतेयश्च पक्षिणाम् ॥३०॥
पवनः पवतामस्मि रामः शस्त्रभृतामहम् ।
झषाणां मकरश्चास्मि स्रोतसामस्मि जाह्नवी॥३१॥
सर्गाणामादिरन्तश्च मध्यं चैवाहमर्जुन ।

(नागपञ्चमी)

आज सुबह: शौच स्नानादि करके दोनों समय
मो. पं. श्रीधर राजदान के पास. दातानि वास
'पापहरण' पर. सत्संग भी साथ में.

अध्यात्मविद्या विद्यानां वादः प्रवदतामहम् ।३२।
अक्षराणामकारोऽस्मि द्वन्द्वः सामासिकस्य च ।
अहमेवाक्षयः कालो धाताहं विश्वतोमुखः ॥३३॥
मृत्युः सर्वहरश्चाहमुद्भवश्च भविष्यताम् ।

श्रावण शुक्ल ७ सोम] ८ अगस्त [श्रावण २३

आज सुबह शौचादि करके पं. [illegible] राजदान के घर. साथ पं. सतलालजी घर भी थे. भो. किया. शाम को पं. श्रीधर जू के घर भो. [illegible] रात निवास 'नामहरण' पर.

कीर्तिः श्रीर्वाक्च नारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा
बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम् ।
मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः ॥३५॥
द्यूतं छलयतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् ।

आज सुबह शौचादि करके दोनों समय भो. पं. श्रीधरराज-
दान के घर, निवास 'पापहरण नाग' पर.
आज 'ललितासहस्रनाम' पाठ किया.

जयोऽस्मि व्यवसायोऽस्मि सत्त्वं सत्त्ववतामहम्
वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि पाण्डवानां धनंजयः।
मुनीनामप्यहं व्यासः कवीनामुशना कविः ॥३७॥
दण्डो दमयतामस्मि नीतिरस्मि जिगीषताम्।

आज सुबह शौचादिकर के श्री पं. सोनेन्द्र राजदान के घर क्रिया. फिर १२ बजे 'पापहरण' पर बैठे ही थे कि पं. टीकालाल खजांची आये इनके साथ बातचीत हुई और 'अमरनाथ' दर्शन को जाना निश्चित हुआ. और चलपडे घोडे पर 'एेशमुकाम' पहुंचे रात श्री. पं. टीकालाल के पास निवास एक 'टेन्ट' = पटकुटी में. यहां पं. हरभट्टशास्त्री गुण्डअहलमर श्रीनगर काश्मीर' आये थे. इन के साथ परिचय हुआ. थोडी दूर हम इन के साथ घूमने भी गये थे. यहां एक यू. पी. के ब्रह्मचारी से संस्कृत में फटकारा फटकारी भी हुई.

[illegible] काशी अन्नपूर्णा मन्दिर में मैंने देखा है.

मौनं चैवास्मि गुह्यानां ज्ञानं ज्ञानवतामहम् ॥३८॥
यच्चापि सर्वभूतानां बीजं तदहमर्जुन ।
न तदस्ति विना यत्स्यान्मया भूतं चराचरम् ३९
नान्तोऽस्ति मम दिव्यानां विभूतीनां परंतप ।

आज सुब: शौचादि करके सुब: टीकाडाल के पास भो. करके घोडे पर बैठकर ८ मील जाकर ठहरे. साथ 'पं. हरभट्टशास्त्री थे. यहां से फिर दो मील पर थोडे देर ठहर कर पडाव पर पहुंचे. यह ज्ञानबाजार से यह ११ मील है. रात भो. तथा निवास यहीं. यहां इन जगहों का सौन्दर्य क्या ही कहना है.

एष तूद्देशतः प्रोक्तो विभूतेर्विस्तरो मया ॥४०॥
यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा ।
तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोंऽशसंभवम् ॥४१॥
अथवा बहुनैतेन किं ज्ञातेन तवार्जुन ।

आज इसी पडाव = 'पहलगांव' पर दोनो साथ भो. पं. रीकाराल के साथ. निवास यहीं एक तम्बू में. बख्शी रूपचन्द से परिचय हुआ

विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत्॥४२॥
ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां
योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे विभूति-
योगो नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

श्रावण शुक्ल १२ शनि] १३ अगस्त [श्रावण २८

आज प्रदोष दिनभर मौन रातको ४ दाने
चावल और आध सेर दूध थोडी कि भाग्निशपर
किया. रातको निवास पं. टीकाराम के टेन्ट मे.
आज पहलगांवसे पैदल ७ मील 'चन्दनवाडी'
गया था. 'चन्दनवाडी' यह जगह ९॥ हजार
फीट ऊंचाई पर है. जंगल कायरू बुधल देव-
दार आदि वृक्षों का है. त्रिकोणा कार जगह
है दो नदियों का संगम है. तीनो तरफ पहाड
है रवा से ऊंचे है.

श्रावण शुक्ल १२ रवि] १४ अगस्त [श्रावण २९

आज सुबह: शौचादि करके भोजन करके घोडे से वावजन पहुंचा. रास्ते में थानेदार ने जरा तकलीफ दी. रास्ता बडा चढाई का है. आज भी पं. हरभट शास्त्री से बहुत बातचीत हुई.

भो. टीकालाल के पास. निवास. बख्शी पं. सुखराज नाजर धर्मार्थ महकमा काश्मीर स्टेट के टैन्ट में. यह जगह १४ हजार फीट ऊंचाई पर है. ठंडी बहुत है. धूप पडी थी. थोडी वर्षा भी हुई. जगह बडी सुन्दर है. यहां 'सुशमनाग' एक झील है. इस को देखकर 'कादम्बरी' के 'अच्छोद सरोवर' की स्मृती होती है.

यत्त्वयोक्तं वचस्तेन मोहोऽयं विगतो मम ॥१॥
भवाप्ययौ हि भूतानां श्रुतौ विस्तरशो मया।
त्वत्तः कमलपत्राक्ष माहात्म्यमपि चाव्ययम्॥२॥
एवमेतद्यथात्थ त्वमात्मानं परमेश्वर।

आज सुब: हरभट शास्त्री के आग्रह से चाय पीया. रोटी मक्की की आधी खाकर घोडे से ८ मील 'पंचतरनी' गये. साथ हरभट शास्त्री भी थे. रात भो. तथा निवास ठीकादार के पास. इस जगह मैदान का फी लम्बा चौडा है. चारों तरफ बर्फानी ऊंचे पहाड है. बीच में बरफ के पानी के दर्या चलते हैं. १३ हजार फीट ऊंचाई पर है यह जगह है. धूप खूब पडी थी.

द्रष्टुमिच्छामि ते रूपमैश्वरं पुरुषोत्तम ॥३॥
मन्यसे यदि तच्छक्यं मया द्रष्टुमिति प्रभो ।
योगेश्वर ततो मे त्वं दर्शयात्मानमव्ययम् ॥४॥
श्रीभगवानुवाच
पश्य मे पार्थ रूपाणि शतशोऽथ सहस्रशः ।

श्रावण शुक्ल १५ मंगल] १६ अगस्त [श्रावण ३१

(श्रावणीकर्म, रक्षाबन्धनम्)

आज एक समय भो. तथा निवास पं. टीकाला-
लके पास. आज १रु.।) दक्षिणा ब्राह्मणादिको
को दिया. आज दूसरी बार अमरनाथ दर्शन
किया. आज ८ मील पैदल सफर की थी.
धूप बहुत पडी थी. पहले सन् १९२९ में अमर-
नाथ दर्शन किया था. अमरगङ्गा में स्ना-
न किया. आज भी हट भट शास्त्री से खूब
परिचय हुआ.

नानाविधानि दिव्यानि नानावर्णाकृतीनि च ॥५॥
पश्यादित्यान्वसून्रुद्रानश्विनौ मरुतस्तथा ।
बहून्यदृष्टपूर्वाणि पश्याश्चर्याणि भारत ॥६॥
इहैकस्थं जगत्कृत्स्नं पश्याद्य सचराचरम् ।

आज सुब: शौचादिकर के दो परामठे खाये. फिर घोडेसे 'ओजेबल' १२ मील आये. वहां जरा ठहरकर फिर घोडेसे ४ मील 'चन्दनवाडी' आये. साथ हरभट शास्त्री थे. रातभो. पं. टीकालाल के पास. निवास भी मुखराज के टेन्ट में आज हरभट शास्त्रीसे बहुत बातें हुई.

मम देहे गुडाकेश यच्चान्यद्द्रष्टुमिच्छसि ॥७॥
न तु मां शक्यसे द्रष्टुमनेनैव स्वचक्षुषा ।
दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम् ॥८॥
संजय उवाच
एवमुक्त्वा ततो राजन्महायोगेश्वरो हरिः ।

आज सुबः शौचादि करके। बिना खाये घोड़े से ८ मील 'पहल गांव' में आये यहां स्नान किया. फिर यहां हरभट शास्त्री के साथ उनके लड़के 'पं. मधुसूदन' कम्पाउन्डर के डेरे गये वहीं भोजन किया, यहां 'काशीनाथ राजदान साली' तथा 'अरवलाल राजदान' साली और उसका मामा यहां आये थे. उनके आग्रह से रात भो. उनके डेरे = डाक खाने में किया. रात निवास पं. टीकालाल के खेमे में आज थोड़ा घूमने भी गया था. यहां के दृश्य बड़े ही सुन्दर है.

दर्शयामास पार्थाय परमं रूपमैश्वरम् ॥ ९ ॥
अनेकवक्त्रनयनमनेकाद्भुतदर्शनम् ।
अनेकदिव्याभरणं दिव्यानेकोद्यतायुधम् ॥१०॥
दिव्यमाल्याम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनम् ।

आज सुबः शौचादि करके स्नान सोन मार्ग के
तरफसे आनेवाली नदी में. भो. टीकालालके
डेंगर में. फिर यहांसे लारी से 'सिलीगांव' में
आये. टीकाबाप आ. दे धर्मार्थि के अफ्सरों की
डेरा यहीं हुआ. यहां थोडी लेट लगा कर
मक्की भुट्टा खाकर एक इसी गांव के लडके के
साथ 'सालीग्राम' गया. पैदल ३ मील रात भो.
गोविन्दजू राजदान के घर. निवास
जापहरण पर साधु सर्वानन्द के पास.

सर्वाश्चर्यमयं देवमनन्तं विश्वतोमुखम् ॥११॥
दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता ।
यदि भाः सदृशी सा स्याद्भासस्तस्य महात्मनः ॥
तत्रैकस्थं जगत्कृत्स्नं प्रविभक्तमनेकधा ।

आज सुबः शौचादि करके पं. टिकलाल राजदान के घर भो. किया. फिर पं. टिकलाल खजान्ची आये इनके साथ घोडे पर २ मील खीर तक, वहां से टांगे से अनन्तनाग तक, वहां से १ मील पैदल खन्नबल तक, वहां से पं. टिकलाल के साथ लोरी से श्रीनगर. रात भो. तथा निवास पं. टिकलाल के घर..

अपश्यद्देवदेवस्य शरीरे पाण्डवस्तदा ॥१३॥
ततः स विस्मयाविष्टो हृष्टरोमा धनंजयः ।
प्रणम्य शिरसा देवं कृताञ्जलिरभाषत ॥१४॥

अर्जुन उवाच

पश्यामि देवांस्तव देव देहे सर्वांस्तथा भूतविशेष-

भाद्रपद कृष्ण ५ रवि] २१ अगस्त [भाद्रपद ५

आज सुब: शौचादि करके वितस्ता में स्नान किया. दोनो समय भो. तथा निवास पं. टीका लाल के घर.

संघान्। ब्रह्माणमीशं कमलासनस्थमृषींश्च सर्वा-
नुरगांश्च दिव्यान ॥१५॥ अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रं
पश्यामि त्वां सर्वतोऽनन्तरूपम्। नान्तं न मध्यं न
पुनस्तवादिं पश्यामि विश्वेश्वर विश्वरूप ॥१६॥

सुब: शौचादि कर के वितस्ता में स्नान दोनो
समय भो. तथा निवास पं. टीकालाल के घर.

किरीटिनं गदिनं चक्रिणं च तेजोराशिं सर्वतो दीप्तिमन्तम्। पश्यामि त्वां दुर्निरीक्ष्यं समन्ताद्दीप्तानलार्कद्युतिमप्रमेयम् ॥१७॥ त्वमक्षरं परमं वेदितव्यं त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्। त्वमव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता सनातनस्त्वं

भाद्रपद कृष्णा ७ मंगल] २३ अगस्त [भाद्रपद ७

सुब: शौचादि करके दोनो समय भो. तथा निवास पं. श्रीकान्तके घर. आज कुछ लोगोंकी जन्माष्टमी हुई. आज श्रीनाथ 'आया था. आज हमारी जन्माष्टमी भी थी पर हमने व्रत नहीं रखा. आज पं. सतलाल घर आये थे.

पुरुषो मतो मे ॥१८॥ अनादिमध्यान्तमनन्तवीर्य-
मनन्तबाहुं शशिसूर्यनेत्रम् । पश्यामि त्वां दीप्त-
हुताशवक्त्रं स्वतेजसा विश्वमिदं तपन्तम् ॥१९॥
द्यावापृथिव्योरिदमन्तरं हि व्याप्तं त्वयैकेन दिशश्च

(जन्माष्टमीव्रतम्)

आज दोनो समय भो. तथा निवास पं. टीका-
लाल के घर. आज टीका लालजी की जन्मा-
ष्टमी थी. मैने व्रत न ही रखा. "श्रीनाथ
आया था.

सर्वाः। दृष्ट्वाद्भुतं रूपमुग्रं तवेदं लोकत्रयं प्रव्यथितं महात्मन् ।२०। अमी हि त्वां सुरसंघा विशन्ति केचिद्भीताः प्राञ्जलयो गृणन्ति। स्वस्तीत्युक्त्वा महर्षिसिद्धसंघाः स्तुवन्ति त्वां स्तुतिभिः

आज दोनो समय भो. तथा निवास पं. टिकलाल के घर.

पुष्कलाभिः २१ रुद्रादित्या वसवो ये च साध्या विश्वेऽश्विनौ मरुतश्चोष्मपाश्च । गन्धर्वयक्षासुर-सिद्धसंघा वीक्षन्ते त्वां विस्मिताश्चैव सर्वे २२ रूपं महत्ते बहुवक्त्रनेत्रं महाबाहो बहुबाहूरुपादम् ।

भाद्रपद कृष्ण १० शुक्र] २६ अगस्त [भाद्रपद १०

आजदो जो समय भो. तथा निवास पं. टीकालाल के घर, आज भगवती का 'प्रथम' प्रसाद लिया था. पं. टीकालाल ने अर्चना किया था. आज 'श्रीनाथ' को सिद्धान्त कौमुदी पढाना प्रारम्भ किया,

बहूदरं बहुदंष्ट्राकरालं दृष्ट्वा लोकाः प्रव्यथितास्तथाहम् ॥ नभःस्पृशं दीप्तमनेकवर्णं व्यात्ताननं दीप्तविशालनेत्रम्। दृष्ट्वा हि त्वां प्रव्यथितान्तरात्मा धृतिं न विन्दामि शमं च विष्णो ॥२४॥

आज सुबः शौचादि दूधगङ्गापर. दोनो समय
भो. तथा निवास पं. टीकालाल के घर.
आज इनके साथ इनके आफिस में गया था.
वहां बक्षी सुखराज तथा कोतवाल दोनो
मिले थे. 'श्रीनाथ' आया था. शाम को
घूमने गया था.

दंष्ट्राकरालानि च ते मुखानि दृष्ट्वैव कालानल-
सन्निभानि। दिशो न जाने न लभे च शर्म प्रसीद
देवेश जगन्निवास।२५। अमी च त्वां धृतराष्ट्रस्य
पुत्राः सर्वे सहैवावनिपालसंघैः। भीष्मो द्रोणः

भाद्रपद कृष्ण १२ रवि] २८ अगस्त [भाद्रपद १२

आज दोनों समय भो. तथा निवास
पं. टीकालालके घर. आज पं. जीया-
लाल फोतदार को बारामूलेमें पं. दीना-
नाथ कौलके हाथ चिट्ठी भेजी.
श्रीनाथ आपा भा. कौमुदी पढ़ाई.

सूतपुत्रस्तथासौ सहास्मदीयैरपि योधमुख्यैः२६
वक्त्राणि ते त्वरमाणा विशन्ति दंष्ट्रा-
करालानि भयानकानि। केचिद्विलग्ना दशना-
न्तरेषु संदृश्यन्ते चूर्णितैरुत्तमाङ्गैः ॥२७॥ यथा

आज प्रदोष दिन भर मौन रात निय-
माऽनुसार पारण. निवास पं. टिकलाल
के घर. आज हरी पर्वत दर्शन गया था।

नदीनां बहवोऽम्बुवेगाःसमुद्रमेवाभिमुखाद्रवन्ति तथा तवामी नरलोकवीरा विशन्ति वक्त्राण्य-भिविज्वलन्ति ॥२८॥ यथा प्रदीप्तं ज्वलनं पतङ्गा विशन्ति नाशाय समृद्धवेगाः। तथैव नाशाय

भाद्रपद कृष्ण १४ मंगल] ३० अगस्त [भाद्रपद १४

आज भो. दो जो समय पं. टिकलाल के घर था निवास. श्रीनाथ आया था उसको कौमुदी थोडी पढाई.

आज एक चिट्ठी साधु सर्वानन्द सा को भेजी. ~~[illegible]~~

विशन्ति लोकास्तवापि वक्त्राणि समृद्धवेगाः २९
लेलिह्यसे ग्रसमानः समन्ताल्लोकान्समग्रान्वदनै-
र्ज्वलद्भिः। तेजोभिरापूर्य जगत्समग्रं भासस्तवोग्राः
प्रतपन्ति विष्णो ३० आख्याहि मे को भवानुग्ररूपो

(कुशाग्रहिणी)

आज सुबः दूधगङ्गा पर शौचादिकर के वसन्त बाग पर वितस्ता में स्नान. दोनो समय भो. तथा निवास पं. टिकलाल के घर. श्रीनाथ आया था.

नमोऽस्तु ते देववर प्रसीद । विज्ञातुमिच्छामि भवन्तमाद्यं न हि प्रजानामि तव प्रवृत्तिम् ॥३१॥

श्रीभगवानुवाच

कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो लोकान्समा-

दोनो समय भो. तथा निवास पं. पी कालाल
जीके घर. आज डा टी बन गाई.
श्रीनाथ आया था. आज पं. सतलाल पर
के घर गया था. वहां दूध पीया.
-) गाई.

हर्तुमिह प्रवृत्तः । ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः ॥ तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व जित्वा शत्रून्भुङ्क्ष्व राज्यं समृद्धम् । मयैवैते निहताः पूर्वमेव निमित्तमात्रं

आज सुबः भो. पं. टीकालालके घर.
दोनो समय. आज माधवानन्द स्वामी
काश्मीरी से मुलाकात हुई थी.
श्रीनाथ आया था.

भव सव्यसाचिन् ॥३३॥ द्रोणं च भीष्मं च जयद्रथं च कर्णं तथान्यानपि योधवीरान्। मया हतांस्त्वं जहि मा व्यथिष्ठा युध्यस्व जेतासि रणे सपत्नान् ॥३४॥

आज दोनों समय भो. तथा निवास पं. टीकालालके घर आज इनके दफ्तर में और प्रेस में गया था.

संजय उवाच

एतच्छ्रुत्वा वचनं केशवस्य कृताञ्जलिर्वेपमानः
किरीटी । नमस्कृत्वा भूय एवाह कृष्णं सगद्गदं
भीतभीतः प्रणम्य ॥ ३५ ॥

(गणेशचतुर्थी)

आज दोनो समय भो० तथा निवास
पं० टीकालालके घर. आज श्रीनाथ
आया था. आज एक चिट्ठी बारामूला
जीयालाल फोतदारको भेजी पं० नाथजी
गाडूके हाथ

अर्जुन उवाच

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च। रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः।३६। कस्माच्च ते न नमेरन्महात्मन्

भाद्रपद शुक्ल ५ सोम] ५ सितम्बर [भाद्रपद २०

(ऋषिपूजनम्)

आज दोनो समय भो. तथा निवास पं. शिकालाल जी के घर. श्रीनाथ आया था.
आज सतलाल घर भी आया था.

गरीयसे ब्रह्मणोऽप्यादिकर्त्रे। अनन्त देवेश जगन्नि-
वास त्वमक्षरं सदसत्तत्परं यत् ॥३७॥ त्वमादि-
देवः पुरुषः पुराणस्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्
वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम त्वया ततं विश्वमनन्त-

आज दोनों समय भो. तथा निवास पं. दी.
का लालजी के घर.

रूप ॥३८॥ वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशाङ्कः प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च। नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते ॥३९॥ नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व।

आज दो नो समय भो. तथा निवास
पं. टीकालालजी के घर

अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं सर्वं समाप्नोषि ततो-
ऽसि सर्वः ॥४०॥ सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं हे कृष्ण
हे यादव हे सखेति। अजानता महिमानं तवेदं मया
प्रमादात्प्रणयेन वापि ॥४१॥ यच्चावहासार्थमसत्-

आज स्नान नही किया. आज भो. नही
किया. क्योंकि जुल्लाब लिया था. श्रीनाथ आया था.
आज बारामूला से पं. जीयालाल पोतदार आया था.
इसके आग्रह से इसके साथ 'बारामूला' गया.
आज देर होने कारण 'लारी मोटर' कुछ नही मिला.
फिर 'पत्तन के आगे १ मील चलकर एक टांगा किया
पट्टन तक आये. किराया ।=) जीयालाल ने दिये.
टांगे में एक सिख था. पट्टन में आगे का टांगा नही
मिला. फिर हम तीनों यहां से ११ मील 'पलहालन'
गये यहां पहले एक दूकान पर ५ मिनिट बैठकर एक
पण्डित के घर गये रात भर यहां रहे. सिख ने बतलाया
मकान मालिक सभ्य है. हमको भी खाने के लिये आग्रह
किया था. हम १० बजे रात 'पलहालन' पहुंचे थे.

कृतोऽसि विहारशय्यासनभोजनेषु । एकोऽथवा-
प्यच्युततत्समक्षं तत्क्षामये त्वामहमप्रमेयम् ४२
पितासि लोकस्य चराचरस्य त्वमस्य पूज्यश्च गुरु-
र्गरीयान् । न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो

आज दोनों समय भो. तथा निवास पं. शिवजी फो-
तदार के [illegible] पास. सुब: जल्दी यहां से हम तीनों चले.
कम जोरी और भूख लगने के कारण चला नहीं जाता था.
रास्ते में पीनाभी लेके लिये एक बंगाली में बैठे थे.
दूध पीया पीने पर मालूम हुआ कि यह पकाया कच्चा
का था. मुसलमानिन बहुत बढ़िया भी १ सेर =)॥
का पी था पैसे जीया जाने के थे. फिर ।। 'रंप' कल
रवाये पैसे लेना भाना के थे. फिर 'धुरा' गांव से आगे
घोड़े आये 'खिरब' यहां से 'सिंगपुर' चला गया
हम संग्राम आये. यहां से १) देकर 'लारी' से 'बाराम-
ला' आये. पैसे लीया जाने के थे. पैदल हम ८ मील
चले. यहां (बारामूला) में जीयालाल कावाय फारे-
स्ट डिपार्टमेन्ट में हेड क्लार्क हैं. इसका नाम शिव
जी फोतदार है. इसके पास ठहरे. यहां के
किसी और मुसलमान के यहां एक काश्मीरी महा-
महात्मा पं. श्रीधर भी ठहरे हैं.

लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव ॥४३॥ तस्मात्प्रणम्य
प्रणिधाय कायं प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम् ।
पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः प्रियः प्रियायार्हसि
देव सोढुम् ४४ अदृष्टपूर्वं हृषितोऽस्मि दृष्ट्वा भयेन

भाद्रपद शुक्ल ११ शनि] १० सितम्बर [भाद्रपद २५

आज दो तो हमप भो. तथा निवास पं. शिवजीके
पास. स्नान वितस्ता में. आज श्रीधर काक
के दर्शन किये थे अच्छे हैं.

च प्रव्यथितं मनो मे। तदेव मे दर्शय देव रूपं प्रसीद देवेश जगन्निवास ॥४५॥ किरीटिनं गदिनं चक्रहस्तमिच्छामि त्वां द्रष्टुमहं तथैव। तेनैव रूपेण चतुर्भुजेन सहस्रबाहो भव विश्वमूर्ते ४६

भाद्रपद शुक्ल १२ रवि] ११ सितम्बर [भाद्रपद २६

(वामन-जयन्ती)

आज दोनो समय भो. तथा निवास पं. शिवजी
के पास. आज पं. नाथजी गाड़ के डेरे गया था।
आज भी श्रीधर का क के दर्शन किये थे.

श्रीभगवानुवाच

मया प्रसन्नेन तवार्जुनेदं रूपं परं दर्शितमात्मयोगात्। तेजोमयं विश्वमनन्तमाद्यं यन्मे त्वदन्येन न दृष्टपूर्वम् ॥४७॥ न वेदयज्ञाध्ययनैर्न दानैर्न च

आज प्रदोष. दिनभर मौन. रात को नियमानुसार पारण. रात निवास पं. शिवजी के पास. आज पं. बलकाक धर' वजीर बारामूला के डेरे पं. टिकलाल खजांची आये थे उन से मिलने गया था.

क्रियाभिर्न तपोभिरुग्रैः । एवंरूपः शक्य अहं नृलोके द्रष्टुं त्वदन्येन कुरुप्रवीर ॥४८॥ मा ते व्यथा मा च विमूढभावो दृष्ट्वा रूपं घोरमीदृङ्ममेदम् । व्यपेतभीः प्रीतमनाः पुनस्त्वं तदेव मे रूपमिदं प्रपश्य ॥४९॥

६ (अनन्तचतुर्दशी)

आज दोनों समय भोजन तथा निवास पं. शिव जी के पास. आज कोटी तीर्थ गये थे. वहां से नाव से देवीबल आये. नाव) ॥ दिये साथ जीयालाल और एक यहां का ठेकेदार श्रीकण्ठ था.

संजय उवाच

इत्यर्जुनं वासुदेवस्तथोक्त्वा स्वकं रूपं दर्शयामास भूयः। आश्वासयामास च भीतमेनं भूत्वा पुनः सौम्यवपुर्महात्मा ॥५०॥

भाद्रपद शुक्ल १५ बुध] १४ सितम्बर [भाद्रपद २८

(चन्द्रग्रहणम्, श्राद्धारम्भः)

आज सुबः शौचादि तथा भो. करके लारी से 'श्रीनगर गया. लारी का किराया पं. जीयालाल फोतदार ने दिया था. पं. टीकालाल खजांची के घर ठहरा. आज रात चन्द्रग्रहण था. रात को स्नान नहीं किया. सिर्फ बैठा था.

अर्जुन उवाच

दृष्ट्वेदं मानुषं रूपं तव सौम्यं जनार्दन ।
इदानीमस्मि संवृत्तः सचेताः प्रकृतिं गतः ॥५१॥

श्रीभगवानुवाच

सुदुर्दर्शमिदं रूपं दृष्टवानसि यन्मम ।

आश्विन कृष्णा १ गुरु सं० १९८९] १५ सितम्बर [भाद्र० ३०

आज सुबः शौचादि करके स्नान किया.
आ नाई डाढी हजामत. दोनों समय भो.
तथा निवास टीकालाल जी के घर.
आज पं. सतलाल धर के घर गये थे. वे मिले
नहीं.

देवा अप्यस्य रूपस्य नित्यं दर्शनकाङ्क्षिणः ॥५२॥
नाहं वेदैर्न तपसा न दानेन न चेज्यया ।
शक्य एवंविधो द्रष्टुं दृष्टवानसि मां यथा ॥५३॥
भक्त्या त्वनन्यया शक्य अहमेवंविधोऽर्जुन ।
ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन प्रवेष्टुं च परंतप ॥५४॥

आज दोनो समय भो. तथा निवास टीका-
राम के घर. शाम को घूमने गये थे. साथ
श्रीनाथ और भास्कर थे.
आज 'कल्याणवृष्टिस्तोत्र' की नकल टीकारा-
मजी को लिख दी.

मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः सङ्गवर्जितः ।
निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव ॥५५॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे विश्वरूपदर्शनयोगो नामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

आज दोनो समय भो. तथा निवास पं. टीकालाल के घर. आज शामको गोटिपड्डर धर्मशालामें गया था वहां काश्मीरी सन्यासी माधवानन्द से बहस हुई. विधवा विवाहके ऊपर.. इन दिनों यहां विधवा विवाहके अनुकूल बहुतसे होगये हैं. सन्यासीभी यह यही करता है. हमने इनको बहुत समझाया है. अब आगे देखना चाहिये.

ॐ

द्वादशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

एवं सततयुक्ता ये भक्तास्त्वां पर्युपासते ।
ये चाप्यक्षरमव्यक्तं तेषां के योगवित्तमाः ॥१॥

आज दोनो समय भो. तथा निवास पं. टीकालाल के घर, आज पं. सतलाल घर आये थे. इनके साथ एक पण्डित के घर गये थे इनका नाम है. इनका बाप श्रीधर गाडरू है था. पं. हरभट्ट शास्त्री इनसे ही शैवी पढे हैं. इस पण्डित ने कुछ हस्तलिखित पुस्तकें दिखाई. यह तान्त्रिक है. अच्छा साम्प्रदायिक है. साथ 'श्रीनाथ' भी था.

आज 'षोडशी महाषोढान्यास' पुस्तक पं. टीकालाल को लिखदी

श्रीभगवानुवाच

मय्यावेश्य मनो ये मां नित्ययुक्ता उपासते ।
श्रद्धया परयोपेतास्ते मे युक्ततमा मताः ॥२॥
ये त्वक्षरमनिर्देश्यमव्यक्तं पर्युपासते ।
सर्वत्रगमचिन्त्यं च कूटस्थमचलं ध्रुवम् ॥३॥
संनियम्येन्द्रियग्रामं सर्वत्र समबुद्धयः ।

आश्विन कृष्ण ४ सोम] १६ सितम्बर [आश्विन ३

आज दोनों समय भो. तथा निवास पं. टीकाराम के घर. आज मेरा मन न जाने क्यों सहसा विषण्ण हो गया था. और काश्मीर छोड़ने की इच्छा हुई थी.

ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रताः ॥४॥
क्लेशोऽधिकतरस्तेषामव्यक्तासक्तचेतसाम् ।
अव्यक्ता हि गतिर्दुःखं देहवद्भिरवाप्यते ॥५॥
ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि संन्यस्य मत्पराः ।
अनन्येनैव योगेन मां ध्यायन्त उपासते ॥६॥

आश्विन कृष्ण ५ मंगल] २० सितम्बर [आश्विन ४

आज दोनो समय भो. तथा निवास पं. टी कालाल
के घर. आज पं. सतलालके पर नवा कदम में
गया था वे मिले नहीं. चित्त उदास ही था.

तेषामहं समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात् ।
भवामि नचिरात्पार्थ मय्यावेशितचेतसाम् ॥७॥
मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धिं निवेशय ।
निवसिष्यसि मय्येव अत ऊर्ध्वं न संशयः ॥८॥
अथ चित्तं समाधातुं न शक्नोषि मयि स्थिरम् ।

आश्विन कृष्ण ६ बुध] २१ सितम्बर [आश्विन ५

आज दोनों समय भो० तथा निवास पं० टीकाराम के घर. आज तो बहुत ज्यादः उदासी मुझे मालूम होती थी पता नहीं क्यों

अभ्यासयोगेन ततो मामिच्छाप्तुं धनंजय ॥९॥
अभ्यासेऽप्यसमर्थोऽसि मत्कर्मपरमो भव ।
मदर्थमपि कर्माणि कुर्वन्सिद्धिमवाप्स्यसि॥१०॥
अथैतदप्यशक्तोऽसि कर्तुं मद्योगमाश्रितः ।
सर्वकर्मफलत्यागं ततः कुरु यतात्मवान् ॥११॥

आज सुब: का भोजनादि कर के बैठा था
पर चित्त सहसा घबड़ा जाता था. थोडी देर में
मालूम हुआ कि सफाई के हफ्ते का आखिरी
दिन है और जुलूस निकलेगी. थोडी देर में बाहि-
र हबाकदल गया तो देखा बडी भारी भीड कश्मीरी
पण्डितों की इधर से उधर आ रही है. फिर सुना
कि कुछ लडाई हिन्दु मुसलमानों कि हुई है और प्रा-
रम्भ हिन्दुओं की तरफ से हुआ है. फिर मैं डेरे आया
मुझे श्रीनाथ भी वहां (हबाकदल में) मिला. यह और
मैं कुछ देर डेरे बैठ कर थोडा शोर सुन कर उठ बाहर
गये जाते समय पं. टिक्कू लाल दफ्तर से आ चुके थे.
उन्होंने बाहर जाने के लिये रोका भी था. पर हम उन-
की आंख बचा कर निकल गये [illegible]
[illegible] से मार खाया इसका बहाना आत्मग्लानि लिखा है.

श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते।
ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम्
अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च।
निर्ममो निरहंकारः समदुःखसुखः क्षमी॥१३॥
संतुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चयः।

आजदोनोसमयभो. बख्शीरूपचन्दकेपासतथा
निवासभीवहीं. येमुह्याल ब्राह्मणहैं. आजाईनरात
झगड़ा शान्तहोनेकेलिये परमात्माकोप्रार्थनाकरताथा
तफीतयीभयानकखबरें सुननेमेंआतीथीं.
जरवमीहास्पिटलमेंजारहेथे. येलड़ाईकश्मीरी
हिन्दुऔरमुसल्मानोंमेंहीथी इसलियेमीराकदलमें
कुछनहींहुआ. परभयबहुतथा. बख्शीरूपचन्दने
एकधोतीहमेंदी. हमारीधोतीकामुसलमानोंने
फाड़दीथी.

मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः ॥१४॥
यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः ।
हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तो यः स च मे प्रियः ॥१५॥
अनपेक्षः शुचिर्दक्ष उदासीनो गतव्यथः ।
सर्वारम्भपरित्यागी यो मद्भक्तः स मे प्रियः ।१६।

आज महाराजा काश्मीर का जन्मदिन था. काश्मीरी
हिन्दु मुस आपस लड़रहे थे. खून हो रहा था.
दोनो समय भो. तथापि वास बख्शी कृष्णचन्द के पास.
आज भी दिनरात प्रभु से प्रार्थना की थी और
विश्वास भी हुआ कि अब लड़ाई शान्त हो जायेगी.

यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति ।
शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः स मे प्रियः १७
समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः।
शीतोष्णसुखदुःखेषु समः सङ्गविवर्जितः ॥१८॥
तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी संतुष्टो येन केनचित् ।

आज भो. एकहीसमयपर पाबश्री मुखराजके पास. आज हिन्दुमसल्मानों का सुलह हो गया.
आज न श्री मुखराजने एक जूता १७.।= का खरीद लिया. हमारा जूता दंगे में चला गया था.

अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान्मे प्रियो नरः ।१९।
ये तु धर्म्यामृतमिदं यथोक्तं पर्युपासते ।
श्रद्दधाना मत्परमा भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः ।२०।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे भक्तियोगो नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

आश्विन कृष्णा ११ सोम] २६ सितम्बर [आश्विन १०

आज भी · बख्शी दीनानाथ के पास . करके सुख-
राज बख्शी के साथ धर्मार्थ के ऑफिस गया यहां
से शाम को पं. टीकालाल के साथ डेरे (उनके घर गया)
रात भी · तथा निवास पं. टीकालाल के घर .
आज झगड़ा शान्त हो गया है कहीं कहीं अभी थोड़ा
थोड़ा है .

ॐ

त्रयोदशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते ।
एतद्यो वेत्ति तं प्राहुः क्षेत्रज्ञ इति तद्विदः ॥१॥

आज श्रीताथ के घर गया था. आज प्रदोष दिनभर मौन. रात नियमाऽनुसार पारण तथा निवास पं. टीकारामके घर.

क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्वक्षेत्रेषु भारत।
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्ज्ञानं यत्तज्ज्ञानं मतं मम ॥२॥
तत्क्षेत्रं यच्च यादृक्च यद्विकारि यतश्च यत्।
स च यो यत्प्रभावश्च तत्समासेन मे शृणु ॥३॥
ऋषिभिर्बहुधा गीतं छन्दोभिर्विविधैः पृथक्।

आश्विन कृष्ण १३ बुध] २८ सितम्बर [आश्विन १२

आज दोनों समय भो. तथा निवास पं. टीकालाल के घर. आज पं. सतलाल घर आये थे. आज श्रीनाथ आया था. आज पं. जीयालाल फोतदार (मटन) आया था. यह रात भर हमारे पास रहा.

ब्रह्मसूत्रपदैश्चैव हेतुमद्भिर्विनिश्चितैः ॥४॥
महाभूतान्यहंकारो बुद्धिरव्यक्तमेव च ।
इन्द्रियाणि दशैकं च पञ्च चेन्द्रियगोचराः ॥५॥
इच्छा द्वेषः सुखं दुःखं संघातश्चेतना धृतिः ।
एतत्क्षेत्रं समासेन सविकारमुदाहृतम् ॥६॥

आश्विन कृष्ण १४ गुरु] २९ सितम्बर [आश्विन १३

तिथीके अनुसार पिता मही मरण दिन ३१ वर्ष पूर्ण
आज शुभ: पं. टीकालालके घर भो. करके रमाटीसे
मर नगया. ।।।) जीयालालने ६पे थे. =) पं. बि-
शन दासने दिये. रात भो. तथा निवास पं. नन्दलाल
स्वार मास्टर of मिशन हाइस्कूल अनन्तनाग
के घर. अनन्तनाग में आज भी बहुत खतरा था
हिन्दुओं ने सब बन्द थी.

अमानित्वमदम्भित्वमहिंसा क्षान्तिरार्जवम् ।
आचार्योपासनं शौचं स्थैर्यमात्मविनिग्रहः ॥७॥
इन्द्रियार्थेषु वैराग्यमनहंकार एव च ।
जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम् ॥८॥
असक्तिरनभिष्वङ्गः पुत्रदारगृहादिषु ।

आश्विन कृष्ण ३० शुक्र] ३० सितम्बर [आश्विन १४

(पितृविसर्जन)

आज सुबह: पं. नन्दलाल ब्यारके घर भो. करके पं. प्रेमनाथ फोतदार को साथ लेकर 'सालीं' गया यहां १ घण्टा में ठहरा. साधु सर्वानन्द यहां से चला गया था है. यह मालूम हुआ फिर यहां से ख्रीर भैदान आये यहां से टांगे से 'मटन' आये वैसे पं. काशीनाथ राजदान ने दिये यह भी साथ था. फिर यहां श्रीनगर आने के लिये 'लारी' देख रहा था इतने में ६ बजे 'सर्वानन्द कौल साधु' आया. यह मेरे लिये श्रीनगर गया था मुझे न पाकर यह फिर मेरे लिये मटन आया. फिर हम दोनों काशीनाथ को साथ लेकर 'सालीं' गये. सौने रात भो. काशीनाथ के घर किया. रात निवास भी काशीनाथ के घर.

नित्यं च समचित्तत्वमिष्टानिष्टोपपत्तिषु ॥९॥
मयि चानन्ययोगेन भक्तिरव्यभिचारिणी ।
विविक्तदेशसेवित्वमरतिर्जनसंसदि ॥१०॥
अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम् ।
एतज्ज्ञानमिति प्रोक्तमज्ञानं यदतोऽन्यथा ॥११॥

आश्विन शुक्ल १ शनि] १ अक्टूबर सन् १९३२ [आ० १५

(नवरात्र्यारम्भ)

आज सुबः 'सानीसे पैदल चलीन महल. यहां से
तांगे से 'अमलनाग' पैसे गोविन्द अ राजदातके साउके
ले देपे. यहां से १ रु. सगारी देकर लारीसे 'श्रीनग-
र' २ बजे पहुंचे रास्तेमें लारीका पीछेका निकल
गया था पर भगवान्‌के दयासे ही लारी गिरने
ही न पायी. नरनी आज आठ बजे खायी. -) नारल
-) केरती. फिर यहां पं. टीकालालजीके
घरमें यहीं डेराकिया साथ मेंतनन्द हीन
साधु' थे. यहां फिर इन्होंने ही सागभात पका-
या हम दोनोंने खाया. स्नान आदि बेत्तसापर.
आनन्दे श्री नवरात्र्यारम्भ -) कुमारीको दिया
रातको दुर्गासप्तशतीका पाठ किया पं. टीकालालजी
के यहां सबने दूध भात पकाया हमने खाया.

ज्ञेयं यत्तत्प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वामृतमश्नुते।
अनादिमत्परं ब्रह्म न सत्तन्नासदुच्यते ॥१२॥
सर्वतःपाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम्।
सर्वतःश्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति ॥१३॥
सर्वेन्द्रियगुणाभासं सर्वेन्द्रियविवर्जितम्।

आज बिल्लापर जाना है किया. १ लाख संजीत-
नन्द ने पकाया साग भात हमने खाया. शतपाठ
साप्ताहिक. ~~[illegible]~~
आज शिव जी खरसा के ढंग ये थे
भो. एक समय

असक्तं सर्वभृच्चैव निर्गुणं गुणभोक्तृ च ॥१४॥
बहिरन्तश्च भूतानामचरं चरमेव च ।
सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयं दूरस्थं चान्तिके च तत् ॥१५॥
अविभक्तं च भूतेषु विभक्तमिव च स्थितम् ।
भूतभर्तृ च तज्ज्ञेयं ग्रसिष्णु प्रभविष्णु च ॥१६॥

तिथी के अनुसार पितामरण दिन १७ वर्ष पूर्ण हुए
आज श्री [illegible] ने [illegible] था
आनन्द।। [illegible] फिर [illegible]
आज शिवजी [illegible] साधु के डेरे गये थे.
यहां पं. शिवजी मिश्र के दर्शन हुए.
ये यहां बड़े योगी कहे जाते हैं. योगी [illegible]
ज्ञानी पुरुष हैं. आज पहिले ही दर्शन हुए.

ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमसः परमुच्यते ।
ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं हृदि सर्वस्य विष्ठितम् ॥१७॥
इति क्षेत्रं तथा ज्ञानं ज्ञेयं चोक्तं समासतः ।
मद्भक्त एतद्विज्ञाय मद्भावायोपपद्यते ॥१८॥
प्रकृतिं पुरुषं चैव विद्ध्यनादी उभावपि ।

आज एकसमय श्री. सर्वानन्द नेपकाया
निवास टीकालालके घर.

विकारांश्च गुणांश्चैव विद्धि प्रकृतिसंभवान् ।१९।
कार्यकरणकर्तृत्वे हेतुः प्रकृतिरुच्यते ।
पुरुषः सुखदुःखानां भोक्तृत्वे हेतुरुच्यते ॥२०॥
पुरुषः प्रकृतिस्थो हि भुङ्क्ते प्रकृतिजान्गुणान् ।
कारणं गुणसङ्गोऽस्य सदसद्योनिजन्मसु ॥२१॥

एक समय भो. तथा निवास टीकालाल
के घर. भो. सर्वानन्दने पकाया था.
)।। कुमारी.

उपद्रष्टानुमन्ता च भर्ता भोक्ता महेश्वरः ।
परमात्मेति चाप्युक्तो देहेऽस्मिन्पुरुषः परः ।२२।
य एवं वेत्ति पुरुषं प्रकृतिं च गुणैः सह ।
सर्वथा वर्तमानोऽपि न स भूयोऽभिजायते ॥२३॥
ध्यानेनात्मनि पश्यन्ति केचिदात्मानमात्मना ।

आज एक समय भो. सर्वानन्दने पकाया हुआ
निवास दीक्षानानक के घर.
गा कुमारी.

अन्ये सांख्येन योगेन कर्मयोगेन चापरे ॥२४॥
अन्ये त्वेवमजानन्तः श्रुत्वान्येभ्य उपासते ।
तेऽपि चातितरन्त्येव मृत्युं श्रुतिपरायणाः ॥२५॥
यावत्संजायते किञ्चित्सत्त्वं स्थावरजङ्गमम् ।
क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात्तद्विद्धि भरतर्षभ ॥२६॥

(दुर्गा-पूजन)

टीकालाल के पास
आज एक सम यभो. ~~सर्वानन्द ने पका~~ ~~पाना~~ आज हरीपर्वत दर्शन गये थे गणेश (१) । कुमारी (२) ॥ भागवती (३) साथ सर्वानन्द, टीकालाल व उनके लडके थे. निवास टीकालाल के घर.

समं सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन्तं परमेश्वरम् ।
विनश्यत्स्वविनश्यन्तं यः पश्यति स पश्यति २७
समं पश्यन्हि सर्वत्र समवस्थितमीश्वरम् ।
न हिनस्त्यात्मनात्मानं ततो याति परां गतिम् २८
प्रकृत्यैव च कर्माणि क्रियमाणानि सर्वशः ।

आज एक समय भो॰ तथा निवास पं॰ दी-
कालाल के घर, भो॰ सर्वोभ नू नै पकाया था
आज नवचण्डी समाप्त हुई.

~~औं [illegible]~~

यः पश्यति तथात्मानमकर्तारं स पश्यति ॥२९॥
यदा भूतपृथग्भावमेकस्थमनुपश्यति ।
तत एव च विस्तारं ब्रह्म संपद्यते तदा ॥३०॥
अनादित्वान्निर्गुणत्वात्परमात्मायमव्ययः ।
शरीरस्थोऽपि कौन्तेय न करोति न लिप्यते ।३१।

आश्विन शुक्ल १० रवि] ९ अक्टूबर [आश्विन २३

(विजयादशमी)

तिथीके अनुसार अक्षरारम्भ दिन २५ वर्ष पूर्ण हुए.
आज भी पं. गोपीनाथ काझी के घर
साथ सर्वानन्द साधु था. शाम को
पं. सतलाल धर के घर सर्वानन्द के सा-
थ गये. रात भी. तथा निवास सतलाल
के घर. ।। कुमारी
आज दशना पाठ भी किया था.
श्रीनाथ आज आया था.
पं. गोपीनाथ काझी मुन्सफ होगया है. अब यह कप-
वाड जाकर चार्ज लेगा. यह सर्वानन्द साधु का फूफा
भाई है

यथा सर्वगतं सौक्ष्म्यादाकाशं नोपलिप्यते ।
सर्वत्रावस्थितो देहे तथात्मा नोपलिप्यते ॥३२॥
यथा प्रकाशयत्येकः कृत्स्नं लोकमिमं रविः ।
क्षेत्रं क्षेत्री तथा कृत्स्नं प्रकाशयति भारत ॥३३॥
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोरेवमन्तरं ज्ञानचक्षुषा ।

आज सुबः भो॰ पं॰ स लाल धर के घर
सर्वानन्द के सा थ टीका लाल के घर आये.
रात निवास त था भो॰ टीका लाल के घर.
आज हारदी क्षीने रु॰ २ दो दिये थे.
शाम को 'शिव खार' के डेरे गये थे. यहां
'शिवजी चिकन' 'आनन्द कौल' थे.

भूतप्रकृतिमोक्षं च ये विदुर्यान्ति ते परम् ॥३४॥
ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोगो नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

आज प्रदोष. आज मौन तोड़ दिया.
आज यहां (टिकलालके घर) थोड़ा दूध और सेव फल खाया. एक विचार हुआ. और सर्वानन्दको साथ लेकर अड्डे पर गये. वहां ५ रु. देकर जम्मू की लारी ठहराई. हमने टिकलाल जी को कुछ कहा नहीं उन्होने भी कुछ दिया नहीं. बल्कि व्यवहार असन्तोषजनक था. इन्होने व्यवहार बहुत खराब किया. ठीक है. थी कालाल के आफिस पर भीम याथा पर व्यवहार उन्होने अच्छा नहीं किया. शाम को काझीगुंड लारी ठहरी यहां आज सिर्फ दूध पर प्रदोष किया -) दूध तथा -) मज्जी सोने के लिये पैसे पं. हरि रामाश्रि चलने दिये.

ॐ

चतुर्दशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

परं भूयः प्रवक्ष्यामि ज्ञानानां ज्ञानमुत्तमम् ।
यज्ज्ञात्वा मुनयः सर्वे परां सिद्धिमितो गताः ।१।

आश्विन शुक्ल १३ बुध] १२ अक्टूबर [आश्विन २६

आज सुब: 'काझीगुण्ड' से लारी चली सो शामको
६॥ बजे 'अमर' से ऊपर १८मील 'पर 'दोमेल'
पर ठहरे रात यहीं काटी 'बटोट' में द्व५
-) हरीरामने दिये. रात मज्जी -) हरिरामनेदिये
लारी नं. ११४३

इदं ज्ञानमुपाश्रित्य मम साधर्म्यमागताः ।
सर्गेऽपि नोपजायन्ते प्रलये न व्यथन्ति च ॥२॥
मम योनिर्महद्ब्रह्म तस्मिन्गर्भं दधाम्यहम् ।
संभवः सर्वभूतानां ततो भवति भारत ॥३॥
सर्वयोनिषु कौन्तेय मूर्तयः संभवन्ति याः ।

आज सुब: यहांसे लारी चली करीब साढे नौबजे जम्मू पहुंचे. यहां पं. हरिरामरेलवे स्टेशन पर गया. मै रघुनाथ मन्दिर के पास एक हनुमान मन्दिर में स्नानादि करके शिव मन्दिर मे गया. यहां जगह नही मिली. फिर दूसरे एक छोटे मन्दिर में जा बैठा. यहां के पुजारी के पास दो फुलके खाये. शाम को राजपूत कॉलेज के 'अकौन्टेन्ट पं. जानकीनाथ धर' को मिला फिर रात सिर्फ दूध पीया और रातनिवास इसके पास राजपूत कॉलेज के एक कमरे में

तासां ब्रह्म महद्योनिरहं बीजप्रदः पिता ॥४॥
सत्त्वं रजस्तम इति गुणाः प्रकृतिसंभवाः ।
निबध्नन्ति महाबाहो देहे देहिनमव्ययम् ॥५॥
तत्र सत्त्वं निर्मलत्वात्प्रकाशकमनामयम् ।
सुखसङ्गेन बध्नाति ज्ञानसङ्गेन चानघ ॥६॥

आश्विन शुक्ल १५ शुक्र] १४ अक्टूबर [आश्विन २८

(शरद्पूर्णिमा, कार्तिकस्नानारम्भ)

आज दोनौ समय भो. निरञ्जननाथ कौल के पास रात निवास पं. जानकी नाथ के पास.

रजो रागात्मकं विद्धि तृष्णासङ्गसमुद्भवम् ।
तन्निबध्नाति कौन्तेय कर्मसङ्गेन देहिनम् ॥७॥
तमस्त्वज्ञानजं विद्धि मोहनं सर्वदेहिनाम् ।
प्रमादालस्यनिद्राभिस्तन्निबध्नाति भारत ॥८॥
सत्त्वं सुखे संजयति रजः कर्मणि भारत ।

१०
दोनों समय भो. निरञ्जननाथ के पास
रात निवास जानकीनाथ के पास

ज्ञानमावृत्य तु तमः प्रमादे संजयत्युत ॥९॥
रजस्तमश्चाभिभूय सत्त्वं भवति भारत।
रजः सत्त्वं तमश्चैव तमः सत्त्वं रजस्तथा ॥१०॥
सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन्प्रकाश उपजायते।
ज्ञानं यदा तदा विद्याद्विवृद्धं सत्त्वमित्युत ॥११॥

दोनों समय भो. निरञ्जननाथके पास
रात निवास जानकीनाथके पास.

लोभः प्रवृत्तिरारम्भः कर्मणामशमः स्पृहा ।
रजस्येतानि जायन्ते विवृद्धे भरतर्षभ ॥१२॥
अप्रकाशोऽप्रवृत्तिश्च प्रमादो मोह एव च ।
तमस्येतानि जायन्ते विवृद्धे कुरुनन्दन ॥१३॥
यदा सत्त्वे प्रवृद्धे तु प्रलयं याति देहभृत् ।

दोनों समय भो. पं. निरञ्जननाथ कौल के पास. तथा निवास पं. जानकीनाथ धर के पास. आज पं. निरञ्जननाथ कौल ने २रु. किराया अमृतसर के लिये दिया.

तदोत्तमविदां लोकानमलान्प्रतिपद्यते ॥१४॥
रजसि प्रलयं गत्वा कर्मसङ्गिषु जायते ।
तथा प्रलीनस्तमसि मूढयोनिषु जायते ॥१५॥
कर्मणः सुकृतस्याहुः सात्त्विकं निर्मलं फलम् ।
रजसस्तु फलं दुःखमज्ञानं तमसः फलम् ॥१६॥

आज दोनो समय भो. पं. निरञ्जननाथके
पास. रात निवास पं. जानकीनाथके पास.

सत्त्वात्संजायते ज्ञानं रजसो लोभ एव च ।
प्रमादमोहौ तमसो भवतोऽज्ञानमेव च ॥१७॥
ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्त्वस्था मध्ये तिष्ठन्ति राजसाः
जघन्यगुणवृत्तिस्थाः अधो गच्छन्ति तामसाः १८
नान्यं गुणेभ्यः कर्तारं यदा द्रष्टानुपश्यति ।

आज सुबः पौने सातकी रेलगाडी से अमृतसर गया. टिकट पं. जानकीनाथ 'धर' ने दिया. यं गेके पैसे -) भी उसी ने दिये. रेजा टिकट १५। ।।।-) किराया. ११ बजे 'अमृतसर' पहुंचा यहां इधर उधर बहुत घूमकर अन्त में काश्मीरी शिवालय में पहुंचा यहां 'पं. हरिराम' मिला. इसने फल लाकर खिलाये. फिर रात भी तथा निवास हरिरामके डेरे. यह एक काश्मीरी पं. के (रेऊ) के घर रहता है. आतवालों में त और ओं हभी रसोई आदिकाम करता है.

गुणेभ्यश्च परं वेत्ति मद्भावं सोऽधिगच्छति ।१९।
गुणानेतानतीत्य त्रीन्देही देहसमुद्भवान् ।
जन्ममृत्युजरादुःखैर्विमुक्तोऽमृतमश्नुते ॥२०॥
अर्जुन उवाच
कैर्लिङ्गैस्त्रीन्गुणानेतानतीतो भवति प्रभो ।

आज सुबः शौचादि करके छो टे नहर पर स्नान
करके दोनो समय भो. तथा निवास हरिराम के पास
अमृतसर 'दुर्याना' 'दरबार साहब' 'जलि-
यांवाला बाग' देखा.

किमाचारः कथं चैतांस्त्रीन्गुणानतिवर्तते ॥२१॥

श्रीभगवानुवाच

प्रकाशं च प्रवृत्तिं च मोहमेव च पाण्डव ।
न द्वेष्टि संप्रवृत्तानि न निवृत्तानि काङ्क्षति ॥२२॥

सुब: स्नान नहर पर. दोनों समय भो. तथा
निवास हरिराम के पास 'दुर्याना' गया था.

उदासीनवदासीनो गुणैर्यो न विचाल्यते ।
गुणा वर्तन्त इत्येव योऽवतिष्ठति नेङ्गते ॥२३॥
समदुःखसुखः स्वस्थः समलोष्टाश्मकाञ्चनः ।
तुल्यप्रियाप्रियो धीरस्तुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः २४

कार्तिक कृष्ण ८ शनि] २२ अक्टूबर [कार्तिक ५

आज दोनों समय भो. तथा निवास हरिराम के पास.
दुर्यानी गया था.

मानापमानयोस्तुल्यस्तुल्यो मित्रारिपक्षयोः।
सर्वारम्भपरित्यागी गुणातीतः स उच्यते॥२५॥
मां च योऽव्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते।
स गुणान्समतीत्यैतान्ब्रह्मभूयाय कल्पते॥२६॥

कार्तिक कृष्ण ९ रवि] २३ अक्टूबर [कार्तिक ६

आज एक चिट्ठी कारमीरि श्रीनगरमें 'श्रीमिलाप' को भेजी
दोनों समय भो. तथा निवास हरिरामके पास
दुग्पाना गयाथा.

ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाहममृतस्याव्ययस्य च।
शाश्वतस्य च धर्मस्य सुखस्यैकान्तिकस्य च २७

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे गुणत्रयविभागयोगो नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥१४॥

कार्तिक कृष्णा १० सोम] २४ अक्टूबर [कार्तिक ७

तिथीके अनुसार पितृजन्मदिन ५८ वर्ष पूर्ण हुए दोनों समयमें. तथा निवास हरिरामके पास दुर्गाता गया था.

ॐ

पञ्चदशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम् ।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित् ॥१॥

कार्तिक कृष्ण ११ मंगल] २५ अक्टूबर [कार्तिक ८

आज शौनो समय भो . तथा निवास हरिराम के पास
दुर्गा जा गया था .

अधश्चोर्ध्वं प्रसृतास्तस्य शाखा गुणप्रवृद्धा विषयप्रवालाः। अधश्च मूलान्यनुसंततानि कर्मानुबन्धीनि मनुष्यलोके ॥२॥ न रूपमस्येह तथोपलभ्यते नान्तो न चादिर्न च संप्रतिष्ठा। अश्वत्थमेनं सुविरूढमूलमसङ्गशस्त्रेण दृढेन छित्त्वा ॥३॥

कार्तिक कृष्णा १२ बुध] २६ अक्टूबर [कार्तिक ६

आज को नो समय भो. तथा निवास हरिराम के पास

ततःपदं तत्परिमार्गितव्यं यस्मिन्गता न निवर्तन्ति
भूयः। तमेव चाद्यं पुरुषं प्रपद्ये यतः प्रवृत्तिः
प्रसृता पुराणी ॥४॥ निर्मानमोहा जितसङ्गदोषा
अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः। द्वन्द्वैर्विमुक्ताः
सुखदुःखसंज्ञैर्गच्छन्त्यमूढाः पदमव्ययं तत् ॥५॥

आज प्रदोष. मौन तो उदि या. दिन को के ले खाये.
रात सा बूदाने पर पारण. निवास हरिराम के पास.

न तद्भासयते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः ।
यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम ॥६॥
ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः ।
मनःषष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति ॥७॥
शरीरं यदवाप्नोति यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः ।

कार्तिक कृष्ण १४ शुक्र] २८ अक्टूबर [कार्तिक ११

आज दो तो समय भी तथा निवास हरिराम के पास,
२ [illegible] गया था.

गृहीत्वैतानि संयाति वायुर्गन्धानिवाशयात् ॥८॥
श्रोत्रं चक्षुः स्पर्शनं च रसनं घ्राणमेव च ।
अधिष्ठाय मनश्चायं विषयानुपसेवते ॥९॥
उत्क्रामन्तं स्थितं वापि भुञ्जानं वा गुणान्वितम् ।
विमूढा नानुपश्यन्ति पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषः ॥१०॥

कार्तिक कृष्ण ३० शनि] २९ अक्टूबर [कार्तिक १२

(दीपावली)

आज दोनों समय भी तथा निवास हरिराम के पास
आज स्वामी श्री नारायण गिरी गुजरात (पंजाब) वाले
के साथ सामने गया था

यतन्तो योगिनश्चैनं पश्यन्त्यात्मन्यवस्थितम् ।
यतन्तोऽप्यकृतात्मानो नैनं पश्यन्त्यचेतसः ।११।
यदादित्यगतं तेजो जगद्भासयतेऽखिलम् ।
यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम् १२
गामाविश्य च भूतानि धारयाम्यहमोजसा ।

कार्तिक शुक्ल १ रवि] ३० अक्टूबर [कार्तिक १३

आज दोनो समय भो. (अन्नकूट) तथा निवास
हरिराम के पास. दुर्गा ना गया था.

पुष्णामि चौषधीः सर्वाः सोमो भूत्वा रसात्मकः॥ अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः। प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम्॥१४॥सर्वस्य चाहं हृदि संनिविष्टो मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च। वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो वेदान्तकृद्वेदविदेव।

(भ्रातृद्वितीया)

आज ऊषा (आदेवी रेणु) के पास सुबः दो फल के
दा. करवाई. आज ही का कल्याण सौगन्ध के की
पुस्तक कश्मीर से आई. श्रीनाथ की चिट्ठी भी
प्राप्त थी आज एक चिट्ठी कश्मीर सदानन्द को भेजी.
[illegible]. तथा निवास उधम के पास.

चाहम् ।१५। द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव
च । क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते१६
उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः ।
यो लोकत्रयमाविश्य बिभर्त्यव्यय ईश्वरः ॥१७॥
यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः ।

कार्तिक शुक्ल २ मंगल] १ नवम्बर १९३२ [कार्तिक १५

दोनो समय मे · तथा निवास हरिराम के पास.

अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः १८
यो मामेवमसंमूढो जानाति पुरुषोत्तमम् ।
स सर्वविद्भजति मां सर्वभावेन भारत ॥१६॥
इति गुह्यतमं शास्त्रमिदमुक्तं मयानघ ।

दोनों समय पाठ. तथा निवास हरिराम के पास.

एतद्बुद्ध्वा बुद्धिमान्स्यात्कृतकृत्यश्च भारत २०

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे पुरुषोत्तमयोगो नाम पञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

कार्तिक शुक्ल ५ गुरु] ३ नवम्बर [कार्तिक १७

सुब: भो. शांतमशाई तथा। निवास हरिदासके पास
दुर्भाना गया था.

ॐ

षोडशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः ।
दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम् ॥१॥

कार्तिक शुक्ल ६ शुक्र] ४ नवम्बर [कार्तिक १८

आज स्कूल: के समिति वालादेवी रेड्डी के पास गो.
सातम भाई तथा निवास हरिराम के पास.
स्वामी तपणगिरी, ब्रह्मचारी, हरियोगानन्द,
के साथ घूमने गया था.

अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम् ।
दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम् ॥२॥
तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता ।
भवन्ति संपदं दैवीमभिजातस्य भारत ॥३॥
दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च ।

कार्तिक शुक्ल ८ शनि] ५ नवम्बर [कार्तिक १९

दोनो समय भो. तथा निवास हरीराम के पास.
आज सर्वानन्द की चिठ्ठी आई.
रामतलाई गया था. साथ ब्रह्मचारी और हरीपरमानन्द थे.
तलाई

अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ संपदमासुरीम् ॥४॥
दैवी संपद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता।
मा शुचः संपदं दैवीमभिजातोऽसि पाण्डव ॥५॥
द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन्दैव आसुर एव च।
दैवो विस्तरशः प्रोक्त आसुरं पार्थ मे शृणु ॥६॥

कार्तिक शुक्ल ९ रवि] ६ नवम्बर [कार्तिक २०

(अक्षय ९)

~~[illegible]~~
सुबं: भो. रातभाई तथा निवास हरिरामके
पास. आज एक पुलिससे कुछ बहस हुई.
रामतभाई गया था. साथ वासुभाई और हरिप्र
[illegible].

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च जना न विदुरासुराः ।
न शौचं नापि चाचारो न सत्यं तेषु विद्यते ॥७॥
असत्यमप्रतिष्ठं ते जगदाहुरनीश्वरम् ।
अपरस्परसंभूतं किमन्यत्कामहैतुकम् ॥८॥
एतां दृष्टिमवष्टभ्य नष्टात्मानोऽल्पबुद्धयः ।

कार्तिक शुक्ल १० सोम] ७ नवम्बर [कार्तिक २१

आज दोनों समय भो-तथा निवास हरिराम के पास
~~रक्षा~~ ~~आज~~ इन दिनों में स्वामी नारायणगिरी, एक
जम्मू के इलाके के ब्रह्मचारी और साधु हरिप्रसादानन्द
से और भी जान पहचान हुई.

प्रभवन्त्युग्रकर्माणः क्षयाय जगतोऽहिताः ॥९॥
काममाश्रित्य दुष्पूरं दम्भमानमदान्विताः ।
मोहाद्गृहीत्वासद्ग्राहान्प्रवर्तन्तेऽशुचिव्रताः १०
चिन्तामपरिमेयां च प्रलयान्तामुपाश्रिताः ।
कामोपभोगपरमा एतावदिति निश्चिताः ॥११॥

(प्रबोधिनी ११ व्रतम्)

सुबः भो. तथा स्त्न दूध फेनी खाता और निवास हरिराम
के पास. उसमें जागया था. आज यहां के मशहूर पं. हरिदत्त
के दर्शन किया थोड़ी बातचीत भी हुई. ये स्मृतियों के अर्थ
उलटे करते हैं. जोतिषी हरिओउ को भी देखा.
साथ कर्मचन्द भी था.

आशापाशशतैर्बद्धाः कामक्रोधपरायणाः ।
ईहन्ते कामभोगार्थमन्यायेनार्थसञ्चयान् ॥१२॥
इदमद्य मया लब्धमिमं प्राप्स्ये मनोरथम् ।
इदमस्तीदमपि मे भविष्यति पुनर्धनम् ॥१३॥
असौ मया हतः शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि ।

आज पुन: शौचादि करके करमीरी शिवालय में स्नान किया पूजा दोनो समय की. तथा निवास हरिराम के पास शाम को राम लला ई गया था. साथ ब्रह्मचारी और हरिप्रशानन्द थे.

ईश्वरोऽहमहं भोगी सिद्धोऽहं बलवान्सुखी ॥१४॥
आढ्योऽभिजनवानस्मि कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया।
यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इत्यज्ञानविमोहिताः १५
अनेकचित्तविभ्रान्ता मोहजालसमावृताः।
प्रसक्ताः कामभोगेषु पतन्ति नरकेऽशुचौ ॥१६॥

आज प्रदोष. बिल्लामल के बाग में गया था. सुना था कि यहां एक बड़े अच्छे महात्मा रहते हैं. ये मिले. इनको कश्मीर में ३ तीन वर्ष के पहले देखा था. दिन को कुछ नहीं खाया. रात साबुदाने पर पारण किया.

प्रदोष

आत्मसंभाविताः स्तब्धा धनमानमदान्विताः।
यजन्ते नामयज्ञैस्ते दम्भेनाविधिपूर्वकम् ॥१७॥
अहंकारं बलं दर्पं कामं क्रोधं च संश्रिताः।
मामात्मपरदेहेषु प्रद्विषन्तोऽभ्यसूयकाः ॥१८॥
तानहं द्विषतः क्रूरान्संसारेषु नराधमान्।

कार्तिक शुक्ल १२ शुक्र] ११ नवम्बर [कार्तिक २५

आज दोनों समय भो॰ तथा निवास हरिरामके पास.

क्षिपाम्यजस्रमशुभानासुरीष्वेव योनिषु ॥१९॥
आसुरीं योनिमापन्ना मूढा जन्मनि जन्मनि।
मामप्राप्यैव कौन्तेय ततो यान्त्यधमां गतिम् २०
त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् २१

कार्तिक शुक्ल १४ शनि] १२ नवम्बर [कार्तिक २६

आज सुबः भो. ज्वालादेवी रेऊ के पास आज
इसने एक कमीज सिलाकर दी. हरिराम
ने दो रू. २) दिये. अमृतसर से ११) टिकट
रेल का लेकर शाम को 'बिआस' उतरा.
यहां से उमीत पैदल 'कोट' गांव में गया.
यहां कुटी के सन्यासी (उदासी) ने ठहरने नहीं दिया.
रात गांव में एक धर्मशाला में सोया. यहां के
लोगों की बातें देखकर मालूम हुआ कि
यहां रहना ठीक नहीं. रात भो. कुछ नहीं.

एतैर्विमुक्तः कौन्तेय तमोद्वारैस्त्रिभिर्नरः।
आचरत्यात्मनः श्रेयस्ततो याति परां गतिम् २२
यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम् ।२३।
तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ।

(कार्तिकपूर्णिमा)

आजसुब: 'विपाशा' में स्नान करके 'अम्बा की' गांव में २ ऐ ई घांस का शाम को 'कपूरथला' पहुंचा. को ठ से १७ मील पैदल. 'कपूरथला' शहर में 'सनातन धर्म सभा' भवन में ठहरा. ५ नंबर की कोठरी रात भी कुछ नहीं. १५ अमानत रखकर एक ताला यहां के मैनेजर (सिख) से लिया. रात यहां निवास.

ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्म कर्तुमिहार्हसि॥२४॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे दैवासुरसंपद्विभागयोगो नाम षोडशोऽध्यायः ॥१६॥

मार्गशीर्ष कृष्ण १ सोम १९८९] १४ न० [कार्तिक २८

आज सुबः शौचादि करके) ।। दही)॥ पेडे खा
फिर ब्रह्मकुण्ड के पास एक नाथ साधु के कहने
से वहां पेडे खाई. रात निवास सनातन धर्म
सभा भवन में उसी कोठरी में.

ॐ

सप्तदशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

ये शास्त्रविधिमुत्सृज्य यजन्ते श्रद्धयान्विताः ।
तेषां निष्ठा तु का कृष्ण सत्त्वमाहो रजस्तमः ॥१॥

मार्गशीर्ष कृष्ण २ मंगल] १५ नवम्बर [कार्तिक २९

आज सुबः शौचादि करके ।। दही ।) चीनी
खाकर टांगे से ≡) देकर 'कपूरथला से
जालन्धर' शहर आया. यहां ।) के केले खाये
ं एक दूकान पर एक समाजी से वाक
फियत हुई. वहां एक गरीब खत्री से भी वा-
कफियत हुई. यह ज़ाहौरीयों के मन्दिर ले
आया वहां एक कोठरी में ठहरा. टांगे में
बा चन्द खेड़े दोना, कपूरथला स्टेट
के. जालन्धर से जान पहचान हुई. यह
ब्राह्मण बालक है. संस्कृत पढ़ना चाहता है.
[illegible]
तीन ।। भो. कुछ नहीं

श्रीभगवानुवाच

त्रिविधा भवति श्रद्धा देहिनां सा स्वभावजा ।
सात्त्विकी राजसी चैव तामसी चेति तां शृणु २
सत्त्वानुरूपा सर्वस्य श्रद्धा भवति भारत ।
श्रद्धामयोऽयं पुरुषो यो यच्छ्रद्धः स एव सः ॥३॥

मार्गशीर्ष कृष्ण ३ बुध] १६ नवम्बर [कार्तिक ३०

११ तिथीके अनुसार गृहत्याग दिन ४ वर्ष पूर्ण आज सुबः शौचस्नानादि करके -)॥ दूध -) फोनि)॥ मीठा खाया. दिनभर और कुछ नहीं. रात निवास इसी मन्दिर के एक कोठरीमें.

यजन्ते सात्त्विका देवान्यक्षरक्षांसि राजसाः।
प्रेतान्भूतगणांश्चान्ये यजन्ते तामसा जनाः ॥४॥
अशास्त्रविहितं घोरं तप्यन्ते ये तपो जनाः।
दम्भाहंकारसंयुक्ताः कामरागबलान्विताः ॥५॥
कर्षयन्तः शरीरस्थं भूतग्राममचेतसः।

मार्गशीर्ष कृष्ण ४ गुरु] १७ नवम्बर [बं० मार्गशीर्ष १

आज सुबः शौचस्नानादि करके ठा। दही। मीठा
पीया. फिर 'देवीतलाव' गया था. यहां एक
ब्राह्मण बालक विशारद में पढने वाला मिला।
इस से कुछ बातचीत हुई. फिर मन्दिर में आया
यही ब्राह्मण रोटी भाजी दही ले आया सो खा
या. इसका नाम भन्दलाल है. रात निवास मन्दि-
र के कोठरी में. रात भोः कुछ नहीं.

मां चैवान्तःशरीरस्थं तान्विद्ध्यासुरनिश्चयान् ६
आहारस्त्वपि सर्वस्य त्रिविधो भवति प्रियः ।
यज्ञस्तपस्तथा दानं तेषां भेदमिमं शृणु ॥७॥
आयुःसत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः ।
रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्त्विक-

मार्गशीर्ष कृष्ण ५ शुक्र] १८ नवम्बर [मार्गशीर्ष २

आज देवीतलावपर सुबः शौचस्नानादि करके यहां के एक विद्यार्थी 'श्यामसुन्दर' के साथ एक मारवाड़ी के घर रोटी खाई. रामनन्द-जाजु ने दूध पिलाया था. रात निवास मन्दिर के कोठरी में.

प्रियाः ८ कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरूक्षविदा-
हिनः। आहारा राजसस्येष्टा दुःखशोकामयप्रदाः
यातयामं गतरसं पूति पर्युषितं च यत्।
उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम् ॥१०॥
अफलाकाङ्क्षिभिर्यज्ञो विधिदृष्टो य इज्यते।

मार्गशीर्ष कृष्णा ६ शनि] १६ नवम्बर [मार्गशीर्ष ३

आज सुबः शौचस्नानादि देवी तलावपर
श्यामसुन्दरका अपहार उपेक्षाभरा देखा.
)॥ दही)। मीठा =)। केला खाया. -) रबड़ी
खाई. रातनिवास इसी मन्दिरमें.

यष्टव्यमेवेति मनः समाधाय स सात्त्विकः ॥११॥
अभिसंधाय तु फलं दम्भार्थमपि चैव यत् ।
इज्यते भरतश्रेष्ठ तं यज्ञं विद्धि राजसम् ॥१२॥
विधिहीनमसृष्टान्नं मन्त्रहीनमदक्षिणम् ।
श्रद्धाविरहितं यज्ञं तामसं परिचक्षते ॥१३॥

आज प्रात: शौचादि करके दुकान पर गये. -)।
१ रु. ।।।) टिकट 'जगाधरी' से 'कुराली' तक
९।। बजे रेलगाड़ी में बैठा १ बजे सरहिन्द तथा
'कुराली' की ट्रेन बन्द हो जाने के कारण पैदल चला
'बस्सी' से -)। दूध पिया फिर पैदल चला। फिर
१ तांगे में बैठा -) 'बागा वाला' तक यहां से -)।।
'कुराली' तक तांगा. ५ बजे पं. मुकुन्दलाल मिश्र
'ज्योतिषी' के घर पहुंचा यहां हमारा मित्र है.
रात भो. पं. हरदेव के घर.

देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं शौचमार्जवम् ।
ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तप उच्यते ॥१४॥
अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत् ।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते ॥१५॥
मनःप्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः ।

मार्गशीर्ष कृष्णा ८ सोम] २१ नवम्बर [मार्गशीर्ष ५

तिथी के अनुसार पि॰ ०५ जन्मदिन ६३ वर्ष पूर्ण
आज दोनों समय भो॰ तथा निवास मुकुन्दलाल
के पास.

भावसंशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्यते ॥१६॥
श्रद्धया परया तप्तं तपस्तत्त्रिविधं नरैः ।
अफलाकाङ्क्षिभिर्युक्तैः सात्त्विकं परिचक्षते ॥
सत्कारमानपूजार्थं तपो दम्भेन चैव यत् ।
क्रियते तदिह प्रोक्तं राजसं चलमध्रुवम् ॥१८॥

आज -)। रुहीतसी.
भो· एक समय मुकुन्दवल्लभके पास. शाम को हरदेवके पास. निवास भी मुकुन्दवल्लभके पास

मूढग्राहेणात्मनो यत्पीडया क्रियते तपः ।
परस्योत्सादनार्थं वा तत्तामसमुदाहृतम् ॥१९॥
दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे ।
देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम्२०
यत्तु प्रत्युपकारार्थं फलमुद्दिश्य वा पुनः ।

सुबह: शौचस्नानादि करके दोनो समय भो. तथा निवास मुकुन्दवल्लभ के पास. आज दो श्लोक मुकुन्दवल्लभ को बता दिये.

दीयते च परिक्लिष्टं तद्दानं राजसं स्मृतम् ॥२१॥
अदेशकाले यद्दानमपात्रेभ्यश्च दीयते ।
असत्कृतमवज्ञातं तत्तामसमुदाहृतम् ॥२२॥
ॐ तत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः ।
ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ञाश्च विहिताः पुरा ॥२३॥

आज पूर्व: शौचादि स्नानादि दोनो समय भो. तथा
निवास मुकुन्द बल्लभ के पास. –) । निद्रीकातेन

तस्मादोमित्युदाहृत्य यज्ञदानतपःक्रियाः।
प्रवर्तन्ते विधानोक्ताः सततं ब्रह्मवादिनाम् ॥२४॥
तदित्यनभिसंधाय फलं यज्ञतपःक्रियाः।
दानक्रियाश्च विविधाः क्रियन्ते मोक्षकाङ्क्षिभिः
सद्भावे साधुभावे च सदित्येतत्प्रयुज्यते।

मार्गशीर्ष कृष्णा १२ शुक्र] २५ नवम्बर [मार्गशीर्ष ६

आज प्रदोष रात नियमानुसार पारण
आज गाय का दूध नहीं मिला.
रात निवास मुकुन्द [illegible] के पास.

प्रशस्ते कर्मणि तथा सच्छब्दः पार्थ युज्यते २६
यज्ञे तपसि दाने च स्थितिः सदिति चोच्यते ।
कर्म चैव तदर्थीयं सदित्येवाभिधीयते ॥२७॥
अश्रद्धया हुतं दत्तं तपस्तप्तं कृतं च यत् ।

मार्गशीर्ष कृष्णा १३ शनि] २६ नवम्बर [मार्गशीर्ष १०

आज भो. दोनो समय पं. मुकुन्द वल्लभ मिश्र के पास.
तथा रात्रि निवास. आज एक कार्ड का शरीर श्रीनगर
में श्रीनाथ को लिखा.

असदित्युच्यते पार्थ न च तत्प्रेत्य नो इह ॥२८॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे श्रद्धात्रयविभागयोगो नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

आज दोनों समय भो. तथापि पास पं. मुकुन्द वल्लभ के पास.

ॐ

अष्टादशोऽध्याय:

अर्जुन उवाच

संन्यासस्य महाबाहो तत्त्वमिच्छामि वेदितुम्।
त्यागस्य च हृषीकेश पृथक्केशिनिषूदन ॥१॥

मार्गशीर्ष शुक्ल १ सोम] २८ नवम्बर [मार्गशीर्ष १२

आज पोने नौ समय पहुंचे - नभा निवास पं. मुकुन्द वल्लीज
के पास.

श्रीभगवानुवाच

काम्यानां कर्मणां न्यासं संन्यासं कवयो विदुः।
सर्वकर्मफलत्यागं प्राहुस्त्यागं विचक्षणाः ॥२॥
त्याज्यं दोषवदित्येके कर्म प्राहुर्मनीषिणः।
यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यमिति चापरे ॥३॥

आज भो. दोनो समय पं. मुकुन्द लाल जी के पास.
तथा रात निवास.

निश्चयं शृणु मे तत्र त्यागे भरतसत्तम ।
त्यागो हि पुरुषव्याघ्र त्रिविधः संप्रकीर्तितः ॥४॥
यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत् ।
यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम् ॥५॥
एतान्यपि तु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा फलानि च ।

दोनों समय पाठ. तथा निवास मुकुन्द नगर में कैपरा

कर्तव्यानीति मे पार्थ निश्चितं मतमुत्तमम् ॥६॥
नियतस्य तु संन्यासः कर्मणो नोपपद्यते ।
मोहात्तस्य परित्यागस्तामसः परिकीर्तितः ॥७॥
दुःखमित्येव यत्कर्म कायक्लेशभयात्त्यजेत् ।
स कृत्वा राजसं त्यागं नैव त्यागफलं लभेत् ।८।

दोनों समय भो. तथा निवास मुकुन्दवल्लभ के पास.

कार्यमित्येव यत्कर्म नियतं क्रियतेऽर्जुन ।
सङ्गं त्यक्त्वा फलं चैव स त्यागः सात्त्विको मतः
न द्वेष्ट्यकुशलं कर्म कुशले नानुषज्जते ।
त्यागी सत्त्वसमाविष्टो मेधावी छिन्नसंशयः १०
न हि देहभृता शक्यं त्यक्तुं कर्माण्यशेषतः ।

मार्गशीर्षं शुक्ल ५ शुक्र] २ दिसम्बर [मार्गशीर्ष १६

दोनों समय प्रभो. तथा निवास मुकुन्द-नःधाम के पास
आज रेलवे टाइम ५ मिनिट कम १० बजे पं. मुकुन्द-
वल्लभ ज्योतिषी का देहान्त हुआ.
हरदेव को 'श्रीमद्भागवत' प्रथमाध्याय पढ़ाया।

यस्तु कर्मफलत्यागी स त्यागीत्यभिधीयते।११।
अनिष्टमिष्टं मिश्रं च त्रिविधं कर्मणः फलम्।
भवत्यत्यागिनां प्रेत्य न तु संन्यासिनां क्वचित्१२
पञ्चैतानि महाबाहो कारणानि निबोध मे।
सांख्ये कृतान्ते प्रोक्तानि सिद्धये सर्वकर्मणाम्॥

आज भो. ३ तो समय पं० हरदेव के पास तथा
निवास मुकुन्दचन्द्र भट्ट के पास.
हरदेव को श्रीमद्भागवत द्वितीयाध्याय पढ़ाया.

अधिष्ठानं तथा कर्ता करणं च पृथग्विधम् ।
विविधाश्च पृथक्चेष्टा दैवं चैवात्र पञ्चमम् ।१४।
शरीरवाङ्मनोभिर्यत्कर्म प्रारभते नरः ।
न्याय्यं वा विपरीतं वा पञ्चैते तस्य हेतवः ॥१५॥
तत्रैवं सति कर्तारमात्मानं केवलं तु यः ।

मार्गशीर्ष शुक्ल ७ रवि] ४ दिसम्बर [मार्गशीर्ष १८

आज दोनों समय भो. हरदेव के पास. निवास
प. मुकुन्द वल्लभ के पास.
हरदेव को श्रीमद्भगवत तृतीय अध्याय पढ़ाया.

पश्यत्यकृतबुद्धित्वान्न स पश्यति दुर्मतिः ॥१६॥
यस्य नाहंकृतो भावो बुद्धिर्यस्य न लिप्यते ।
हत्वापि स इमाँल्लोकान्न हन्ति न निबध्यते ॥१७॥
ज्ञानं ज्ञेयं परिज्ञाता त्रिविधा कर्मचोदना ।
करणं कर्म कर्तेति त्रिविधः कर्मसंग्रहः ॥१८॥

मार्गशीर्ष शुक्ल ८ सोम] ९ दिसम्बर [मार्गशीर्ष १९

आज दोनों समय भो॰ तथा निवास पं॰ मुकुन्दवल्लभ के पास

ज्ञानं कर्म च कर्ता च त्रिधैव गुणभेदतः।
प्रोच्यते गुणसंख्याने यथावच्छृणु तान्यपि॥१९॥
सर्वभूतेषु येनैकं भावमव्ययमीक्षते।
अविभक्तं विभक्तेषु तज्ज्ञानं विद्धि सात्त्विकम्२०
पृथक्त्वेन तु यज्ज्ञानं नानाभावान्पृथग्विधान्

आज दोनो समय भो. ~~तथा निवास~~ हरदेव के घर.
निवास मुकुन्द वल्लभ के घर (बैठके में)

वेत्ति सर्वेषु भूतेषु तज्ज्ञानं विद्धि राजसम्॥२१॥
यत्तु कृत्स्नवदेकस्मिन्कार्ये सक्तमहैतुकम्।
अतत्त्वार्थवदल्पं च तत्तामसमुदाहृतम्॥२२॥
नियतं सङ्गरहितमरागद्वेषतः कृतम्।
अफलप्रेप्सुना कर्म यत्तत्सात्त्विकमुच्यते॥२३॥

मार्गशीर्ष शुक्ल १० बुध] ७ दिसम्बर [मार्गशीर्ष २१

आज दोनों समय भी पं. हरदेव के घर. नि. गास मुकुन्द
वाल्मीकि के पास.

यत्तु कामेप्सुना कर्म साहंकारेण वा पुनः ।
क्रियते बहुलायासं तद्राजसमुदाहृतम् ॥२४॥
अनुबन्धं क्षयं हिंसामनवेक्ष्य च पौरुषम् ।
मोहादारभ्यते कर्म यत्तत्तामसमुच्यते ॥२५॥
मुक्तसङ्गोऽनहंवादी धृत्युत्साहसमन्वितः ।

मार्गशीर्ष शुक्ल ११ गुरु] ८ दिसम्बर [मार्गशीर्ष २२

(गीता-जयन्ती)

दोनों समय भो. हरदेव के घर. निवास मुकुन्दवल्लभ के पास.

हरदेव को ४ अध्याय भागवत पढ़ाया.

सिद्ध्यसिद्ध्योर्निर्विकारः कर्ता सात्त्विक उच्यते
रागी कर्मफलप्रेप्सुर्लुब्धो हिंसात्मकोऽशुचिः ।
हर्षशोकान्वितः कर्ता राजसः परिकीर्तितः ॥२७॥
अयुक्तः प्राकृतः स्तब्धः शठो नैष्कृतिकोऽलसः ।
विषादी दीर्घसूत्री च कर्ता तामस उच्यते ॥२८॥

आज भो. दोनो समय हरदेव के पास निवास
मुकुन्दवल्लभ के पास.
आंवला मुरब्बा दो तोले खाया

बुद्धेर्भेदं धृतेश्चैव गुणतस्त्रिविधं शृणु ।
प्रोच्यमानमशेषेण पृथक्त्वेन धनंजय ॥२९॥
प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च कार्याकार्ये भयाभये ।
बन्धं मोक्षं च या वेत्ति बुद्धिः सा पार्थ सात्त्विकी
यया धर्ममधर्मं च कार्यं चाकार्यमेव च ।

मार्गशीर्ष शुक्ल १२ शनि] १० दिसम्बर [मार्गशीर्ष २४

आज ~~प्रदोष~~ नियमानुसार रात पारण
हृदेव के पर. निवास मुकुन्दवल्लभ के पास.
आंवला मुरब्बा २ तोले खाया

अयथावत्प्रजानाति बुद्धिः सा पार्थ राजसी॥३१॥
अधर्मं धर्ममिति या मन्यते तमसावृता।
सर्वार्थान्विपरीतांश्च बुद्धिः सा पार्थ तामसी ३२
धृत्या यया धारयते मनःप्राणेन्द्रियक्रियाः।
योगेनाव्यभिचारिण्या धृतिः सा पार्थ सात्त्विकी

आज भी दोनों समय हरदेव के पास.

आंवला मुरब्बा २ तोले खाया.

आज काश्मीर श्रीनगर से श्रीनाथ की चिट्ठी आयी.

आजसे चौखण्डी परकोठरी में मेरा निवासस्थान रातके लिये नियत हुआ.

यया तु धर्मकामार्थान्धृत्या धारयतेऽर्जुन।
प्रसङ्गेन फलाकाङ्क्षी धृतिः सा पार्थ राजसी॥
यया स्वप्नं भयं शोकं विषादं मदमेव च।
न विमुञ्चति दुर्मेधा धृतिः सा पार्थ तामसी।३५।
सुखं त्विदानीं त्रिविधं शृणु मे भरतर्षभ।

आज भी दो समय प. मुकुन्द व [illegible].
आंवला मुरब्बा २ तोला खाया.

अभ्यासाद्रमते यत्र दुःखान्तं च निगच्छति ॥३६॥
यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम् ।
तत्सुखं सात्त्विकं प्रोक्तमात्मबुद्धिप्रसादजम् ॥३७॥
विषयेन्द्रियसंयोगाद्यत्तदग्रेऽमृतोपमम् ।
परिणामे विषमिव तत्सुखं राजसं स्मृतम् ॥३८॥

मार्गशीर्ष शुक्ल १५ मंगल] १३ दिसम्बर [मार्गशीर्ष २७

3-15 बजे के समय भी मुकुन्दवल्लभके पास.
आंवला मुरब्बा २ तोले खाया.

यदग्रे चानुबन्धे च सुखं मोहनमात्मनः ।
निद्रालस्यप्रमादोत्थं तत्तामसमुदाहृतम् ॥३९॥
न तदस्ति पृथिव्यां वा दिवि देवेषु वा पुनः ।
सत्त्वं प्रकृतिजैर्मुक्तं यदेभिः स्यात्त्रिभिर्गुणैः ४०
ब्राह्मणक्षत्रियविशां शूद्राणां च परंतप ।

पौष कृष्ण १ बुध सं० १९८९] १४ दिसम्बर [मा० २८

दोनों समय भो. पं. मुकुन्दवल्लभ के पास. तथा निवास
अपने कोठरी में
आंवला [illegible].

कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रभवैर्गुणैः ॥४१॥
शमो दमस्तपः शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च ।
ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्म स्वभावजम् ।४२।
शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम् ।
दानमीश्वरभावश्च क्षात्रं कर्म स्वभावजम्॥४३॥

पौष कृष्ण २ गुरु] १५ दिसम्बर [मार्गशीर्ष २६

दोनो समय प्रो. मुं. मुकुन्द बालकृष्ण के पास. जिनसे अपने कमरे में
आंवला मुरब्बा दो तोले खाया.

कृषिगौरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम् ।
परिचर्यात्मकं कर्म शूद्रस्यापि स्वभावजम् ॥४४॥
स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः ।
स्वकर्मनिरतः सिद्धिं यथा विन्दति तच्छृणु ॥४५॥
यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम् ।

आज दोनों समय भो. मुकुन्द बाबू के पास. निवास अपने कमरे
आंवले मुरब्बा २ नोजे खाया.
एक धुराक शहद.

स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः॥४६॥
श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात् ।
स्वभावनियतं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम् ॥४७॥
सहजं कर्म कौन्तेय सदोषमपि न त्यजेत् ।
सर्वारम्भा हि दोषेण धूमेनाग्निरिवावृताः ॥४८॥

दोनों समय भो. हरदेवके घर. निकास भगत कन्हैया ने
दोनों को आंवला मुरब्बा खिलाया.

अस्तक्तबुद्धिः सर्वत्र जितात्मा विगतस्पृहः ।
नैष्कर्म्यसिद्धिं परमां संन्यासेनाधिगच्छति ४९
सिद्धिं प्राप्तो यथा ब्रह्म तथाप्नोति निबोध मे ।
समासेनैव कौन्तेय निष्ठा ज्ञानस्य या परा ॥५०॥
बुद्ध्या विशुद्धया युक्तो धृत्यात्मानं नियम्य च ।

पौष कृष्ण ५ रवि]   १८ दिसम्बर   [पौष ३

दोने १२ सामंजा भो. हरदेन के पास । निवास अपने जगह.
गुरुजा २ गोठेआंवले .

शब्दादीन्विषयांस्त्यक्त्वा रागद्वेषौ व्युदस्य च
विविक्तसेवी लघ्वाशी यतवाक्कायमानसः ।
ध्यानयोगपरो नित्यं वैराग्यं समुपाश्रितः ॥५२॥
अहंकारं बलं दर्पं कामं क्रोधं परिग्रहम् ।
विमुच्य निर्ममः शान्तो ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥५३॥

आज दोनो समय मो. हरदेव के पास. निवास अपने कमरे मे.
२ तोले आंव ले कर ब्रह्मपुर हवा।

ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न काङ्क्षति।
समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम् ॥५४॥
भक्त्या मामभिजानाति यावान्यश्चास्मि तत्त्वतः
ततो मां तत्त्वतो ज्ञात्वा विशते तदनन्तरम् ।५५।
सर्वकर्माण्यपि सदा कुर्वाणो मद्व्यपाश्रयः।

आज रखो तो समय भी - हरदेव के पास .
२ तोले आंवले का मुरब्बा.

मत्प्रसादादवाप्नोति शाश्वतं पदमव्ययम् ॥५६॥
चेतसा सर्वकर्माणि मयि संन्यस्य मत्परः ।
बुद्धियोगमुपाश्रित्य मच्चित्तः सततं भव ॥५७॥
मच्चित्तः सर्वदुर्गाणि मत्प्रसादात्तरिष्यसि ।
अथ चेत्त्वमहंकारान्न श्रोष्यसि विनङ्क्ष्यसि५८

पौष कृष्ण ८ बुध] २१ दिसम्बर [पौष ६

आज दोनो समय भो. हरदेन के पास. निवास अपने जगह
3 २ तोले मुरब्बा आवला.
२

यदहंकारमाश्रित्य न योत्स्य इति मन्यसे ।
मिथ्यैष व्यवसायस्ते प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्यति५९
स्वभावजेन कौन्तेय निबद्धः स्वेन कर्मणा ।
कर्तुं नेच्छसि यन्मोहात्करिष्यस्यवशोऽपि तत् ॥
ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति ।

पौष कृष्ण १० गुरु] २२ दिसम्बर [पौष ७

आज कोनो समय भी. हरदेव के पास. तिवारा भपते गाए.
आज आंनलागीता नहीं इसलिये हई खाई.
आज भैरव महोदस. जैरवनाथ पूजा किया.

भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया ॥६१॥
तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत।
तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्
इति ते ज्ञानमाख्यातं गुह्याद्गुह्यतरं मया।
विमृश्यैतदशेषेण यथेच्छसि तथा कुरु ॥६३॥

३ आज रोती समय मो. हरदेव के पास.
२ हई स्वाई.

सर्वगुह्यतमं भूयः शृणु मे परमं वचः ।
इष्टोऽसि मे दृढमिति ततो वक्ष्यामि ते हितम् ।६४।
मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु ।
मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे ॥६५॥
सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।

आज भो. दो नो समय हरडेन के पास.
आज हर्टनाई.

अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥६६॥
इदं ते नातपस्काय नाभक्ताय कदाचन।
न चाशुश्रूषवे वाच्यं न च मां योऽभ्यसूयति॥६७॥
✓ य इमं परमं गुह्यं मद्भक्तेष्वभिधास्यति।
भक्तिं मयि परां कृत्वा मामेवैष्यत्यसंशयः॥६८॥

3 आज प्रदोष आज 'मुल्लापुर' का ब्राह्मण-चण्डीप्रसाद
२ के साथ यहां (कुराली) से 'तांगे से ≡) देकर (दो नौका)
खरड़ गया. यहां से पैदल ५।। कोस 'मुल्लापुर' पहुंचे.
रास्ते में 'तड़ौली' 'तीड़ा' ये गांव आते हैं. रात नियमानुसार पारण 'चण्डीप्रसाद' के घर करके, इसके सगोत्र भाई के एक दूकान (बैठक) के कमरे में रात निवास. यह (चण्डीप्रसाद) माता पिता से अलग रहता है. इसका बाप इस गांव में बड़ा पण्डित कहलाता है. हमारी परीक्षा लेने लगा था. जिस पर हमारे कानूनी जबान से परास्त होकर अपने लड़के को भला बुरा कहने लगा. माता बहुत कर्कशा है. बाप ग्रामीण पण्डित पर बड़ा पण्डितमन्य है. पर है वैसे सरल सज्जन. इसका नाम [illegible] विष्णु है.

न च तस्मान्मनुष्येषु कश्चिन्मे प्रियकृत्तमः ।
भविता न च मे तस्मादन्यः प्रियतरो भुवि ॥६९॥
अध्येष्यते च य इमं धर्म्यं संवादमावयोः ।
ज्ञानयज्ञेन तेनाहमिष्टः स्यामिति मे मतिः ॥७०॥

पौष कृष्णा १४ सोम]   २६ दिसम्बर   [पौष ११

आज यहां शौच आदि करके यहां से 'उमामति जयन्ती' देवी के दर्शन को गये. यहां नीचे गांव में स्नान करके ऊपर छोटी पहाडी पर भगवती का दर्शन किया. 'दुर्गा सप्तशती' चण्डीपाठ किया. तथा रहस्य सहस्र नाम पाठ किया. [illegible] भगवती 5) चण्डी प्रसाद -) दूध. दोनो के लिये. यहां एक अव्वल नंबर का मूर्ख और [illegible] चण्डी ठग पं. सोमदत्त आजकल 3 वर्ष से रहता है. इसको पहले छोटा त्रिलोकपुर में [illegible] देखा था. उसके आग्रह से करीब पौना घंटा बैठा था. इसकी बडबड सुनी. इस समय इसने थोडा [illegible] व्यवहार किया. साथ चण्डी प्रसाद था. फिर यहां से पैदल 'मुलापुर' आये. जयन्ती का मन्दिर बडा पक्का है. [illegible]

[illegible] के बैठक में.

श्रद्धावाननसूयश्च शृणुयादपि यो नरः।
सोऽपि मुक्तः शुभाँल्लोकान्प्राप्नुयात्पुण्यकर्मणाम्
कच्चिदेतच्छ्रुतं पार्थ त्वयैकाग्रेण चेतसा।
कच्चिदज्ञानसंमोहः प्रनष्टस्ते धनंजय ॥७२॥

3 आज भो. पं. आर्यानन्द; आत्माराम के घर. ये चण्डीप्रसाद
२ के सगोत्र हैं. ये गौड़ ब्राह्मण हैं. रात निवास इनके ही बैठक में.
रात भो. चण्डीप्रसाद के पास. इसकी आर्थिक हालत बहुत खराब
मालूम होती है. आज चण्डीप्रसाद के पिता पं. गङ्गा विष्णु
से कुछ शास्त्रीय बहस हुई थी. इनका पाण्डित्याभिमान शान्त
करा दिया. 'मुकन्दपुर' एक पुराना कस्बा है. इसको राजा
गति बहादुर ने बसाया था. 'सिरवगुप्ति गोविन्द सिंह के मट-
कते के बहुत दिनों बाद की बात है. यहां खेती तो अभी भी
अच्छी है. पर व्यापार नहीं है. यहां के ताम्रपत्र देखे.
यह कस्बा तहसील खरड से ७ मील है.

अर्जुन उवाच

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत ।
स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव ॥७३॥

संजय उवाच

इत्यहं वासुदेवस्य पार्थस्य च महात्मनः ।

पौष शुक्ल १ बुध] २८ दिसम्बर [पौष १३

आज भो. पं. गङ्गाविष्णु के घर . इनकी स्त्री वृद्धा ~~मा~~ भात
पक्षी की बडी बहन है . 1 रामजी यहां से पैदल 'हवाड़' ।
कि आया यहां से 'कुराली' नालीसे =) रैको आये. रात भो.
हरदेव के घर. नीवास अपने कोठी में

आज बारामूला (काश्मीर) से श्रीया लालजी की चिट्ठी आई

संवादमिममश्रौषमद्भुतं रोमहर्षणम् ॥७४॥
व्यासप्रसादाच्छ्रुतवानेतद्गुह्यमहं परम् ।
योगं योगेश्वरात्कृष्णात्साक्षात्कथयतः स्वयम्
राजन्संस्मृत्य संस्मृत्य संवादमिममद्भुतम् ।

आज दोनो समय भो. पं. हरदेव के पास. निवास अपने कोठरी में.
आज ठंड बहुत पडी थी. आज स्नान नहीं किया.
आज '[illegible]' बनाना प्रारम्भ किया.

केशवार्जुनयोः पुण्यं हृष्यामि च मुहुर्मुहुः ॥७६॥
तच्च संस्मृत्य संस्मृत्य रूपमत्यद्भुतं हरेः।
विस्मयो मे महान्राजन्हृष्यामि च पुनः पुनः ॥
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।

आज दोनो समय भो. इष्टदेव के पास. निवासअपने कोठरी में
आज

तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥७८॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे मोक्षसंन्यास-योगो नामाष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

---

३ दोनो समय भो. हरदेन के पास. निवास अपने जगह मे.
२ आज एक पत्र बारामूला काश्मीर में पं. जीयालाल कोतवाल को भेजा.
आज सन् १९३२ वर्ष समाप्त हुआ.

पते—

पं. कश्यकाक [illegible] इत सहयार आलीकदल श्रीनगर

पं. शंकरकौल (मास्टर [illegible] मिशन हाइस्कूल श्रीनगर काश्मीर) सहयार आलीकदल श्रीनगर.

पं. शिवजी सराफ सहयार आलीकदल श्रीनगर

पं. श्रीधर [illegible] चन्दपुरा [illegible] श्रीनगर,

पं. [illegible] शर्मा [illegible] पो. [illegible] जि. कांगड़ा (पञ्जाब)

पं. मुकुन्द [illegible] मिश्र ज्योतिषी कुराली जि. अम्बाला (पञ्जाब)

पं. [illegible] जोशी क्यार कोटी स्टेट जि. शिमला

पं. अमरनाथ नागर [illegible] जम्मूस्टेट.

पं. काशीनाथ ज्योतिषी पो. [illegible] जि. स्यालकोट

बाबा [illegible] पो. [illegible] जि. गुजरात (पंजाब)

बाबा [illegible] [illegible] मन्दिर मोरी दरवाजा गुजरात (पंजाब)

पं. अमरनाथ [illegible] [illegible]

श्रीनगर काश्मीर.

पं. नन्दलाल दरबार मटन काश्मीर

पं. शिवलाल सुपरिन्टेन्डेन्ट of

आर्कियो काश्मीर,

अ आत्माराम दास

२ प० बाबूराम गुलाम अग्रवाल

मिस्त्री टोला

बरेली

(बांस बरेली।)

याददाश्त

आहदू फोडेया
आबदुना

फेडअर करते हैं लाखों या ने करोड़ों पण्तु हजारों
न्याजे । जो स्कूल देखा तो पार आरलट
खुदाकि बातें खुदाहि जाने ।

—

~~[illegible]~~

अ अस्ति जो गुरा: पर: सहस्त्रा:
२ पर: सहस्त्रा शिष्यगणाश्च ॥
स दुर्लभोऽहं [illegible]
[illegible] ॥

याददाश्त

जन्मकुण्डली

3
१ रा.
४
२
१२
५ चं.
११
६ बृ. मं.
८ बु. शु.
१० श.
९
७ के. सू.

नवमांशकुण्डली

६ श.
४
७
५
३ बृ.
८ शु.
२ चं. श.
९ सू. बु. मं.
११
१
१०
१२



याददाश्त

याद्दाश्त

याद्दाश्त

८–गीता–भाषा, इसमें श्लोक नहीं हैं । केवल भाषा है, अक्षर मोटे हैं, १चित्र, मू०।) स० ।≈)
९–गीता–मूल ताबीजी, सजिल्द ≈)
१०–गीता–मूल, विष्णुसहस्रनामसहित, सजिल्द ≈)
११–गीता–७॥ × १० इञ्च साइजके दो पन्नोंमें –)
१२–गीता-सूची–(Gita List) संसारकी अनुमान २००० गीताओंका परिचय ॥)
१३–प्रेम-योग, सचित्र, लेखक–श्रीवियोगी हरिजी, पृष्ठ ४३०, बहुत मोटा एण्टिक कागज, अजिल्द १।) सजिल्द १॥)
१४–विनय-पत्रिका, सरल हिन्दी-भावार्थ-सहित ६ चित्र, मू० १) सजिल्द १।)
१५–तत्त्व-चिन्तामणि, सचित्र, लेखक—श्रीजयदयालजी गोयन्दका, पृष्ठ ४०६, मोटा एण्टिक कागज, मू०॥।–) सजिल्द १)
१६–भागवतरत्न प्रह्लाद, ३ रंगीन ५ सादे चित्रोंसहित, पृष्ठ ३४० मोटे अक्षर, सुन्दर छपाई मूल्य १) सजिल्द १।)
१७–विवेक-चूडामणि मूल श्लोक और हिन्दी अनुवादसहित सचित्र मू० ।≡) सजिल्द ॥=)
१८–भक्त-बालक, ५चित्रोंसे सुशोभित ।–)
१९–भक्त-नारी, ६ चित्रोंसे सुशोभित ।–)
२०–भक्त-पञ्चरत्न, ५ चित्रोंसे सुशोभित ।–)
२१–गीतामें भक्ति-योग, (सचित्र) ।=)

२२-श्रुतिकी टेर (सचित्र) ले०-श्रीभोलेबाबाजी ।)
२३-पत्र-पुष्प, सचित्र भावमय भजनोंकी पुस्तक ≡)॥
२४-गीता-निबन्धावली ≡)॥
२५-प्रबोध-सुधाकर (सानुवाद-सचित्र) ≡)॥
२६-मानव-धर्म-ले०-श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार ≡)
२७-साधन-पथ ,, =)॥
२८-वेदान्त-छन्दावली-ले०-श्रीभोलेबाबाजी =)॥
२९-भजन-संग्रह प्रथम भाग =)
३०- ,, ,, दूसरा भाग =)
३१- ,, ,, तीसरा भाग =)
३२-चित्रकूटकी झाँकी (२२चित्र) =)
३३-स्त्रीधर्म-प्रश्नोत्तरी (१० पृष्ठ बढ़े हैं) =)
३४-सच्चा सुख और उसकी प्राप्तिके उपाय -)॥
३५-गीतोक्त सांख्ययोग और निष्काम कर्मयोग -)॥
३६-मनुस्मृति द्वितीय अध्याय अर्थसहित -)॥
३७-श्रीमद्भगवद्गीताके कुछ जानने योग्य विषय -)॥
३८-मनको वशमें करनेके उपाय, (सचित्र) -)।
३९-गीताका सूक्ष्म विषय, पाकेट-साइज -)।
४०-प्रेमभक्तिप्रकाश, दो रंगीन चित्र -)
४१-त्यागसे भगवत्प्राप्ति, (सचित्र) -)
४२-हरेरामभजन २ माला)॥।
४३- ,, ,, १४ माला सजिल्द ।-)
४४-विष्णुसहस्रनाम मूल)॥ सजिल्द -)॥

४५-ब्रह्मचर्य-लेखक-श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार -)

८-गीता-भाषा, इसमें श्लोक नहीं हैं । केवल भाषा है, अक्षर मोटे हैं, १चित्र, मू०।) स० ।≈)
९-गीता-मूल ताबीजी, सजिल्द ≈)
१०-गीता-मूल, विष्णुसहस्रनामसहित, सजिल्द ≈)
११-गीता-७॥ × १० इन्च साइजके दो पन्नोंमें −)
१२-गीता-सूची-(Gita List) संसारकी अनुमान २००० गीताओंका परिचय ॥)
१३-प्रेम-योग, सचित्र, लेखक-श्रीवियोगी हरिजी, पृष्ठ ४२०, बहुत मोटा एण्टिक कागज, अजिल्द १।) सजिल्द १॥)
१४-विनय-पत्रिका, सरल हिन्दी-भावार्थ-सहित ६ चित्र, मू० १) सजिल्द १।)
१५-तत्त्व-चिन्तामणि, सचित्र, लेखक—श्रीजयदयालजी गोयन्दका, पृष्ठ ४०६, मोटा एण्टिक कागज, मू०॥।−) सजिल्द १)
१६-भागवतरत्न प्रह्लाद, ३ रंगीन ५ सादे चित्रोंसहित, पृष्ठ ३४० मोटे अक्षर, सुन्दर छपाई मूल्य १) सजिल्द १।)
१७-विवेक-चूडामणि मूल श्लोक और हिन्दी अनुवादसहित सचित्र मू० ।≡) सजिल्द ॥=)
१८-भक्त-बालक, ५चित्रोंसे सुशोभित ।-)
१९-भक्त-नारी, ६ चित्रोंसे सुशोभित ।−)
२०-भक्त-पञ्चरत्न, ५ चित्रोंसे सुशोभित ।−)
२१-गीतामें भक्ति-योग, (सचित्र) ।−)

सन् १९३२	जुलाई						अगस्त					सितम्बर				
रविवार	०	३	१०	१७	२४	३१	०	७	१४	२१	२८	०	४	११	१८	२५
सोमवार	०	४	११	१८	२५	०	१	८	१५	२२	२९	०	५	१२	१९	२६
मंगलवार	०	५	१२	१९	२६	०	२	९	१६	२३	३०	०	६	१३	२०	२७
बुधवार	०	६	१३	२०	२७	०	३	१०	१७	२४	३१	०	७	१४	२१	२८
बृहस्पतिवार	०	७	१४	२१	२८	०	४	११	१८	२५	०	१	८	१५	२२	२९
शुक्रवार	१	८	१५	२२	२९	०	५	१२	१९	२६	०	२	९	१६	२३	३०
शनिवार	२	९	१६	२३	३०	०	६	१३	२०	२७	०	३	१०	१७	२४	०
वार	अक्टूबर						नवम्बर					दिसम्बर				
रविवार	०	२	९	१६	२३	३०	०	६	१३	२०	२७	०	४	११	१८	२५
सोमवार	०	३	१०	१७	२४	३१	०	७	१४	२१	२८	०	५	१२	१९	२६
मंगलवार	०	४	११	१८	२५	०	१	८	१५	२२	२९	०	६	१३	२०	२७
बुधवार	०	५	१२	१९	२६	०	२	९	१६	२३	३०	०	७	१४	२१	२८
बृहस्पतिवार	०	६	१३	२०	२७	०	३	१०	१७	२४	०	१	८	१५	२२	२९
शुक्रवार	०	७	१४	२१	२८	०	४	११	१८	२५	०	२	९	१६	२३	३०
शनिवार	१	८	१५	२२	२९	०	५	१२	१९	२६	०	३	१०	१७	२४	३१

सं०८९आ०														
ति.	कृ१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
वा.	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श
घ.	२७	२३	२१	२०	२०	२१	२४	२८	३२	३७	४२	४७	५०	५३
न.	मू	पू	उ	श्र	ध	श	पू	उ	रे	अ	भ	कृ	रो	मृ

सं०८६श्रा०														
ति.	कृ१	२	३	४	५	६	७	७	८	९	१०	११	१२	१३
वा.	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र
घ.	५०	४८	४८	५०	५४	५६	६०	१	५	१०	१५	१९	२२	२४
न.	उ	श्र	ध	श	पू	उ	रे	अ	भ	कृ	कृ	रो	मृ	आ

सं०८९भा०														
ति.	कृ१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
वा.	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं
घ.	१८	१९	२१	२५	२९	३४	३९	४४	४८	५१	५३	५४	५३	५१
न.	श	पू	उ	रे	रे	अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	आ

सं०८६आ०														
ति.	कृ१	२	३	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
वा.	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु
घ.	५२	५६	६०	०	५	१०	१५	१९	२२	२४	२५	२५	२३	२०
न.	पू	उ	रे	अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	पु	आ	म

सं०८६का०														
ति.	कृ१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
वा.	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु
घ.	३३	३८	४३	४८	५२	५६	५८	५९	५८	५७	५४	५०	४५	४०
न.	अ	भ	कृ	रो	रो	मृ	आ	पु	पु	आ	म	पू	उ	ह

सं०८९मा०														
ति.	कृ१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
वा.	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र
घ.	१९	२४	२८	३२	३४	३५	३२	३२	३०	२६	२१	१६	११	५
न.	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	आ	म	पू	उ	ह	[illegible]	[illegible]	चि

०	शु१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१४	१५	❀
	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	❀
५	५६	५५	५३	४९	४५	४०	३५	२९	२३	१७	११	५	५५	५२	❀
ा	आ	पु	पु	आ	म	उ	ह	चि	स्वा	वि	अनु	ज्ये	मू	पू	❀

४	३०	शु१	२	३	४	५	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
ं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं
५	२३	२१	२९	१४	९	४	५३	४६	४०	३४	२९	२५	२१	१९	१७
ु	पु	आ	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	वि	ज्ये	मू	पू	उ	श्र	ध

०	शु१	२	३	४	५	६	७	८	१०	११	१२	१३	१४	१५	❀
	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	❀
८	४४	४०	३४	२८	२२	१६	१०	५	५५	५२	४९	४८	४८	४९	❀
ा	पू	उ	ह	चि	स्वा	वि	अनु	ज्ये	मू	पू	उ	श्र	ध	श	❀

४	३०	शु१	२	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु
६	११	६	०	४९	४३	३७	३२	२७	२४	२२	२१	२१	२२	२५	२९
	ह	चि	स्वा	वि	अनु	ज्ये	मू	पू	उ	श्र	ध	श	पू	उ	रे

०	शु१	२	३	४	५	६	८	९	१०	११	१२	१२	१३	१४	१५
शा	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र
५	२९	२३	१७	११	६	२	५७	५६	५६	५७	६०	१	४	९	१४
वि	स्वा	वि	ज्ये	मू	पू	उ	श्र	ध	श	पू	उ	रे	अ	अ	भ

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१५
चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं
३	४८	४३	३९	३६	३४	३३	३३	३५	३८	४२	४७	५२	५७	६०	२
नु	ज्ये	मू	पू	उ	श्र	ध	श	पू	उ	रे	अ	भ	कृ	रो	मृ

मिलनेका पता—

गीताप्रेस, गोरखपुर।